गुरुवर की धरोहर

(प्रथम भाग)

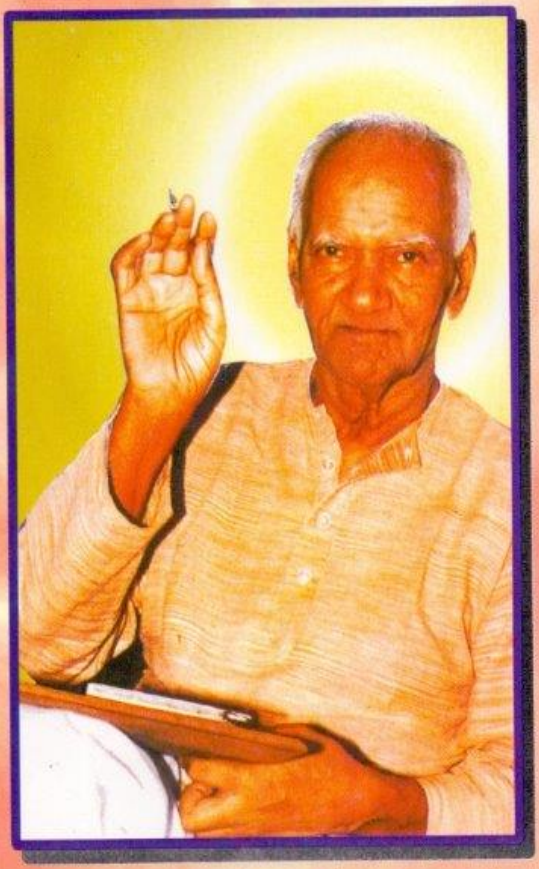

डॉ. प्रणव पंड्या (एम०डी०)

गुरुवर की धरोहर

(प्रथम भाग)

परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी
द्वारा अभिव्यक्त अमृतवाणी :
प्रवचनों का संकलन

संकलन, संपादन :

डॉ० प्रणव पण्ड्या, एम. डी.

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनर्मुद्रित सन् **२०११** मूल्य : ३७.०० रु.

प्राक्कथन

आश्चर्य होता है जब हम परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी से निस्सृत संस्कृतनिष्ठ शब्दों को उनकी अमृतवाणी के रूप में सुनते हैं। बहुत विरले होते हैं जो बोलते समय अपने अंदर का लेखक हावी न होने देकर बोधगम्य जन सामान्य की भाषा बोल पाते हों। परम पूज्य गुरुदेव एक ऐसी ही विभूति थे जिनका भाषा व वाणी पर, लेखनी व वक्तृता पर समान अधिकार था। लाखों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क को बदल देने वाली उनकी लेखनी २७०० पुस्तकों के रूप में अभिव्यक्त हुई जो अभी तक प्रकाशित हैं। अभी भी ५०० से अधिक अप्रकाशित ग्रंथ हैं जो समय-समय पर परिजनों के सम्मुख आते रहेंगे। किंतु उनकी वाणी इतनी मुखर व पूरे समय तक श्रोताओं को बाँधे रखने वाली २७०० कैसेट्स में भी बाँधी नहीं जा सकती, इतना कुछ बोला है उस युगदृष्टा ने।

परिजनों के समक्ष, परम पूज्य गुरुदेव की हम सबके लिए बहुमूल्य धरोहर, उनकी अमृतवाणी को दो भागों में हम प्रकाशित कर रहे हैं। उनकी वाणी से मुखरित ये विचार-कण सीधे हृदय तक उतर जाते हैं, इसीलिए जन-जन यहाँ तक कि छोटे बच्चों के लिए भी यह ग्रंथ उतना ही उपयोगी है। परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण के बाद हम सभी बच्चे शोकाकुल हैं पर हमें अपनी आराध्यसत्ता के आश्वासन पर, उनके शब्द-शब्द पर विश्वास है। इस विराट गायत्री परिवार को एकसूत्र में बाँधने वाली युगदृष्टा की अमृतवाणी प्रस्तुत है जन-जन के समक्ष।

नववर्ष संवत २०५२ विक्रमी — विनीत
(१-४-१९९५) — **संपादक**

गायत्री जयंती मथुरा का ऐतिहासिक अंतिम उद्‌बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

यह विश्व जब बना तब मानव भी अन्य प्राणियों की भाँति उसी तरह का था, जैसा कि सभी प्राणी अपना शरीरयापन करने के लिए संघर्ष करते, भूख पूरी करने के लिए परिश्रम करते और पैदा करने में लगे रहते हैं। ब्रह्माजी विचार करने लगे, 'इतना परिश्रम जो मनुष्य के ऊपर किया गया, किसलिए किया गया? अगर मनुष्य को भी कीड़े-मकोड़े की तरह जीना था, तो उसके लिए इतना सारा परिश्रम किसलिए?' ब्रह्माजी ने विचार किया कि यदि यह प्राणी भी अन्य प्राणियों की तरह पेट पालता रहा, बच्चे पैदा करता रहा और अपने अहंकार की पूर्ति के लिए आपस में संघर्ष करता रहा, तब फिर इतना परिश्रम बेकार गया समझा जाना चाहिए। विचार करने के बाद ब्रह्माजी ने कहा, 'मनुष्य जिन विशेषताओं के लिए बनाया गया है, उसे उन विशेषताओं के लिए कुछ अनुदान भी देना चाहिए' और वह अनुदान उसे 'ऋतंभरा प्रज्ञा' का दिया गया। विवेकशीलता, विचारशीलता, उच्चकोटि के आदर्शों में निष्ठा, इन सब चीजों के समन्वय का नाम है—'ऋतंभरा प्रज्ञा।' ऋतंभरा प्रज्ञा अर्थात विवेकशीलता, विवेकशीलता अर्थात उन उद्‌देश्यों को याद

रखना जिनके लिए भगवान ने मानवप्राणी को बनाया। इस ऋतंभरा प्रज्ञा की इस विश्व के प्रारंभ में उसी तरीके से अवतरणा हुई, जिस तरीके से इस संसार में स्वर्ग से गंगा भगीरथ के द्वारा लाई गई।

ऋतंभरा प्रज्ञा की धारा, आध्यात्मिक धारा स्वर्गलोक से आई, देवताओं से जमीन पर आई और मनुष्यों में प्रवाहित होने लगी। मनुष्यों में जब वह धारा प्रवाहित होने लगी, तब ऋतंभरा प्रज्ञा का नाम पूजा-उपासना की, आध्यात्मिकता की भाषा में रखा गया—गायत्री विद्या, ब्रह्म विद्या। आज उसी महान शक्ति का जन्म दिन है। वह महान शक्ति मनुष्य की तमाम शक्तियों को उभारने वाली है।

ऋद्धियों और सिद्धियों के बारे में अनेक बातें बताई जाती हैं। यह कहा जाता है कि मंत्र अनेक सामर्थ्यों के पुंज हैं, शक्तियों के, सिद्धियों के पुंज हैं। क्या यह बात सही है ? हाँ, यह बात सही है, यदि गायत्री महामंत्र के स्वरूप को समझा जाए और जीवन में धारण किया जाए, तब। गायत्री का स्वरूप ही न समझा जाए और उपासना उसकी जिस तरीके से की जाती है, उस तरीके से न की जाए, तो उससे न तो भीतर से सिद्धियाँ उपजती हैं, न विभूतियाँ। स्वरूप क्या है ? स्वरूप यह कि मनुष्य का जो विवेक सो गया है, उसे जाग्रत किया जाए।

ऋतंभरा प्रज्ञा यह सिखाती है कि 'मनुष्य! अहंकार में डूबे मत। बड़े आदमी बनने की चाह और ललक में अपने जीवन को बरबाद करे मत।' ऋतंभरा प्रज्ञा के तीन शिक्षण हैं, गायत्री मंत्र के तीन चरण हैं। ऋतंभरा अर्थात ब्रह्मविद्या, ऋद्धियों-सिद्धियों से भरी विद्या। इसका स्वरूप समझा जाना चाहिए जैसा कि मैं आपको समझा रहा हूँ और जैसा कि मैंने अपने जीवन में इस महाविद्या का स्वरूप समझने की कोशिश की।

मैंने ऋतंभरा प्रज्ञा का पहला चरण यह समझने की कोशिश की कि मनुष्य को यश का भूखा नहीं होना चाहिए, बड़प्पन का भूखा नहीं होना चाहिए, अहंकार का पुतला नहीं होना चाहिए।

दूसरों के ऊपर अपना रौब गालिब करने का और दूसरों की आँखों में बड़ा आदमी बनने का इच्छुक नहीं होना चाहिए। अगर आदमी इस तरह का नहीं बना, तब उसकी सारी सामर्थ्य और सारी-की-सारी जो विशेषताएँ हैं, भगवान ने जिनके लिए मनुष्य को बनाया है, वे उसके पास नहीं रह जाएँगी। मनुष्य निकम्मा और बेकार होकर रह जाएगा। मनुष्य का अहंकार जब तक बना रहा, उसकी पूर्ति में जब तक वह इच्छुक है, तब तक वह भगवान की इच्छा को पूरा नहीं कर सकता। न उसके पास समय बच सकता है, न शक्ति, न पैसा बच सकता है। अहंकार आदमी का बादल के बराबर, सुरसा के मुँह के बराबर है। इतना बड़ा है कि उसमें एक जीवन क्या, हजारों जीवन समाप्त हो जाएँ, तो भी इसकी पूर्ति नहीं हो सकती। ऐसा आदमी भगवान के लिए काम कर सकता है ? नहीं। लोकमंगल और आत्मकल्याण के लिए काम कर नहीं सकता। समय और शक्ति को बरबाद करने वाले अहंकार को मिटाना ऋतंभरा प्रज्ञा का, गायत्री मंत्र का पहला चरण है।

दूसरा चरण यह कि मनुष्य को अपनी दो शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इतना व्याकुल-बेचैन नहीं होना चाहिए। मनुष्य को जो शरीर मिला है, वह उसके पहनने का लिबास मात्र है, आदमी का लिबास है, घोड़ा है, साइकिल है और इस साइकिल के लिए इतना बेचैन नहीं होना चाहिए कि सवार की इच्छा-आवश्यकता को ही भूल जाए। कलेवर की, इस शरीर की दो आवश्यकताएँ हैं—एक यह कि आदमी को भूख लगा करती है और रोटी की जरूरत होती है और भगवान ने जिस दिन वह पैदा हुआ था, यह विश्वास दिलाया था कि 'मनुष्य, जब तक तू जिंदा रहेगा, तब तक बराबर कोशिश करता रहूँगा और बराबर तेरी सहायता करता रहूँगा। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाएगा कि अगर तू अपना पुरुषार्थ करता रहा, तो पेट भरने के लिए कमी पड़े।' भगवान ने, जिस दिन मनुष्य पैदा हुआ था, यह शिक्षण दिया कि

'माँ के पास गरम-गरम दूध के डिब्बे तुम्हारे लिए रखे हैं और यह सुविधा हमने इसलिए दी है कि जन्म होने पर तुम्हें यह मालूम पड़े कि हमारे ऊपर कोई संरक्षक शक्ति है।' उसने यह शिक्षण दिया था, पैदा हुआ था मनुष्य जब, कि 'तेरे लिए धोबिन तैयार है तेरे कपड़े धोने के लिए, तेरा खरच उठाने के लिए तेरा बाप तैयार। ये मेरे नुमाइंदे हैं, तेरे लिए। मनुष्य! पेट के लिए भटकना मत, पेट के लिए सिद्धांतों को भूलना मत। पेट मैं तेरा भरता रहूँगा। जब कीड़ों-मकोड़ों का सबका भरता हूँ, तो तुझे पेट भरने के लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। पेट के लिए कर्तव्य जरूर करना चाहिए, लेकिन अपनी अकल और भावना को उस पर बलिदान नहीं करना चाहिए।' लेकिन हाय रे मनुष्य! गायत्री मंत्र के इस शिक्षण को लात से रौंदता चला गया और यह उम्मीद लगाता रहा कि उसे भगवान का प्यार मिलेगा, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ मिलेंगी। कैसे संभव था यह?

तीसरा चरण एक और था। इंद्रियाँ मनुष्य की बनाई गई थीं, इसलिए कि मनुष्य का जीवन आनंद से भरा हुआ रहे, उल्लास से भरा हुआ रहे। इस विवेकशील प्राणी को हँसने-हँसाने की, उल्लास की विद्या आनी चाहिए। इसके लिए उसे जिह्वा, कान, आँखें एवं कामेंद्रियाँ मिली हुई थीं। सारी-की-सारी इसलिए कि मनुष्य आनंदित होकर जिए। पर हाय रे अभागे मनुष्य! इन इंद्रियों के अंदर जो ब्रह्मवर्चस-ब्रह्मतेज था, उन्हें नष्ट करता हुआ चला गया। जीभ का उपयोग आया होता, तो उसने हर आदमी से मीठा वचन और प्यार का वचन बोला होता। उल्लास और आनंद से भरने वाला वचन बोला होता, आदमी को आगे बढ़ाने वाला वचन बोला होता। लेकिन आदमी जिह्वा-इंद्रिय का उपयोग न कर सका। यदि किया होता, तो हम में आप में से हर कोई सौ वर्ष जिया होता। हमने नशे पिए, जायके के लिए मिरच-मसाले खाए, जो हमारी खुराक में शामिल नहीं थे। एक इंद्रिय का जिक्र मैंने किया, अन्य इंद्रियों का मैं नहीं करना चाहता। करूँगा तो मनुष्य का निकृष्ट और पापी जीवन

सामने आएगा और यह मालूम पड़ेगा कि जिसके लिए मनुष्य बनाया गया था, वह सारा-का-सारा उद्देश्य उसने चौपट करके रख दिया, ठीक उलटी दिशाओं में चला।

ऋतंभरा प्रज्ञा-गायत्री जिसका आज जन्मदिन है, तीन धाराओं के रूप में हमारे जीवन में प्रवाहित होती है—गंगा, यमुना और सरस्वती। इनका जहाँ, जब कभी सम्मिश्रण बन गया, उसी जगह का नाम तीर्थराज बन गया। तीर्थराज मनुष्य को बनाया गया था, तीन धाराओं के रूप में प्रवाहित होता हुआ। अहंकार से दूर, लोभ-तृष्णा-कामनाओं से दूर, इंद्रियों के दुरुपयोग से दूर, मनुष्य इन तीन पापों से बचा हुआ रहता, तब उसके पास जो भगवान का दिया ब्रह्मवर्चस् था, ब्रह्मतेज था, वह प्रस्फुटित होता और आदमी तीर्थराज बन गया होता।

ब्रह्माजी ने जब यह विश्व बनाया था, तब विवेकशीलता, विचारशीलता रूपी उपहार जिस दिन मनुष्य को दिया, वह आज का गायत्री जयंती का ही दिन था। गंगा आज ही अवतरित हुई थी और गायत्री मंत्र के रूप में ज्ञान की गंगा आज के ही दिन अवतरित हुई थी। गंगा का एक स्वरूप स्थूल और एक स्वरूप सूक्ष्म। गायत्री का एक स्वरूप स्थूल और एक स्वरूप सूक्ष्म। गंगा का स्थूल स्वरूप आप देख सकते हैं—बाँध, नहरों के रूप में। गंगा खेतों के लिए पानी देती है, बिजली पैदा करती है। गंगा का सूक्ष्म रूप यह कि जब आप नहाते हैं, यह प्रार्थना करते हैं कि स्वर्ग से आई देवी इस धरती पर प्रवाहित होती है और हमारे मन, हमारे अहंकार, हमारी अंतरात्मा और हमारे अंतरंग जीवन इस सबको साबुन लगाती, मलिनताओं को धोती चली जाती है—पाप के कर्मफल को नहीं, पाप-वृत्तियों को नष्ट करती चली जाती है।

गंगा के पानी में नहाने वाले मात्र स्थूल गंगा का ही लाभ उठा पाते हैं। सूक्ष्म गंगा यह सिखाती है कि मनुष्य के अंतरंग में गंगा की पुण्य-पवित्रता और शीतलता प्रस्फुटित होना चाहिए और मनुष्यों

की पाप-वृत्ति का समाधान होना चाहिए, पाप के दंड का नहीं। पाप के दंड का तो एक ही बचाव है कि पाप का प्रायश्चित्त करना चाहिए। आदमी ने जितना गड्ढा किया है, उतनी ही मिट्टी लाकर डालनी चाहिए। समाज को जितना नुकसान पहुँचाया है, उसकी पूर्ति करनी चाहिए।

गंगाजी के साथ जो पवित्रता भरी पड़ी है, शांति और शीतलता भरी पड़ी है, उसे यदि हम अपने जीवन में स्थापित कर सकते हैं, तो यही भावना भीतर आएगी कि हमें गंगा के तरीके से निर्मल होना चाहिए, शीतल होना चाहिए। गंगा की ही तरह खेत और खलिहानों में, अपने चारों तरफ खुशी, हरियाली पैदा करने वाला होना चाहिए। अगर यह भावना हमारे भीतर आएगी, तो पापवृत्तियाँ नष्ट हो जाएँगी और तब हम स्वर्ग-शांति-मुक्ति के अधिकारी होंगे। गंगा के सूक्ष्म स्वरूप के साथ यदि हम गंगा में स्नान करें, तो यह अनुभव करते चलें कि गंगा माँ को हम अपने जीवन में प्रवेश करा रहे हैं, गंगा माँ की शांति हमारे अंतरंग में प्रवेश कर रही है, गंगा की लोकमंगल वृत्ति हमारे रोम-रोम में समाविष्ट हो रही है। जब नहाकर निकलें तब यदि यह अनुभव करते हुए निकलें कि अपनी पाप-वृत्तियों को हमने बहा दिया है, भावी जीवन शुद्ध और पवित्र जिएँगे, तो मैं कहता हूँ कि वह सारे का सारा माहात्म्य जो गंगा में स्नान का बताया गया है, वह जरूर सही होगा, जरूर लाभ देगा।

गायत्री मंत्र, ज्ञान गंगा, जिसका आज जन्मदिन है, का स्थूल रूप वह है, जो हमारी कल्पना के अनुसार एक महिला है कोई, कहीं आसमान में रहती है, हंस की सवारी करती है। हमारी आपकी स्थूल कल्पना है कि वह देवी खुशामद से प्रसन्न होती है। हम जब आरती करते हैं उसकी, तो देवी फूलकर कुप्पा हो जाती है और कहती है—"वाह भाई वाह! यह आरती करने वाला चेला खूब मिला" और हम जब माला घुमाते हैं, तो देवी बहुत खुश होती है कि "हमारी जय बोलने वाला, पूजा-प्रशंसा करने वाला दुनिया

में कोई नहीं था। अब यह भगत पैदा हो गया है। कैसी हमारी जय बोलता है, आरती उतारता है।" वह यही देखती है कि भगत दे रुपया, दे पैसा, दे औलाद, दे इम्तहान में पास इन सबके अलावा और कुछ नहीं माँगता। यह स्थूल गायत्री है। इस स्थूल गायत्री के लाभों से मैं इनकार करता हूँ। यह यदि रहे होते, तो हर मंदिर के पूजा करने वाले पुजारी को वे लाभ मिले होते। आप में तो नब्बे फीसदी ऐसे हैं, जो गायत्री मंत्र का जप करते हैं। आपकी यह माला-स्थूल माला है, स्थूल पूजा है। इसके बारे में मैं इनकार नहीं करता। मैं कहूँगा कि यह भी उपयोगी है। जितने समय आप पत्ते खेलते हैं, यहाँ-वहाँ मटरगश्ती करते हैं, उतने समय आप बैठ जाइए और भगवान का नाम लीजिए। मैं क्यों इससे इनकार करूँगा? लेकिन जो लाभ माहात्म्य बताया गया है, उसे यदि ग्रहण करना हो, वास्तव में अनुभव करना हो जैसा कि मैंने किया तो आपको उसके सूक्ष्म अंतरंग में प्रवेश करना होगा, जिसका नाम गायत्री है।

गायत्री मंत्र जिसे आज के दिन ब्रह्मा जी ने बनाया था, बहुत ऊँची स्थिति का बनाया था, जिसमें श्रद्धा का समन्वय था, विराट दृष्टिकोण और आदर्शवादिता का समन्वय था। बाह्य कलेवर उसका था जरूर स्थूल। गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षर? हाँ, चौबीस अक्षर। जप करने के लिए माला की आवश्यकता? हाँ, आवश्यकता। गायत्री का पूजन करने के लिए रोली, चंदन, धूप-दीप की आवश्यकता? हाँ, आवश्यकता। यह कलेवर हैं, गायत्री माता के। लेकिन उसका अंतरंग? जो विभूतियों और सिद्धियों से भरा पड़ा है, जिसे हम छू भी न सके, जिसके पास पहुँचने की कभी कोशिश भी नहीं की, वह अंतरंग हमसे अविज्ञात ही बना रहा।

गायत्री का अंतरंग यह कहता है कि मनुष्य को लोकमंगल के लिए, उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए और प्रभु समर्पित जीवन जीने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। यह प्रेरणा है गायत्री मंत्र की। मनुष्य को अपने लिए ही नहीं जीना चाहिए। वह भगवान का

सहायक है। भगवान ने उससे अपेक्षा रखी है कि वह उसकी दुनिया को सुंदर बनाने की कोशिश करे। यह संकल्प धारण करे कि उसके पास जितना समय, बुद्धि, श्रम अपने व बच्चों को पालने के अतिरिक्त बचेगा, उसे भगवान के लिए, लोकमंगल के लिए खर्च करेगा। भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, गाँधी, लोकमान्य तिलक जब लोकमंगल के लिए जुट गए, तो उनके घर वालों ने उन्हें बेवकूफ कहा। लोकमंगल के लिए जब कोई आदमी बड़ा काम करता है, तब उसकी पहचान यह है कि इस दुनिया के लोग उसको अमूमन बेवकूफ बताया करते हैं। इसलिए यह बात साफ है कि ये पागल मनुष्य जिस बात की प्रशंसा कर रहे हों, तो समझना चाहिए कि दाल में कहीं कुछ काला है।

यह दुनिया इतनी बेवकूफ और बेहूदी है कि जिनकी प्रशंसा करती है, वे उस लायक नहीं होते और जिन्होंने प्रशंसा की है, उनका मुँह और तमीज तो प्रशंसा करने लायक है ही नहीं। इसलिए प्रशंसा के लायक वे व्यक्ति हैं आज, जिनकी कभी प्रशंसा नहीं होती। कभी आपका मन हो तो यहाँ से दो किलोमीटर की दूरी पर 'पिसनहारी का कुआँ' है, वहाँ जाइए। पिसनहारी कौन? पिसनहारी बारह वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थी। चक्की पीसती-पेट पालती। दो आने रोज कमाती, सात पैसों में गुजारा कर लेती। एक पैसा बचा लेती। जब मरने को हुई तो उसके पास पाँच सौ रुपए थे। गाँव वालों को बुलाया और कहा, "मेरी सारी जिंदगी की धर्म की पवित्र कमाई है यह। यहाँ पानी का बड़ा अभाव है। इन रुपयों से एक कुआँ बना दिया जाए। जो भी इस रास्ते से गुजरें, उन्हें पानी मिले और वे मेरी जिंदगी भर की कमाई का फायदा उठाएँ।" पिसनहारी के इस कुएँ का पानी मथुरा जिले की सब जगहों के पानी में सबसे बढ़िया और मीठा पानी है, जबकि शेष स्थानों पर पानी खारा है। लोग आते हैं, छाया में बैठते हैं और मीठा पानी पीते हैं। पिसनहारी का कहीं फोटो है? नहीं। पिसनहारी का जुलूस,

किताबें ? नहीं। पिसनहारी की कोई किताबें नहीं हैं, चंगेज खाँ की हैं, नादिरशाह के किस्से हैं, चीन की दीवार के हैं, डायनामाइट की खोज करने वाले अल्फ्रेड नोबुल की तारीफ की किताबें हैं। हमारे बच्चे उन्हें पढ़कर याद करते हैं। पिसनहारी का नाम इतिहास में नहीं है। इसलिए पहला शिक्षण गायत्री मंत्र का यह है कि यदि मनुष्य ऋद्धियों-सिद्धियों की ओर चलना चाहता हो तो उसे अपने पाप और पतन के एक द्वार को बंद करना होगा और वह है—अपने अहंकार की पूर्ति की, बड़प्पन की इच्छा। लोगों के सामने अपना चेहरा दिखाने व तालियाँ बजवाने की इच्छा। यह इच्छा यदि बनी रही तो आदमी सिद्धांत और आदर्श के लिए, लोकमंगल के लिए काम नहीं करेगा। फिर तो पूजा भी यश के लिए करेगा। गायत्री मंत्र यह सिखाता है कि हमें बड़प्पन का भूखा नहीं होना चाहिए। अगर आदमी ने इस पर नियंत्रण कर लिया तो उसकी अस्सी फीसदी शक्तियों की बचत हो सकती है, उसकी जो अकल तबाह होती रहती है, उसका बचाव किया जा सकता है।

गायत्री मंत्र का दूसरा शिक्षण यह कि मनुष्य के पास शरीर और मन की जो शक्तियाँ हैं, उन्हें वासना के द्वारा नष्ट-भ्रष्ट नहीं करना चाहिए। उन्हें संग्रहीत और निग्रहीत करना चाहिए। अपने आपको समेटना चाहिए, बिखेरना नहीं। आँख, नाक, वाणी, कान, कामेंद्रिय आदि अपव्यय के लिए नहीं सद्व्यय के लिए मिले हैं। अगर हम इसे देख समझ सकते हों, तो हमारे जीवन का पचास फीसदी भाग जो हमारी इंद्रियों के द्वारा नष्ट होता चला जा रहा है, हम खोखले, निस्तेज होते चले जा रहे हैं, वह बच सकता है।

तीसरा शिक्षण यह कि हम अपने लोभ-लालच को, अपनी कामना-तृष्णा को निग्रहीत कर सकें, तो हम में से हर आदमी कबीर बन सकता है। क्या कबीर को रोटी नहीं मिलती थी ? रैदास, मीरा, गाँधी को रोटी नहीं मिली ? किसको रोटी नहीं मिली ? और जिसको खूब मिली, उन्होंने कोशिश की कि रोटी के ऊपर रोटी

रखकर खाएँ, पर वे खा नहीं सके। अगर उन्होंने अपनी इच्छा और अकल मोड़ दी होती, लोकमंगल के लिए तो फिर वे सरदार पटेल हो जाते, महामना मालवीय हो जाते, देवदूत हो जाते, भगवान हो जाते। पर तीन ही सक्षम पिशाच हैं, जो हमको खा गए। दुर्गा के आख्यान में तीन ही राक्षसों का नाम आता है—महिषासुर, मधु कैटभ, शुंभ-निशुंभ। देवताओं को पराजित करने वाले इन तीन असुरों की तरह अहंता, तृष्णा और वासना रूपी असुर हमारी देव शक्तियों को नित्य खाए जा रहे हैं।

त्रिपदा गायत्री की धारा जिसका कि आज जन्मदिन है, इसलिए इस विश्व में आई थी कि गायत्री मंत्र के शिक्षण द्वारा, अर्चा-पूजन-अनुष्ठान द्वारा अपनी तीन धाराओं को प्रवाहित करे कि 'मनुष्य! यश के पीछे मत भाग, कर्तव्य के पीछे भाग। लोग क्या कहते हैं यह न सुनकर विवेक के पीछे भाग। दुनिया चाहे कुछ भी कहे, सत्य का सहारा मत छोड़।'

आज गायत्री जयंती का दिन हमारे और आपके लिए संदेश लेकर आया है कि हमको चिंतन-मनन करना चाहिए। हजार बार सोचना चाहिए कि क्या हमारा जीवन प्रभु की इच्छाओं पर चलने वाला जीवन है? हमें जो विभूतियाँ मिली थीं, सामर्थ्य मिली थीं, उन्हें क्या हम मानव जीवन और भगवान के उद्देश्यों के अनुरूप खर्च कर रहे हैं या हम पेट के गुलाम होकर ही जी रहे हैं। जो इंद्रियाँ हमारे पास हैं, जिन्हें हम दुनिया में शांति और सुविधा उत्पन्न करने में खर्च कर सकते थे, क्या हम उन्हें पतन के लिए खर्च नहीं कर रहे हैं? इन तीनों प्रश्नों पर आज हमें तीन हजार बार विचार करना चाहिए।

मेरी उपासना की प्रक्रिया इसी प्रकार की चलती हुई चली गई। लंबे जीवन भर मैं गायत्री मंत्र का जप करता रहा, स्थूल उपासना भी करता रहा, पूजा-प्रार्थना भी करता रहा, लेकिन अपने अंतरंग में गायत्री की उन तीन धाराओं को, जिन्हें मैं सूक्ष्म धाराएँ

कहता हूँ, ज्ञान की गंगा कहता हूँ, भगवान की प्रेरणा कहता हूँ, उनको भी अपने जीवन में धारण करने की कोशिश मैं करता रहा। अब जब कि यह मथुरा का, मेरे जीवन का अंतिम गायत्री जयंती का अवसर है, तब मैं आपको अपने जीवन के अनुभव न सुनाऊँ तो यह उचित न होगा। इस अंतिम अवसर पर अपने सारे जीवन, साठ वर्ष के निष्कर्ष, जिसको आप चाहें तो गायत्री चमत्कार का मूल आधार कह सकते हैं, बता रहा हूँ। मेरे व्यक्तित्व में महानता आप समझते हों, गायत्री मंत्र की महत्ता के द्वारा आदमी को कुछ परिणाम मिल सकते हैं, अगर ऐसी आपकी मान्यता हो तो उस मान्यता के साथ एक और मान्यता जोड़ लेने की मेरी प्रार्थना है कि गायत्री ध्यान करने के लिए वास्तव में कोई महिला नहीं, विवेकशीलता और विचारशीलता की धारा के प्रवाह का नाम है, जो इस विश्व में प्रवाहित है, जो मनुष्य के मस्तिष्क को, क्रिया-कलाप को और अंतरात्मा को छूता है। ध्यान के समय आप हंस पर सवार हुई गायत्री का ध्यान करें बेशक, लेकिन यह भी ध्यान करें कि गायत्री माता सिर्फ हंस पर सवार होंगी, बगुले पर नहीं। हंस वह जो नीर-क्षीर का भेद जानता हो। दूध पी लेता हो, पानी को फेंक देता हो। इस दुनिया में पाप और पुण्य, अनुचित और उचित दोनों मिले हुए हैं। अंतरात्मा जिसे अनुचित कहे, उसे हम ठुकराएँ। जिसे उचित कहे उसी को स्वीकार करें, यह है हंसवृत्ति। यह है हंस पर सवारी। भगवान हम पर सवारी करें इसलिए हमको हंस बनना चाहिए, सफेद बनना चाहिए।

यदि वह विवेकशीलता हमारे भीतर आ जाए तो हमारे जीवन की दिशाएँ बदल जाएँ। इस विवेकशीलता को मैं ऋतंभरा प्रज्ञा कहता हूँ, गायत्री कहता हूँ। अगर यह हमारे अंतरंग में आ जाए तो हमारे जीवन का कायाकल्प हो जाए, हमारे काम करने और इच्छा करने के ढंग बदल जाएँ। तब हम भगवान बन जाएँ, हमारे पास न लक्ष्मी की कमी रहे, न विभूतियों की।

मैंने गायत्री उपासना को ऋतंभरा प्रज्ञा के रूप में समझने की कोशिश की और समझाने की भी, लेकिन लोगों ने उसके बाह्य कलेवर को जो सुगम था और ऐसा मालूम पड़ता था कि हमारी कामनाओं और इच्छाओं को पूरा करने में सहायक है, उतने वाले हिस्से को पकड़ लिया और बाकी वाले हिस्से को गए भूल। असंयमी रोगी के लिए अच्छा हकीम कौन? वह जो मनमरजी का भोजन करने दे। सबसे अच्छी देवी कौन? जो हमारी कामनाओं को पूरा करे। वही देवी है—गायत्री। अपनी इच्छा के अनुरूप हमने देवता को ढालने की कोशिश की इसीलिए देवता की समीपता से पूर्णतया वंचित रहे और वंचित ही रहेंगे। जिनने भगवान की इच्छा के अनुरूप स्वयं को ढालने की कोशिश की, वे भगवान के कृपा पात्र बन गए और सारे माहात्म्य गायत्री के प्राप्त कर सके। मैंने ऐसा ही जीवन जिया, इसी रूप में गायत्री मंत्र को समझा, उपासना की, जप किया और जप के साथ भावनाओं को हृदयंगम किया।

जब मैं चला जाऊँ और अब आप लोग यह विचार करें कि क्या गायत्री मंत्र सामर्थ्यवान है, तब आपको यह कहना चाहिए और समझना चाहिए कि हाँ, गायत्री मंत्र सामर्थ्यवान है। अगर आप उसकी भावना को अंतरंग में प्रवेश कर सके तो आपको यह मानकर चलना चाहिए कि सारी-की-सारी जो सामर्थ्यें भगवान में हैं, वे सबकी सब भक्त में हो सकती हैं तो वह दुनिया को लाभ दे सकता है और अपना कल्याण कर सकता है।

आप अपनी मान्यताओं में यदि यह एक अध्यात्म और जोड़ लें तो मैं समझूँ कि मथुरा में गायत्री जयंती का मेरा यह अंतिम प्रवचन सार्थक हो जाए। आपका सुनना और मेरा कहना सार्थक हो जाए। गायत्री मंत्र और गायत्री विद्या का आविष्कार जिन महामानवों ने किया था, उनका उद्देश्य और प्रयोजन पूरा हो जाए।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। ॐ शांति!

(३ जून १९७१)

गायत्री महाशक्ति की तीन फलश्रुतियाँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो! मेरे पिताजी गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलाने के लिए मुझे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में महामना मालवीय जी के पास ले गए। महामना मालवीय जी और हमारे पिताजी सहपाठी थे। उनका विचार था कि लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार और गायत्री मंत्र की दीक्षा महामना मालवीय जी से कराई जाए। पिताजी मुझे वहीं ले गए, तब मैं दस-ग्यारह वर्ष का रहा होऊँगा। मालवीय जी के मुँह से जो वाणी सुनी, वह अभी तक मेरे कानों में गूँजती है। हृदय के पटल और मस्तिष्क पर वह जैसे लोहे के अक्षरों से लिख दी गई है, जो कभी मिट नहीं सकेगी। उनके वे शब्द मुझे ज्यों के त्यों याद हैं, जिसमें उन्होंनें कहा था—"भारतीय संस्कृति की जननी गायत्री है। यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है। इन माता-पिता की हम सभी को श्रवणकुमार की तरह से कंधे पर रखकर सेवा करनी चाहिए।"

गायत्री मंत्र बीज है और इसी से वृक्ष के रूप में सारा-का-सारा भारतीय धर्म विकसित हुआ है। बीज छोटा-सा होता है बरगद का और उसके ऊपर वृक्ष इतना बड़ा विशाल होता हुआ चला जाता है। गायत्र मंत्र से चारों वेद बने। वेदों के व्याख्यान स्वरूप ब्रह्माजी ने, ऋषियों ने और ग्रंथ बनाए, उपनिषद् बनाए, स्मृतियाँ बनाईं, ब्राह्मण, आरण्यक बनाए। इस तरह हिंदू धर्म का विशालकाय वाङ्मय बनता चला गया। हिंदू धर्म की जो कुछ भी विशेषता दिखाई पड़ती है—साधनापरक, ज्ञानपरक अथवा विज्ञानपरक, वह सब गायत्री के बीज से ही विकसित हुई है। सारे-का-सारा विस्तार गायत्री बीज से ही हुआ है। बीज वही है, टहनियाँ बहुत सारी हैं। हिंदू धर्म में चौबीस अवतार हैं। ये चौबीस अवतार क्या हैं? एक-एक अक्षर गायत्री का एक-एक

अवतार के रूप में, उनके जीवन की विशेषताओं के रूप में, उनकी शिक्षाओं के रूप में है। हर अवतार एक अक्षर है गायत्री का, जिसमें क्रियाएँ और लीलाएँ करके दिखाई गई हैं। उनके जीवन का जो सार है वही एक-एक अक्षर गायत्री का है।

हिंदू धर्म के दो अवतार मुख्य हैं—एक का नाम राम और दूसरे का कृष्ण है। रामचरित का वर्णन करने के लिए वाल्मीकि रामायण लिखी गई जिसमें २४००० श्लोक हैं और प्रति १००० श्लोक के पीछे संपुट लगा हुआ है गायत्री मंत्र के एक अक्षर का। श्रीकृष्ण चरित भागवत में लिखा है। श्रीमद्भागवत में भी चौबीस हजार श्लोक हैं और एक हजार श्लोक के पीछे गायत्री मंत्र के एक अक्षर का संपुट लगा हुआ है अर्थात गायत्री मंत्र के एक अक्षर की व्याख्या एक हजार श्लोकों में। रामचरित हो अथवा कृष्ण चरित, दोनों का वर्णन इस रूप में मालवीय जी ने किया कि मेरे मन में बैठ गया कि यदि ऐसी विशाल गायत्री है, तो मैं खोज करूँगा उसकी और अनुसंधान करके लोगों को यह बताकर रहूँगा कि ऋषियों की बातें, शास्त्रों की बातें सही हैं क्या? स्तुता, मया, वरदा.....कामधेनु, पारस, कल्पवृक्ष आदि जो लाभ गायत्री उपासना के बताए गए हैं, उसके लिए मुझे जिंदगी का जुआ खेलना ही पड़ेगा और खेलना ही चाहिए। मित्रो! चार-पाँच वर्ष में ही मेरी इच्छा भगवान ने पूरी कर दी। मेरे गुरु मेरे पास आए और उन्होंने जो बातें बताईं उससे जिंदगी का मूल्य मेरी समझ में आ गया। जिंदगी का मूल्य और महत्त्व समझकर मैं चौंक पड़ा कि चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद मिलने वाली यह जिंदगी मखौल है क्या? इसके पीछे महान उद्देश्य छिपे हुए हैं। भगवान ने यह मौका दिया है एक, इंसानी जिंदगी हमारे हाथ में देकर के। पर क्या हम और आप उसका इस्तेमाल कर पाते हैं?

मालवीय जी ने मुझे सबसे कीमती एक ही बात बताई थी कि गायत्री मंत्र का संबल आप पकड़ लें तो पार हो सकते हैं। वे मेरे

दीक्षा गुरु हैं और आध्यात्मिक गुरु वे हैं जो हिमालय पर रहते हैं। उन्होंने बताया कि जिंदगी की कीमत समझ, जिंदगी का ठीक इस्तेमाल करना सीख। जिंदगी की कीमत मैंने पूरे तरीके से वसूल कर ली है। एक-एक साँस को इस तरीके से खर्च किया है कि कोई इल्जाम मुझ पर नहीं लगा सकता कि आपने जिंदगी के साथ मखौल किया है, दिल्लगीबाजी की है। जीवन देवता पारस है, अमृत है और कल्पवृक्ष है। इसका ठीक से इस्तेमाल करता हुआ मैं पास चला गया और वहाँ से चलते-चलते अभी पचपन साल की मंजिल पूरी करने में समर्थ हो गया। क्या-क्या किया? क्या-क्या पाया? कैसे पाया? मैं चाहता हूँ कि चलते-चलाते आपको अपने भेद और रहस्य बताता जाऊँ कि गायत्री मंत्र कितना सामर्थ्यवान है। यह इतना कीमती है कि मात्र माला घुमाने की कीमत पर इसके लाभ नहीं प्राप्त किए जा सकते। इसके लिए कुछ ज्यादा ही कीमत चुकानी पड़ेगी।

ऋषि, गायत्री मंत्र के बारे में क्या कहते हैं? शास्त्रकारों ने क्या कहा है? यह जानने के लिए मित्रो, मैंने पढ़ना शुरू किया और पढ़ते-पढ़ते सारी उम्र निकाल दी। पढ़ने में क्या-क्या पढ़ा? भारतीय धर्म और संस्कृति में जो कुछ भी है, वह सब पढ़ा। वेद पढ़े, आरण्यक पढ़ीं, उपनिषदें पढ़ीं, दर्शन पढ़े और दूसरे ग्रंथ पढ़ डाले, देखूँ तो सही गायत्री के बारे में ग्रंथ क्या कहते हैं? खोजते-खोजते सारे ग्रंथों में जो पाया, उसे नोट करता चला गया। पीछे मन में यह आया कि जैसे मैंने फायदा उठाया है, दूसरे भी फायदा उठा लें, तो क्या नुकसान है। उसे छपा भी डाला। लोग उससे फायदा भी उठाते हैं। असल में मैंने ग्रंथों को, ऋषियों की मान्यताओं को जानने के लिए पढ़ा और पढ़ने के साथ-साथ में यह प्रयत्न भी किया कि जो कोई गायत्री के जानकार हैं, उनसे जानूँ कि गायत्री क्या है? और प्रयत्न करूँ कि जिस तरीके से खोज और शोध उनने की थी, उसी तरीके से मैं भी खोज और शोध करने का प्रयत्न करूँ।

मैंने पढ़ा है कि एक आदमी बहुत पहले हुआ था, जिसने गायत्री में पी०एच०डी० और डी०लिट् किया था? कौन था? उसका नाम था—विश्वामित्र। विश्वामित्र उस व्यक्ति का नाम है, जिसको जब हम संकल्प बोलते हैं, तो हाथ में जल लेकर गायत्री मंत्र से पहले विनियोग बोलना पड़ता है। आपको तो हमने नहीं बताया। जब आप आगे-आगे चलेंगे, ब्रह्मवर्चस की उपासना में चलेंगे, तब हम गायत्री के रहस्यों को भी बताएँगे। अभी तो आपको सामान्य बालबोध नियम भर बताए हैं, जो गायत्री महाविज्ञान में छपे हैं। बालबोध नियम जो सर्वसाधारण के लिए हैं, उतना ही छापा है, लेकिन जो जप हम करते हैं, उसमें एक संकल्प भी बोलते हैं, जिसका नाम है—'विनियोग'। प्रत्येक बीज मंत्र के पूर्व एक विनियोग लगा रहता है। विनियोग में हम तीन बातें बोलते हैं—"गायत्री छन्दः। सविता देवता। विश्वामित्र ऋषिः गायत्री जपे विनियोगः।" संकल्प जल छोड़ करके तब हम जप करते हैं। यह क्या हो गया? इसमें यह बात बताई गई है कि गायत्री का पारंगत कौन आदमी था, गायत्री का अध्ययन किसने किया था, गायत्री की जानकारियाँ किसने प्राप्त कीं, गायत्री की उपासना किसने की? वह आदमी जो कि प्रामाणिक है, गायत्री के संबंध में—उसका नाम विश्वामित्र है। मेरे मन में आया कि क्या मेरे लिए ऐसा संभव नहीं कि विश्वामित्र के तरीके से प्रयास करूँ। मित्रो! मैं उसी काम में लग गया। पंद्रह-वर्ष की उम्र से उंतालीस तक चौबीस वर्ष बराबर एक ही काम में लगा रहा, लोग पूछते रहे कि यह आप क्या किया करते हैं हमें भी कुछ बताइए। हमने कहा—प्रयोग कर रहे हैं, रिसर्च कर रहे हैं और रिसर्च करने के बाद में कोई चीज काम की होगी, तो लोगों को बताएँगे कि आप भी गायत्री की उपासना कीजिए, नहीं होगी, तो मना कर देंगे।

मित्रो! २४ साल की उपासना के पश्चात्, संशोधन के पश्चात तीस साल और हो गए जब से गायत्री के प्रचार का कार्य हमने

लिया और जब हमको हमारी जीवात्मा ने यह आज्ञा दी कि यह काम की चीज है, उपयोगी चीज है, लाभदायक चीज है, इसको लोगों को बताया जाना चाहिए और समझाया जाना चाहिए। जो जितना अधिकारी हो, उतनी ही खुराक दी जानी चाहिए। हम उपासना सिखाते रहे हैं, छोटी खुराक वालों को छोटी मात्रा देते रहे हैं, बड़ों को बड़ी मात्रा। हमने छोटे बच्चों को दूध में पानी मिले हुए से लेकर बड़ों को घी और शक्कर मिली हुई खुराक तक विभिन्न लोगों को दी है तीस सालों में। इन तीस सालों में हमारा विश्वास अटूट होता चला गया है, श्रद्धा मजबूत होती चली गई है। यह वह संबल है, वह आधार है कि अगर ठीक तरीके से कोई पकड़ सकने में समर्थ हो सकता हो, तो उसके लिए नफा ही नफा है, लाभ ही लाभ है।

गायत्री के जो सात लाभ बताए गए हैं—'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयंतां आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिम् द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्.....।' इन्हें हमने सौ फीसदी पाया कि ये सातों के सातों लाभ एक-एक अक्षर करके इसमें सही हैं। यह हमने अपने जीवन की प्रयोगशाला में साबित किया है, अपनी जिंदगी में परीक्षण किया है कि लाभ जो गायत्री के बताए गए हैं, सही हैं। इससे मनुष्य की आयु बहुत बड़ी हो जाती है। कितनी बड़ी हो जाती है? बेटे हम कुछ कह नहीं सकते, पर हमारे गुरु के बारे में अपना विश्वास है कि उनकी आयु ६०० वर्ष से कम नहीं हो सकती। गायत्री मंत्र का जप करने वाले की आयु बहुत बड़ी हो सकती है। यह तो आप अपने गुरु की बता रहे हैं। तो फिर आपकी उम्र कहाँ रही? बेटे, हमारी उम्र बहुत बड़ी है।

७० वर्ष की उम्र होने को आई, पर सही बात यह है कि ७० साल हमारी उम्र नहीं है। हम ३५० वर्ष के हैं—७० × ५=३५०। आप ३५० वर्ष के कैसे हो सकते हैं? हम इसलिए हुए कि पाँच आदमी मिलकर के जितना काम करते हैं, उतना काम हमने अपनी

जिंदगी में किया। ग्रंथ हमने जितने लिखे हैं, अगर एक आदमी जिंदगी में लिखने के अलावा दूसरा कोई काम न करे तो भी नहीं कर सकता। और हमने क्या किया? सारी जिंदगी भर एक आदमी तप करता रहा है। जिंदगी के अधिकांश समय में हमारा ६ घंटे रोज दैनिक उपासना में चला गया। इस तरह एक आदमी ने पूरा-का-पूरा श्रम गायत्री उपासना में किया।

एक आदमी ने संगठन किया है। हमने देश भर का संगठन किया है। हिंदुस्तान में और सारे संसार में जो लोग हमको गुरुजी कहते हैं और जिन्होंने हमें देखा है, जो हमारी बात को सुनते हैं, मानते हैं, जिन्होंने दीक्षा ली है, वे करोड़ों की तादाद में हो सकते हैं। एक आदमी ने इतना बड़ा संगठन ३० साल में खड़ा किया हो, मैं समझता हूँ इतिहास में ऐसा उदाहरण कभी नहीं मिला होगा। मरने के बाद तो लोगों ने किए हैं। ईसा के मरने के बाद सेण्टपाल ने ईसाई धर्म का विस्तार किया था, तब फैला था वह धर्म। बुद्ध भगवान का मिशन उनकी जिंदगी में नहीं फैल सका, बहुत थोड़ा-सा था। सम्राट अशोक ने अपना सारा राज्य बुद्ध मिशन के लिए लगाया, तब कहीं उसका विस्तार हुआ। ३० साल में हमने विस्तार की व्यवस्था बनाई है और कोई एक आदमी रह गया है जो हमेशा कहीं और दुनिया में रहता है। संतों के पास रहता है, ज्ञानियों के पास रहता है, तपस्वियों के पास रहता है। उनसे हम गरमी प्राप्त करते रहते हैं, शक्ति प्राप्त करते रहते हैं, पूछताछ करते रहते हैं। एक और भी हमारा है जो जगह-जगह जाता रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि क्यों साहब, हमने सुना है कि आप वहाँ के यज्ञ में गए थे और लोगों ने देखा था। यह भी हो सकता है। स्थूल ही नहीं, शरीर सूक्ष्म भी होते हैं। सूक्ष्म शरीर से हमको जगह-जगह जाना पड़ता है। जगह-जगह काम करने पड़ते हैं। पाँच व्यक्तियों की हमने बराबर जिंदगी जियी और ३५० वर्ष की उम्र हो गई। यह है हमारी आयु।

प्राण! प्राण माने साहस-हिम्मत। हम में बहुत हिम्मत है। कितनी हिम्मत है? सारे-के-सारे पंडित और पुरातनवादी लोग यह कहते थे कि महिलाओं को गायत्री का जप नहीं करना चाहिए और ब्राह्मण के अलावा किसी को नहीं करना चाहिए। हम अकेले ने कहा कि हर बिरादरी के लोग कर सकते हैं और महिलाएँ भी कर सकती हैं। पंडितों, शंकराचार्य सभी से हमने लोहा लिया। सारी दुनिया में उलटी हवाएँ बह रही हैं, प्रवाह बह रहे हैं, इनको मोड़ देने के लिए हम में बहुत ताकत है। इतनी ताकत है हम में कि जिस तरीके से मछली बहती हुई धारा को छल-छलाती हुई चीरती हुई चली जाती है, उसी तरीके से हम अकेले निकल जाते हैं।

कहाँ से आता है यह प्राण? गायत्री में से आता है। गायत्री ने और क्या-क्या दिया? हमको दीर्घजीवन दिया, लंबी आयु दी, प्राण दिया, हिम्मत दे दी, बहादुरी और साहस दे दिया, शक्ति दे दी। प्राण, प्रजा और संतानें दे दीं। कितनी संतानें दीं हम कह नहीं सकते। हमारी संतानें जहाँ पैदा होती हैं, तो मूछों समेत पैदा होती हैं और लड़कियाँ पैदा होती हैं तो मैट्रिक पास करके पैदा होती हैं। कीर्ति-यश के बारे में हमारे मुँह से शोभा नहीं देता। पर हम एक ही बात कहते हैं कि संसार के पढ़े-लिखे लोगों में से कभी किसी से यह पूछें कि आचार्य जी नाम के कोई व्यक्ति थे, तो वह छूटते ही कहेगा हम जानते हैं उन्हें। हिंदुस्तान ही नहीं, संसार की प्रत्येक लाइब्रेरी में जाइए और जाकर पूछिए कि चारों वेदों के भाष्य आपके यहाँ हैं क्या? उत्तर हाँ में मिलेगा। नास्तिक देशों की बात मैं कहता हूँ। आप पूछिए क्यों साहब, इस नाम के व्यक्ति को आप जानते हैं? हमारा यश किसी सीमा में बँधा नहीं है, संप्रदाय में नहीं है, केवल हिंदू धर्म में नहीं है, वरन सारे विश्व में है। यह यश कहाँ से आ गया। यह बेटे गायत्री माता का दिया हुआ है।

कीर्तिम् द्रविणं-धन। यही मत पूछिए कि हमारे पास कितना है? अभी पीछे वाली जमीन खरीदी है और जब अगली बार वसंत पंचमी

पर आप आएँगे तो यहाँ नगर बसा हुआ मिलेगा, महल दिखाई पड़ेगा। महाराज जी कहाँ से लाएँगे? आप हमसे माँगेंगे। नहीं बेटे! मैं तेरे सामने हाथ नहीं फैलाऊँगा। मैंने इंसान के सामने हाथ नहीं पसारा तो तुझसे क्या माँगूँगा? कहाँ से आएगा? बेटे कहीं से आएगा, जमीन फटेगी, आसमान से आएगा। कौन देगा, जिसके बारे में अथर्ववेद ने साक्षी देते हुए कहा है—कीर्तिम्-द्रविणं-धन देने वाली और आखिर में क्या देती है, सातवाँ फल-ब्रह्मवर्चस। ब्रह्मवर्चस् कहते हैं, तेज को। ब्रह्मतेज कैसा होता है? ब्रह्मतेज उसे कहते हैं—जब विश्वामित्र और वसिष्ठ में संघर्ष हुआ तब विश्वामित्र हार गए और अपना राज्य छोड़कर यह कहने लगे कि वसिष्ठ जितने शक्तिशाली हैं उतना ही शक्तिशाली बनकर मैं भी दिखाऊँगा। उनने एक श्लोक कहा—"धिक् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।" अर्थात् ब्रह्मतेज ही बल है। ब्रह्मवर्चस् माने ब्रह्मतेज। इसे ब्राह्मणत्व का तेज कहते हैं, आध्यात्मिक तेज कहते हैं, आत्मा की शक्ति का तेज कहते हैं। गायत्री का आखिरी फल—सातवाँ फल ब्रह्मवर्चस् होता है।

गायत्री मंत्र के बारे में हम सारे जीवन भर प्रयत्न करते रहे और सफलता पा ली। आज मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि ऋषियों ने जो कुछ बताया था कि गायत्री भारतीय संस्कृति का बीज है, तो वह सही है। जो शास्त्रकारों ने लिखा है, अन्यान्य उपासकों ने लिखा है, हम आज यह कहने की स्थिति में हैं कि वह सही है। आप कहते हैं या कोई गवाही भी है? हाँ, बेटे हमारी गवाही है। हमारी जिंदगी के प्रत्येक पन्ने को खोलते चले जाइए वह एक गवाह के रूप में अपना बयान देगा और अपनी हिस्ट्री बताएगा। वह यह बताएगा कि गायत्री की उपासना करते हुए ५५ साल में हमने यह पाया और यह किया। तो महाराज हमें भी मिल सकती है? इसीलिए तो तुम्हें बुलाया है। जो हमारे लिए संभव है, वह आपके लिए भी है। गायत्री आपके ऊपर भी कृपा कर सकती है। सूरज के हम रिश्तेदार नहीं हैं और आपसे कोई बैर नहीं है। आप धूप में खड़े

हो जाइए, सूरज की रोशनी आपको भी मिल सकती है और हम को भी। चंद्रमा की छाया में आप भी बैठ सकते हैं और हम भी।

तो आपने कौन-सी विधि से जप किया? कौन-सी विधि से उपासना की? बेटे, हम यही बताने के लिए आज आपके सामने बैठे हैं कि किस विधि से किया। विधि नहीं एक और बात पूछी जाए। क्या? विधा। विधि तो उसे कहते हैं, जो शरीर से और वस्तुओं की सहायता से, हेरा-फेरी से की जाती है। विधि में हाथ यों जोड़िए, चावल ऐसा नहीं यों रखिए। माला लकड़ी की हो या रुद्राक्ष की। दीपक कैसे रखें? यह सब क्या है? विधि है। कलेवर का नाम विधि है। जिस विधि को आप पूजते हैं, वह आवरण है। आवरण की भी जरूरत पड़ती है, उसके बिना काम नहीं चलता। अगर हमारे पास कलम न हो तो हम चिट्ठी लिख नहीं सकेंगे। बंदूक और तलवार हाथ में हो पर चलाने की विधि न आती हो तो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। अतः विधि की भी जरूरत है। लेकिन मैं यह कहता हूँ कि विधि तक सीमित रहिए मत। विधि आपको मकसद तक नहीं पहुँचा सकेगी। विधि के सहारे आप जीवन लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। विधि आपको भगवान तक नहीं पहुँचा सकेगी। विधि के सहारे आप भगवान की कृपा के अधिकारी नहीं बन सकते। तब क्या करना पड़ेगा? विधि के साथ विधा को जानना होगा। विधा मीन्स-रीति, कायदा-कानून, नियम और मर्यादा। इसके बिना सफलता नहीं मिल सकती।

ऋषियों ने गायत्री को त्रिपदा कहा है। इसके तीन आधार हैं—श्रद्धा, चरित्र निष्ठा और उदारता, जिसे संकीर्णता या कृपणता का त्याग भी कहते हैं। यह तीन आधार आप पकड़ लें तो मैं यकीन दिलाता हूँ कि मेरे तरीके से आपको भी सफलता मिल सकती है। आप भी गायत्री के वैसे ही सिद्ध पुरुष बन सकते हैं जैसे कि महर्षि विश्वामित्र थे और जैसा बनने के लिए मैंने छोटे बच्चे की तरह खुद को समर्पित किया। आपके लिए भी द्वार खुला है मगर त्रिपदा की

तीन शर्तें पूरी कर लें तब। इन तीनों के आधार पर हमारी जिंदगी टिकी हुई है। अगर आप गायत्री मंत्र का वह चमत्कार, जो कि ऋषियों को मिला था, उपासकों, ब्राह्मणों और हमको मिला है तो इसके लिए आप अपनी श्रद्धा को विकसित कीजिए। चरित्र के बारे में ध्यान रखिए। दोष-दुर्गुणों का त्याग कीजिए और सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हो जाइए और यह देखिए कि जनमानस के परिष्कार के लिए आप क्या कर सकते हैं। समय का, श्रम का, धन का, अपनी बुद्धि का कोई हिस्सा लगाने के लिए आप तैयार हैं क्या? कोशिश कीजिए, हिम्मत कीजिए। बीज के तरीके से गलिए और वृक्ष के तरीके से फलिए।

हमने तीन शर्तों पर अपने गुरु से सारी-की-सारी दौलत, सारे-के-सारे धन पाए हैं—पी० एम० टी० की मेडीकल परीक्षा की तरह यह तीन पर्चे हैं कि उदारता की दृष्टि से कितने पैने साबित होते हैं आप। चरित्र की दृष्टि से कितने पवित्र साबित होते हैं। जितने आप नंबर लाते जाएँगे उतने परीक्षा में पास होते जाएँगे। उसी हिसाब से, उसी अनुपात से उसी मात्रा में आपके लिए सफलताएँ, सिद्धियाँ, चमत्कार, अनुदान-वरदान सुरक्षित रखे हुए हैं। टिकट लीजिए 'गिव एंड टेक', दीजिए और लीजिए। मेरे जीवन के सारे-के-सारे निष्कर्ष और निचोड़ यही हैं। मैं चाहता हूँ इनसे आप भी लाभ उठाएँ और गायत्री मंत्र की महिमा और गरिमा को बढ़ाएँ। उपासना के बारे में ऋषियों ने, शास्त्रों ने जो कुछ कहा है, वह साबित करके दिखाएँ। हमने यही साबित करके दिखाने की कोशिश की और आपसे भी यही अपेक्षा करेंगे कि आप जब यहाँ से विदा हों तो वैसा ही साहस, हिम्मत और दृष्टिकोण लेकर जाएँ, जिससे वे तीनों आधार जो गायत्री मंत्र को, त्रिपदा को सफल और सार्थक बनाने में समर्थ रहे हैं, वही आपके जीवन में भी आएँ और आप वे लाभ उठाएँ जो प्राचीनकाल के उपासकों ने उठाया था और हमने भी। आज की बात समाप्त। ॐ शांति। *(९ फरवरी १९७८)*

वासंती हूक, उमंग और उल्लास यदि आ जाए जीवन में

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! वसंत पंचमी उमंगों का दिन है, प्रेरणा का दिन है, प्रकाश का दिन है। वसंत के दिनों में उमंग आती है, उछाल आता है। समर्थ गुरु रामदास के जीवन में इन्हीं दिनों एक उछाल आया—क्या हम अपनी जिंदगी का बेहतरीन इस्तेमाल नहीं कर सकते? क्या हमारी जिंदगी अच्छी तरह से खर्च नहीं हो सकती? एक तरफ उनके विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं। समर्थ गुरु रामदास को शकल दिखाई पड़ी औरत, औरत के बच्चे, बच्चों के बच्चे, शादियाँ, ब्याह आदि की बड़ी लंबी शृंखला दिखाई पड़ी। दूसरी तरफ आत्मा ने संकेत दिया, परमात्मा ने संकेत दिया और कहा—अगर आपको जिंदगी इतने कम कीमत की नहीं जान पड़ती है, अगर आपको महँगी मालूम पड़ती है, मूल्यवान मालूम पड़ती है तो आइए, दूसरा वाला रास्ता आपके लिए खुला पड़ा है। महानता का रास्ता खुला हुआ पड़ा है। समर्थ गुरु ने विचार किया। उछाल आया, उमंग आई और ऐसी उमंग आई कि रोकने वालों से रुकी नहीं। वह उछलते ही चले गए। मुकुट फेंका अलग और कंगन को तोड़ा अलग। ये गया, वो गया, लड़का भाग गया। दूल्हा कौन हो गया? समर्थ गुरु रामदास हो गया। कौन? मामूली-सा आदमी, छोटा-सा लड़का छलांग मारता चला गया और समर्थ गुरु रामदास होता चला गया।

यहाँ में उमंग की बात कह रहा था। उमंग जब भीतर से आती है, तो रुकती नहीं है। उमंग आती है, वसंत के दिनों। इन्हीं दिनों का

किस्सा है बुद्ध भगवान का। उनका भी ऐसा ही किस्सा हुआ था। एक तरफ औरत सो रही थी और एक तरफ बच्चा सो रहा था। सारे संसार में फैले हुए हाहाकार ने पुकारा और कहा कि आप समझदार आदमी हैं। आप विचारशील आदमी हैं और आप जबरदस्त आदमी हैं। क्या आप दो लोगों के लिए जिएँगे? औरत और बच्चों के लिए जिएँगे? यह काम तो कोई भी कर सकता है। बुद्ध भगवान के भीतर किसी ने पुकारा और वे छलांग मारते हुए, उछलते हुए कहीं के मारे कहीं चले गए। बुद्ध भगवान हो गए।

शंकराचार्य की उमंग भी इन्हीं दिनों की है। शंकराचार्य की मम्मी कहती थी कि मेरा बेटा बड़ा होगा, पढ़-लिखकर ऑफीसर बनेगा। बेटे की बहू आएगी, गोद में बच्चा खिलाऊँगी। मम्मी बार-बार यही कहती कि मेरा कहा नहीं मानेगा तो नरक में जाएगा। शंकर कहता—अच्छा मम्मी कहना नहीं मानूँगा तो नरक में जाऊँगा। हमको जाना है तो अवश्य जाएँगे महानरक में अच्छे काम के लिए। मेरे संकल्प में रुकावट लगाती हो तो आत्मा और परमात्मा का कहना न मानकर तुम कहाँ जाओगी? विचार करता रहा, कौन? शंकराचार्य।

शंकराचार्य ने फैसला कर लिया कि मम्मी का कहना नहीं मानना है। एक दिन वह पानी में घुस गया और चिल्लाने लगा मम्मी क्या करूँ, अब मेरे मरने का समय आ गया। मुझे शंकर भगवान दिखाई पड़ते हैं और कहते हैं कि अगर इस बच्चे को मेरे सुपुर्द कर दोगी तो हम मगर से इसे बचा सकते हैं। मम्मी चिल्लाई—अच्छा बेटे, जिंदा तो रहेगा, मुझे मंजूर है और मैंने तुझे भगवान को दे दिया। बस शंकराचार्य ने उछाल मारी और किनारे आ गए। वे बोले—देखो मगर ने छोड़ दिया, अब में शंकर भगवान का हूँ।

बहुत-सी शृंखला मैंने देखी हैं। उसी शृंखला में एक और कड़ी शामिल हो जाती है वसंत पंचमी को। यही दिन थे, पचपन वर्ष पहले एक आया? कौन आया? मेरा सौभाग्य आया।

वसंत पंचमी के दिन हर एक का सौभाग्य आता है, एक उमंग आती है, तरंग आती है। मेरे ऊपर भी एक तरंग आई सौभाग्य के दिन, मेरे गुरु के रूप में, मास्टर के रूप में। मेरा गुरु प्रकाश के रूप में आया। जब कोई महापुरुष आता है तो कुछ लेकर के आता है। कोई महाशक्ति आती है तो कुछ लेकर के आती है, बिना लिए नहीं आती। मेरा भी गुरु, मेरा भी बॉस, मेरा भी मास्टर और मेरा भी सौभाग्य इसी वसंत पंचमी के दिन आया था, जिसमें कि हम और आप मिल रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि जो सौभाग्य की धारा और लहर मेरे पास आई थी, काश, आपके पास भी आ जाती तो आप धन्य हो जाते।

जब आती है हूक, जब आती हैं उमंग तो फिर क्या हो जाता है? रोकना मुश्किल हो जाता है और जो आग उठती है, ऐसी तेजी से उठती है कि इंतजार नहीं करना पड़ता। जब वक्त आता है तो आँधी-तूफान के तरीके से आता है। मेरी जिंदगी में भी आँधी-तूफान के तरीके से वक्त आया। मेरे गुरु आए और आकर के उनने आत्मसाक्षात्कार कराया, पूर्व जन्मों का हाल दिखाया और जाते वक्त कहा कि हम दो चीजें देकर जाते हैं। दोनों चीजें जिनको हम शक्तिपात और कुंडलिनी जागरण कहते हैं, दोनों की दोनों सेकंडों में पूरी हो गईं और मैं कुछ-से-कुछ हो गया। मेरी आँखों में कुछ और चीज दिखाई पड़ने लगी। नशा पीकर आदमी को कुछ-का-कुछ दिखाई पड़ता है। ऐसे ही मुझे दुनिया किसी और तरीके से दिखाई पड़ने लगी।

शक्तिपात कैसे कर दिया? शक्तिपात क्या होता है? शक्तिपात को मामूली समझते हैं कि गुरु की आँखों में से शरीर में से बिजली का करेंट आता है और चेले में बिजली छू जाती है और चेला काँप जाता है। वस्तुतः यह कोई शक्तिपात नहीं है और शारीरिक शक्तिपात से कोई बनता भी नहीं। शक्तिपात कहते हैं, चेतना का शक्तिपात, चेतना में शक्ति उत्पन्न करने वाला। चेतना की शक्ति भावनाओं के रूप में, संवेदनाओं के रूप में दिखाई पड़ती है, शरीर में झटके नहीं

मारती। इसका संबंध चेतना से है, हिम्मत से है। चेतना की उस शक्ति का ही नाम हिम्मत है जो सिद्धांतों को, आदर्शों को पकड़ने के लिए जीवन में काम आती है। इसके लिए ऐसी ताकत चाहिए जैसी कि मछली में होती है। मछली पानी की धारा को चीरती हुई, लहरों को फाड़ती हुई उलटी दिशा में छलछलाती हुई बढ़ती जाती है। यही चेतना की शक्ति है, यही ताकत है। आदर्शों को जीवन में उतारने में इतनी कमजोरियाँ आड़े आती हैं जिन्हें गिनाया नहीं जा सकता। लोभ की कमजोरी, मोह की कमजोरी, वातावरण की कमजोरी, पड़ोसी की कमजोरी, मित्रों की कमजोरी, इतनी लाखों कमजोरियाँ व्यक्ति के ऊपर छाई रहती हैं। इन सारी-की-सारी कमजोरियों को मछली के तरीके से चीरता हुआ जो आदमी आगे बढ़ सकता है, उसे मैं अध्यात्म दृष्टि से शक्तिवान कह सकता हूँ। मेरे गुरु ने मुझे इसी तरीके-से शक्तिवान बनाया। बीस वर्ष की उम्र में तमाम प्रतिबंधों के बावजूद मैं घर से निकल गया और काँग्रेस में भरती हो गया। थोड़े दिनों तक उसी का काम करता रहा, फिर जेल चला गया। इसे कहते हैं हिम्मत और जुर्रत, जो सिद्धांतों के लिए, आदर्शों के लिए आदमी के अंदर एक जुनून पैदा करती है, सामर्थ्य पैदा करती है कि हम आदर्शवादी होकर जिएँगे। इसी का नाम शक्तिपात है।

शक्तिपात कैसे होता है, इसका एक उदाहरण मीरा का है। वह घर में बैठी रोती रहती थी। घर वाले कहा करते थे कि तुम्हें हमारे खानदान की बात माननी पड़ेगी और तुम घर से बाहर नहीं आ सकतीं। मीरा ने गोस्वामी तुलसीदास को एक चिट्ठी लिखी कि इन परिस्थितियों में हम क्या कर सकते हैं? गोस्वामी जी ने कहा—परिस्थितियाँ तो ऐसी ही रहती हैं। दुनिया में परिस्थितियाँ किसी की नहीं बदलतीं। आदमी की मनःस्थिति बदल दें तो परिस्थितियाँ बदल जाएँगी। चिट्ठी तो क्या उनने एक कविता लिखी मीरा को—

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।

यह कविता नहीं शक्तिपात था। शक्तिपात के सिद्धांतों को पक्का करने के लिए यह मुझे पसंद आती है और जब तब मेरा मन होता है, उसे याद करता रहता हूँ और हिम्मत से, ताकत से भर जाता हूँ। मुझ में असीम शक्ति भरी हुई है। सिद्धांतों को पालने के लिए, हमने सामने वाले विरोधियों, शंकराचार्यों, महामंडलेश्वरों और अपने नजदीक वाले मित्रों-सभी का मुकाबला किया है। सोने की जंजीरों से टक्कर मारी है। जीवन पर्यंत अपने लिए, आपके लिए, समाज के लिए, सारे विश्व के लिए, महिलाओं के अधिकारों के लिए मैं अकेला ही टक्कर मारता चला गया। अनीति से संघर्ष करने के लिए 'युग निर्माण' का 'विचार क्रांति' का सूत्रपात किया। इस मामले में हम राजपूत हैं। हमारे भीतर परशुराम के तरीके से रोम-रोम में शौर्य और साहस भर दिया गया है। हम महामानव हैं। कौन-कौन हैं? बता नहीं सकते हम कौन हैं? ये सारी-की-सारी चीजें वहाँ से हुईं जो मुझे गुरु ने शक्तिपात के रूप में दीं, हिम्मत के रूप में दीं।

कुंडलिनी क्या होती है? कुंडलिनी हम करुणा को कहते हैं, विवेकशीलता को कहते हैं। करुणा उसे कहते हैं जिसमें दूसरों के दुःख-दरद को देखकर के आदमी रो पड़ता है। विवेक यह कहता है कि फैसला करने के लिए हमको ऊँचा आदमी होना चाहिए। कैसा विवेकशील होना चाहिए जैसे जापान का गाँधी 'कागाबा' हुआ। उसने अपना संपूर्ण जीवन बीमार लोगों, पिछड़े लोगों, दरिद्रों और कोढ़ियों की सेवा में लगा दिया। चौबीसों घंटे उन्हीं लोगों के बीच वह काम में रहता। कौन कराता था उससे यह सब? करुणा कराती थी। इसी को हम कुंडलिनी कहते हैं, जो आदमी के भीतर हलचल पैदा कर देती है, रोमांच पैदा कर देती है, एक दरद पैदा कर देती है। भगवान जब किसी इंसान के भीतर आता है, तो एक दरद के रूप में आता है, करुणा के रूप में

आता है। भगवान मिट्टी का बना हुआ जड़ नहीं है, वह चेतन है और चेतना का कोई रूप नहीं हो सकता, कोई शकल नहीं हो सकती। ब्रह्मचेतन है और चेतन केवल संवेदना हो सकती है और संवेदना कैसी हो सकती है ? विवेकशीलता के रूप में और करुणा के रूप में आदर्श हमारे पास हों और वास्तविक हों, तो उनके अंदर एक ऐसा मैग्नेट है जो इंसान की सहानुभूति, जनता का समर्थन और भगवान की सहायता तीनों चीजें खींचकर लाता हुआ चला जाता है। 'कागाबा' के साथ यही हुआ। जब उसने दुखियारों की सेवा करनी शुरू कर दी तो उसको यह तीनों चीजें मिलती चली गईं। आदमी के भीतर जब करुणा जाग्रत होती है तो वह संत बन जाता है, ऋषि बन जाता है। हिंदुस्तान के ऋषियों का इतिहास ठीक ऐसा ही रहा है।

जिस किसी का कुंडलिनी जागरण जब होता है तो ऋद्धियाँ आती हैं, सिद्धियाँ आती हैं, चमत्कार आते हैं। उससे वह अपना भला करता है और दूसरों का भला करता है। मेरा गुरु आया मेरी कुंडलिनी जाग्रत करता चला गया। हम जो भी प्राप्त करते हैं अपनी करुणा को पूरा करने के लिए, विवेकशीलता को पूरा करने के लिए खर्च कर देते हैं और उसके बदले मिलता है असीम संतोष, शांति और प्रसन्नता। दुःखी और पीड़ित आदमी जब यहाँ आँखों में आँसू भरकर आते हैं तो सांसारिक दृष्टि से उनकी सहायता कर देने पर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। शारीरिक से लेकर मानसिक बीमारों तक, दुखियारों एवं मानसिक दृष्टि से कमजोरों से लेकर गिरे हुए आदमी तक, जो पहले कैसा घिनौना जीवन जीते थे, उनके जीवन में जो हेर-फेर हुए हैं उनको देखकर बेहद खुशी होती है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह कुंडलिनी का चमत्कार है।

आज के दिन मेरे मन में एक ही विचार आता है कि यहाँ जो भी लोग आते हैं उनको मेरे कीमती सौभाग्य का एक हिस्सा मिल

जाता तो उनका नाम, यश अजर-अमर हो जाता। इतिहास के पन्नों पर उनका नाम रहता। अभी आपको जैसा घिनौना, मुसीबतों से भरा, समस्याओं से भरा जीवन जीना पड़ता है, तब जीना न पड़े। आप अपनी समस्याओं का समाधान करने के साथ-साथ हजारों की समस्याओं का समाधान करने में समर्थ बनें। फिर आपको न कहना पड़े कि गुरुजी हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए। फिर क्या करना पड़े? गुरुजी को ही आपके पास आना पड़े और कहना पड़े कि हमारी मुसीबत दूर कर सकते हो तो कर दीजिए। विवेकानंद के पास रामकृष्ण परमहंस जाते थे और कहते थे कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए और हमारे पास भी हमारा गुरु आया था यह कहने कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए। उन्होंने कहा—हम चाहते हैं कि दुनिया का रूप बदल जाए, नक्शा बदल जाए, दुनिया का कायाकल्प हो जाए। तो आप खुद नहीं कर सकते? नहीं खुद नहीं कर सकते। जीभ माइक का काम नहीं कर सकती और माइक जीभ का काम नहीं कर सकता। जीभ और माइक दोनों के संपर्क से कितनी दूर तक आवाज फैलती है। हमारा गुरु जीभ है और हम माइक हैं, उनके विचारों को फैलाते हैं। हम चाहते हैं कि आप भी 'लायक' हो जाइए। अगर आपके भीतर 'लायकी' पैदा हो जाए तो मजा आ जाए। तब दोनों चीजें शक्तिपात और कुंडलिनी जो भगवान के दोनों हाथों में रखी हुई हैं, आपको मिल जाएँगी। शर्त केवल एक ही है कि अपने आपको 'लायक' बना लें, पात्र बना लें। यदि लायक नहीं बने तो मुश्किल पड़ जाएगी। कुंडलिनी जागरण के लिए पात्रता और श्रद्धा का होना पहली शर्त है।

आज का दिन ऊँचे उद्देश्यों से भरा पड़ा है। हमारे जीवन का इतिहास पढ़ते हुए चले जाइए, हर कदम वसंत पंचमी के दिन ही उठे हैं। हर वसंत पंचमी पर हमारे भीतर एक हूक उठती है, एक उमंग उठती है। उस उमंग ने कुछ ऐसा काम नहीं कराया जिससे हमारा व्यक्तिगत फायदा होता हो। समाज के लिए, लोकमंगल के

लिए, धर्म और संस्कृति की सेवा के लिए ही हमने प्रत्येक वसंत पंचमी पर कदम उठाए हैं। आज फिर इसी पर्व पर तीन कदम उठाते हैं। पहला कदम सारे विश्व में आस्तिकता का वातावरण बनाने का है। आस्तिकता के वातावरण का अर्थ है—नैतिकता, धार्मिकता, कर्तव्यपरायणता के वातावरण का विस्तार। ईश्वर की मान्यता के साथ बहुत सारी समस्याएँ जुड़ी हुई हैं। ईश्वर एक अंकुश है। उस अंकुश को हम स्वीकर करें, कर्मफल के सिद्धांत को स्वीकार करें और अनुभव करें कि एक ऐसी सत्ता दुनिया में काम कर रही है जो सुपीरियर है, अच्छी है, नेक है, पवित्र है। उसी का अंकुश है और उसी के साथ चलने में भलाई है। यह आस्तिकता का सिद्धांत है। इसी को अग्रगामी बनाने के लिए हमने गायत्री माता के मंदिर बनाए हैं। गायत्री माता का अर्थ है विवेकशीलता, करुणा, पवित्रता एवं श्रद्धा। इन्हीं सब चीजों का विस्तार करने के लिए आप से भी कहा गया है कि आप अपने घरों में, पड़ोस के घरों में गायत्री माता का एक चित्र अवश्य रखें। घर-परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनाएँ।

यज्ञ और गायत्री की परंपरा को हम जिंदा रखना चाहते हैं। इसके विस्तार के लिए चल पुस्तकालय चलाने से लेकर ढकेल गाड़ी-ज्ञानरथ चलाने के लिए दो घंटे का समय प्रत्येक परिजन को निकालना चाहिए। यही दो घंटे भगवान का भजन है। भगवान के भजन का अर्थ है, भगवान की विचारणा को व्यापक रूप में फैलाना। हमने यही सीखा है और चाहते हैं कि आप का भी कुछ समय गायत्री माता की पूजा में लगे। जैसे हमारे गुरुजी ने हमसे समय माँगा था और हमें निहाल किया था, वही बात आज आपसे भी कही जा रही है कि अपने समय का कुछ अंश आप हमें भी दीजिए आस्तिकता को फैलाने के लिए। पाने के लिए कुछ-न-कुछ तो देना ही पड़ता है। पाने की उम्मीद करते हैं तो त्याग करना भी सीखना होगा।

आज के दिन हमने अपने ब्रह्मवर्चस का उद्घाटन कराया था। ब्रह्मवर्चस एक सिद्धांत है कि मनुष्य के भीतर अनंत शक्तियों का जखीरा सोया हुआ है, जिसे जगाना है। जगाने के लिए तप करना पड़ता है। तप करके हम अपने भीतर सोए हुए स्रोतों को जगा सकते हैं, उभार सकते हैं। तप करने का सिद्धांत यह है जिससे खाने-पीने से लेकर ब्रह्मचर्य के नियम पालने तक के बहिरंग तप आते हैं और भीतर वाले तप में हम अपनी अंतरात्मा और चेतना को तपा डालते हैं। तप करने से शक्तियाँ आती हैं, मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। मनुष्य में देवत्व का उदय करने के लिए सामान्य जीवन में आस्तिकता अपनानी और बहिरंग जीवन में तपश्चर्या करनी पड़ती है। आस्तिकता का अर्थ नेक जीवन और तपश्चर्या का अर्थ लोकहित के लिए, सिद्धांतों के लिए मुसीबतें सहने से है। तप करने की शिक्षा ब्रह्मवर्चस द्वारा सिखाते हैं। यह एक प्रतीक है, सिंबल है, एक स्थान है। मनुष्य के भीतर देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण, यही हमारे दो सपने हैं। हमारी कुंडलिनी और शक्तिपात इन्हीं दो प्रयोजनों में काम आती है, तीसरे किसी प्रयोजन में नहीं। तपपरायण और लोकोपयोगी जीवन-यही मनुष्य में देवत्व का उदय है।

धरती पर स्वर्ग के वातावरण का क्या मतलब है? अच्छे वातावरण को स्वर्ग कहते हैं। स्वर्ग वैकुंठ में ही नहीं होता, वरन जमीन पर भी हो सकता है। जहाँ अच्छे आदमी, शरीफ आदमी, अच्छी नीयत के आदमी ठीक परंपरा को अपनाकर भले आदमियों के तरीके से रहते हैं, वहीं स्वर्ग पैदा हो जाता है। संत इमर्सन कहते थे, 'मुझे कहीं भी भेज दो हम उसको स्वर्ग बनाकर रख देंगे।' हम चाहते थे कि धरती पर स्वर्ग बनाने के लिए कोई एक ऐसा मोहल्ला बना दें, एक ऐसा ग्राम बसा दें, जिसमें त्याग करने वाले, सेवा करने वाले लोग आएँ और वहाँ पर सिद्धांतों के आधार पर जिएँ। हलकी-फुलकी, हँसती-हँसाती शांति की जिंदगी जिएँ, मोहब्बत की जिंदगी

जिएँ और यह दिखा सकें कि लोकोपयोगी जिंदगी भी जी जा सकती है क्या? धरती पर इसका एक नमूना बनाने के लिए हमने गायत्री नगर बनाया है और आपको दावत देते हैं कि यदि आप अपने बच्चे को संस्कारवान नहीं बना सकते तो उसको हमारे सुपुर्द कर दीजिए। आप कौन हैं? हम वाल्मीकि ऋषि हैं और वाल्मीकि ऋषि के तरीके से आपके बच्चों को लव-कुश बना सकते हैं। आपकी औरत को तपस्विनी सीता बना सकते हैं। दोनों संस्थाओं की वसंत पंचमी के दिन इसीलिए स्थापना की गई है। आस्तिकता के लिए, ज्ञान यज्ञ के लिए, विचार क्रांति के लिए यह एक नमूना है।

तपश्चर्या के सिद्धांतों को प्राणवान बनाने के लिए, ज्ञान-विज्ञान के लिए, ब्रह्मवर्चस और आस्तिकता को जीवित करने के लिए, धरती पर स्वर्ग पैदा करने के लिए, हिल-मिलकर रहने और त्याग, बलिदान, सेवा की जिंदगी जीने के लिए गायत्री नगर बसाया गया है। लोग यहाँ हमारा प्यार पाने के लिए, संस्कार पाने के लिए, आदर्श पाने के लिए, प्रेरणा पाने के लिए, प्रकाश पाने के लिए आते हैं। नैमिषारण्य क्षेत्र में शौनक और सूत का संवाद होता था। सारे ब्राह्मण बैठते थे, ज्ञान-ध्यान की बातें करते थे और लोकोपयोगी जीवन जीते थे। मेरा भी मन था कि एकदा नैमिषारण्ये के तरीके से स्नेहवश लोग यहाँ आएँ और हिल-मिलकर काम करें, प्यार की बातें करें, समाज सेवा की बातें करें, दूसरों को उठाने की बातें करें। हम एक ऐसी दुनिया बसाना चाहते हैं, ऐसा नगर बसाना चाहते हैं, जिससे दुनिया को दिखा सकें कि भावी जीवन, भावी संसार, अगर होगा तो स्वर्ग जैसा कैसे बनाया जा सकेगा? स्वर्ग में शांति का, परमार्थ का जीवन जीने के लिए क्या-क्या तकलीफें आ सकती हैं? ऐसा हम गायत्री नगर का उद्घाटन करते हैं। चूँकि हमारे गुरु ने यही दिया और उसके लिए वायदा किया कि तेरा ऊँचा उद्देश्य है तो तेरे लिए कमी नहीं पड़ेगी। मैं भी आपको विश्वास दिलाता हूँ

कि अगर आपके जीवन में उद्देश्य ऊँचे हों, तो आपको कमी नहीं रहेगी, कोई अभाव नहीं रहेगा।

मेरी एक ही इच्छा और एक ही कामना रही है कि वसंत पर्व के दिन आपको बुलाऊँ और अपने भीतर जो पक्ष है, उस पिटारी को खोलकर दिखाऊँ कि मेरे अंदर कितना दरद है, कितनी करुणा है, जीवन को पवित्र बनाने की कितनी संवेदना है। यही खोलकर आपको दिखाना चाहता था। अगर आपको ये चीजें पसंद हों तो मैं चाहता हूँ कि आप इन चीजों को देखें, इनको परखें, छुएँ और हिम्मत हो तो इनको खरीद ही ले जाएँ। अपने गुरु का अनुग्रह मैंने खरीद कर लिया है और चाहता हूँ कि आप भी अपने गुरु का अनुग्रह खरीद कर ले जाएँ, शांति खरीदकर ले जाएँ, महानता खरीद कर ले जाएँ और जो कुछ भी दुनिया में श्रेष्ठ है, वह सब खरीद कर ले जाएँ तो आप धन्य हो जाएँ। खरीदने के लिए कहाँ जाएँ? हम देंगे आपको, जैसे हमारे गुरु ने दिया शक्तिपात के रूप में और कुंडलिनी के रूप में। यही है हमारी आकांक्षा और अभिलाषा।

ॐ शांति।

(१२ फरवरी १९७८, वसंत पंचमी)

आध्यात्मिक अनुदान किन शर्तों पर मिलते हैं

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो!! सामान्य सिद्धांत का जिक्र मैं कल कर रहा था आपसे। अपने बाहुबल से, पुरुषार्थ से और पराक्रम से बहुत आदमियों ने भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में बहुत कुछ पाया है। यह मोटा सिद्धांत आप सबको मालूम है। जिन लोगों ने उन्नति की है दुनिया में, अपने पराक्रम और पुरुषार्थ किए हैं, वे

धन भी कमाए हैं, विज्ञान की शोधें भी की हैं और जीवन में आगे भी बढ़े हैं। आध्यात्मिक जीवन में बहुतों ने पुरुषार्थ किया है। महर्षि विश्वामित्र का नाम आपको मालूम होगा। जब उन्होंने गुरु वसिष्ठ से कहा कि हमको राजर्षि नहीं रहना है, ऋषि बनना है, तो उन्होंने कहा कि फिर तप करना चाहिए। विश्वामित्र ने फिर तप किया। लंबे समय तक महर्षि दधीचि ने तप किया। यह क्या है? यह प्रयोग और पुरुषार्थ है। आपको मालूम नहीं है, तप करने और पुरषार्थ करने से आदमी भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में उन्नति करते रहे हैं। इस सिद्धांत में दो राय नहीं, एक राय है। ये क्या बात कर रहे हैं, मैं पराक्रम और पुरुषार्थ की बात कह रहा हूँ। इनका महत्त्व आपकी दृष्टि में कम न होने पाए, इसलिए इस बात को बता रहा हूँ, पर वहाँ तो मुझे एक नई बात कहनी थी अनुदान की। अनुदान, जो कभी-कभी मिलते हैं और किसी खास मकसद के लिए मिलते हैं, उनकी बात कहनी थी। पुराने जमाने की बात बताऊँ। अच्छा चलिए बताता हूँ। अर्जुन हार गया था दुर्योधन से और मारा-मारा फिर रहा था। पांडवों में से कोई नचकैया, कोई रसोइया बन रहे थे। थककर बिलकुल निढाल हो गए थे। पराक्रम चुक चुका था, तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—आप महाभारत में काम कीजिए। हमारे अनुदान मिलेंगे। अर्जुन ने केवल गांडीव पर रखकर तीर चलाए थे। श्रेय उन्हीं को मिल गया। भगवान ने फतह उन्हीं की कराई। यह मैं अनुदान की बात कह रहा हूँ, भगवान कृष्ण के अनुदान की और बताऊँ? अच्छा और बताता हूँ। सुदामा जी को पैसे की आवश्यकता पड़ी। किस काम के लिए? सुदामा जी बड़े गरीब थे और भिखारी थे, नंगे थे, भूखे थे। खबरदार! सुदामा जी की शान में ऐसी बात कही तो मैं कान उखाड़ लूँगा। ब्राह्मण की बेइज्जती मत कीजिए, संत की बेइज्जती मत कीजिए, अध्यात्म की बेइज्जती मत कीजिए। मित्रो! बड़े शानदार आदमी थे सुदामा जी और शानदार काम के लिए, विश्वविद्यालय चलाने के

लिए मदद माँगने गए थे। तब भगवान ने अपनी सारी-की-सारी कमाई द्वारिका से उठा करके पोरबंदर ट्रांसफर कर दी थी। पाई-पाई सुदामा जी को सुपुर्द कर दिया था। यह श्रीकृष्ण की कथा कह रहा था मैं आपसे और राम की कहूँ। राम की कथा कहता हूँ। एक आदमी का नाम था—विभीषण। शरीर की दृष्टि से बहुत कमजोर था, लेकिन रामचंद्र जी ने उसे रातों-रात मालदार बना दिया, लंका का मालिक बना दिया। यह कैसे हो गया? भगवान का अनुदान था। तो और किसको दिया था? हनुमान जी को दिया था। हनुमान जी की ताकत स्वयं की उपार्जित थी? नहीं, स्वयं की उपार्जित नहीं थी। स्वयं की रही होती, तो उन्होंने सुग्रीव की मदद जरूर की होती। सुग्रीव की मदद करने में वे बिलकुल असफल थे। फिर क्या करने लगे? पहाड़ उठाने लगे, समुद्र छलांगने लगे। एक लाख पूत सवा लाख नाती—दो-दो लाख आदमियों से, दैत्यों से, जाइंटों से, राक्षसों से अकेले मुकाबला करने लगे। राक्षस कैसे होते हैं? दो-दो योजन मूँछें ठानी। दो-दो योजन लंबी उनकी मूछें थीं। ऐसे जबरदस्त राक्षसों से लड़ने के लिए आमादा हो गए हनुमान जी। कैसे हो गए? अनुदान था।

आप समझिए ऊँचे सिद्धांतों को। आप तो समझना भी नहीं चाहते। श्रीकृष्ण भगवान और रामचंद्र जी ने हर एक को किसी किसी खास कारण के लिए अनुदान दिए थे। नहीं साहब, मजा उड़ाने के लिए दिया था, ऐय्याशी के लिए दिया था। खबरदार, भगवान के बारे में ऐसी बेइज्जती की बातें कहीं तो, बेकार की बात मत कहिए। मित्रो! अभी पुरानी बात बताई मैंने। अब नई बताता हूँ। विनोबा को गाँधी जी के अनुदान मिले थे। विनोबा अपने आप उठे थे? नहीं, अपने आप संत रह सकते थे और अपनी गीता का प्रचार करते रह सकते थे, पर दूसरा गाँधी, बापू जी ने बनाया था उन्हें और जिसने वामन अवतार के तरीके से अपने डगों से सारे हिंदुस्तान को नाप डाला और सैकड़ों एकड़ जमीनें मिलती चली गईं। और

किसको मिले गाँधी के अनुदान? करमसद गाँव का एक पटेल मामूली वकालत करता था। उसको सरदार पटेल बना दिया, हिंदुस्तान का गृहमंत्री बना दिया था।

मित्रो! मैं अनुदान की बात कर रहा था। चलिए अभी और बताता हूँ। पंडित नेहरू ने लाल बहादुर शास्त्री को मिनिस्टर बना दिया और प्रधानमंत्री बना दिया था। लाल बहादुर शास्त्री की कोई हैसियत थी? नहीं, कोई हैसियत नहीं थी। यह क्या दिया गया था—अनुदान। नेहरू जी का अनुदान। उन्होंने हीरालाल शास्त्री, जो कि एक कन्या विद्यालय चलाते थे, राजस्थान का मुख्यमंत्री बना दिया था। ये क्या है? ये अनुदानों की बात कह रहा था। अनुदानों का जिक्र अक्सर मैं अपने प्रवचनों में करता रहा हूँ। उसमें से एक और कड़ी मैं हमेशा अपनी शामिल करता रहा हूँ। हमने अनुदानों से पाया है। आपने तो हमारी शक्ल देखी भी नहीं है अभी तक। आपने तो हमारा एक काम देखा है। गुरु जी कितने बड़े हैं? जितना बड़ा हमारा काम। आपकी दृष्टि में हमारा समग्र रूप नहीं आ सकता, क्योंकि आपकी आँखें बहुत छोटी हैं। आप हमारी औकात, इज्जत, ताकत और हस्ती का इतना मूल्यांकन करते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी की कि नहीं। आपके बेटा हुआ कि नहीं हुआ। बेटा हो गया, तो गुरुजी चमत्कारी सिद्ध पुरुष और आपके बेटा नहीं हुआ, तो सौ गाली। आपकी शक्ल, आपकी बुद्धि, आपकी दृष्टि ऐसी छोटी जैसी मच्छर की छोटी आँख होती है। आप हमारी हैसियत और व्यक्तित्व को इतना छोटा मानते हैं, जितना हमारे शरीर में कान की लंबाई-चौड़ाई है। उतने को आप परखते हैं, उतने को सोचते हैं, उतने को देखते हैं। लेकिन हमारा व्यक्तित्व बहुत बड़ा है। कितना बड़ा है? आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। बीस साल निकल जाने दीजिए। जो जिंदा रहें, जरा देखना गुरुजी किस आदमी का नाम था। हम आपकी दृष्टि में छोटे हो सकते हैं, लेकिन संसार के लिए हम बहुत बड़े आदमी हैं। जरा अगली वाली हिस्ट्री को

पढ़ना। अगली वाली पीढ़ियों की आँखों से हमको देखना। सारी मनुष्य जाति के इतिहास में हम एक कमाल करने जा रहे हैं। तो क्या चीज हैं ये? अनुदान हैं हमारे। हमको बहुत शानदार अनुदान मिले हैं, ऐसे कि सारे इंसान के लिए, इंसानी समाज के लिए, इंसानी भविष्य के लिए एक ऐसा नया इतिहास लिखेंगे, जिसे कि लोग याद करते रह जाएँगे और अचंभे में रह जाएँगे। यह अनुदान में मिला है हमको।

मित्रो! मैं अनुदान की बावत बता रहा था कि छोटे कामों के लिए अब ये दिन नहीं हैं। यदि आप हमारे पास बैठें और हमारे व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश करें, तो आपको पता चलेगा कि आदमी का एक-एक सेकंड कितना कीमती है। इसीलिए एक-एक सेकंड का इन दिनों हमारे सारे विश्व के लिए, सारे विश्व की संपदा के रूप में इस्तेमाल करना पड़ रहा है। ऐसे समय में आपका ये अनुदान सत्र हमने खास मकसद के लिए लगाया है कि आपको कुछ कीमती-सी चीजें दे दें। कभी आवश्यकता होती है, तो इसी तरह के अनुदान दिए जाते हैं। आवश्यकता पड़ी थी रामकृष्ण परमहंस को और वे इस बात की तलाश में थे कि कोई ऐसा आदमी मिल जाए, तब उसको अनुदान दे दें। बहुत मुश्किल से एक आदमी दिखाई पड़ा, जिसका नाम था विवेकानंद। रामकृष्ण उनके पास स्वयं गए थे? जिसको दिया है, वो वजनदार आदमी होना चाहिए। अनुदान देने के लिए इन दिनों देवता व्याकुल हो रहे हैं। पहले भी व्याकुल थे, इन दिनों तो बहुत ही व्याकुल हो रहे हैं। व्याकुल देवताओं के अनुग्रह लेने के लिए कुछ आपको काम करना है, वही बात कहनी है आपसे। हमारा गुरु व्याकुल हो रहा था और हमारे घर आया था। देवता आपके भी घर आएगा। आप यकीन रखिए, पर देवताओं को तो आप पागल समझते हैं। पागल मत कहिए। भगवान के साथ में व्यक्तिगत तालमेल मत भिड़ाइए। भगवान व्यक्ति नहीं है। वह एक कायदे का नाम है, भगवान एक

कानून का नाम है, भगवान एक नियम का नाम है, मर्यादा का नाम है। उसमें किसी व्यक्ति के साथ में व्यक्तिगत रूप से न तो नाखुशी की गुंजायश है और न खुशी की। न किसी के साथ में भगवान की रियायत की गुंजायश है और न भगवान के यहाँ किसी के प्रति नाराजी की गुंजायश है। नाराजी की गुंजायश रही होती, तो चाइना वालों को, रशिया वालों को, जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और न केवल विश्वास ही नहीं करते, बल्कि गाली-गलौज भी देते हैं, अब तक भगवान जी ने कचूमर निकाल दिया होता।

तो मैं कह रहा था? मैं ये कहने वाला था कि अनुदान सत्र, जिसमें हमने आपको बुलाया है, उसकी तीन शर्तें हैं, तीन कसौटियाँ हैं। एक कसौटी ये है, जिसका अर्थ होता है-ईश्वर का विश्वास, पात्रता का विकास। इसका दूसरा नाम क्या है? उपासना। उपासना का एक बहुत छोटा अंग है—भजन। उपासना समग्र फिलॉसफी है। उपासना किसे कहते हैं? भगवान के नजदीक बैठना। भगवान के नजदीक बैठने का अर्थ होता है उसकी विशेषताओं को ग्रहण करना, मसलन आग के आप नजदीक बैठते हैं, तो आग की विशेषताओं को ग्रहण करते हैं। अपनी ठंडक और नमी दोनों को मिटा देते हैं। गरमी आपके अंदर चली जाती है और ठंडक दूर हो जाती है। उपासना इसी को कहते हैं। उपासना का अर्थ यही होता है कि आप सिद्धांतों के लिए अपने आपको समर्पित कर दें। श्रद्धा इसी का नाम है। समर्पण इसी का नाम है। गीता में भगवान ने बार-बार यही कहा है—'मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।' अरे अभागे! अपनी अकल को हमारे पास ला, अपनी बुद्धि को, मनोकामनाओं को हमारे पास ला। आपको उपासना के लिए यही करना चाहिए। हमने भी यही किया और आपको भी यही करना चाहिए। हमने अपनी कठपुतली के सारे धागे अपने बॉस की हथेलियों में बाँध दिए हैं और वही वहाँ से नचाते रहते हैं। हमारी भक्ति इसी बात पर है कि हमने हर चीज को धागा से

बाँध दिया है और ये कहा है कि आप हुक्म दीजिए। आपके हुक्म पर हम चलेंगे और आप तो जाने क्या कहते हैं? ये कहते हैं भगवान से कि आप हमारे हुक्म पर चलिए। अपनी वासनाओं के लिए, अपनी तृष्णाओं के लिए, अपने घटियापन के लिए और अपने कमीनेपन की पूर्ति के लिए आप तो ये कहते हैं भगवान से अपने सिद्धांतों का सफाया कर दीजिए और हमको अनड्यू एडवांटेज देना शुरू कर दीजिए। भगवान की शान को ध्यान में रखिए। भक्ति के नाम पर ये मत कहिए। हमारी कोई मनोकामना नहीं है। हमारी एक ही मनोकामना है—'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।' यह भक्ति है। अगर यह भक्ति आप के पास आई, तो आप देख लेना, भगवान आपके पास आएँगे।

यह उपासना के बारे में बता रहा था। मित्रो! उपासना के अलावा एक और काम आपको पात्रता विकास के लिए करना पड़ेगा, उसका नाम है—साधना। साधना किसे कहते हैं? आदतें एक, मान्यताएँ दो और आकांक्षाएँ तीन—इन तीनों को उच्चस्तरीय बनाना पड़ेगा। यही साधना है। जरा ऊँचे स्तर पर उठके तो देखिए। जिस जमीन पर आप रहते हैं, वहाँ पर चलना बहुत मुश्किल है। एक घंटे में आप तीन मील चलेंगे, लेकिन जरा ऊँचे तो उठिए, फिर आप देखिए एक घंटे में छह सौ मील की रफ्तार से जाते हैं। बोइंग जहाज छह सौ मील की रफ्तार से चलते हैं और जरा ऊँचे उठिए। जो उपग्रह पृथ्वी के चक्कर काटते हैं, उन चक्करों को देखिए। वे ढाई हजार मील प्रति मिनट के हिसाब से चलते हैं। आप तो वहाँ पड़े हुए हैं, जहाँ सड़न-कीचड़ भरी पड़ी है, जिसको जमीन कहते हैं, जहाँ से न चलना संभव है, न ऊँचा उठना संभव है, न जिंदगी संभव है। लेकिन अगर आप अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत कर लेते, तब क्या कहूँ आपसे—आप बहुत शानदार आदमी होते। तब मैं आपसे कहता—साधक! अगर आपने अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत किया होता, तो मैं यकीन दिलाता हूँ आपको, आपका

आकर्षक व्यक्तित्व देवताओं की कृपा को, भगवान की कृपा को, सिद्धियों को, अनुदानों को खींच के ले आता। आप में से हर आदमी में कबीर के बराबर, रैदास के बराबर, विवेकानंद के बराबर योग्यता है, पर हम क्या करें। ये घटियापन तो चैन नहीं लेने देता। खा गया ये घटियापन, आपके पैसे को, आपकी अकल को, आपके श्रम को, हर चीज को खा लिया। साधना किसे कहते हैं? अपने घटियापन को दूर करने-कराने के लिए जद्दोजहद करना, लड़ाई करना। तपश्चर्या इसी का नाम है। जप इसी का नाम है, भगवान के ऊपर डोरे डालने का नाम नहीं है, खुशामदें करने का नाम नहीं है।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए पात्रता की दो शर्तों के अतिरिक्त एक तीसरी कसौटी भी है, उसका नाम है—आराधना। भगवान के ऊपर असर डालने वाली यही एक चीज है, दूसरी कोई नहीं। उपासना, साधना स्वयं के लिए और भगवान को प्रभावित करने के लिए अंतिम चरण रह जाता है—आराधना। आराधना का अर्थ है—लोकसेवा, जनहित, जनकल्याण, समाजसेवा। अपने समय में से, अपने श्रम में से, अपनी मेहनत में से और पैसों में से भगवान का काम कीजिए। भगवान का क्या काम है? भगवान का एक काम है—उसकी, दुनिया को सुसंस्कृत और समुन्नत बनाना, उसकी सभ्यता और संस्कृति को बढ़ाना। सभ्यता किसे कहते हैं? सभ्यता कहते हैं—लोगों के चाल-चलन में शालीनता का समावेश और संस्कृति उसे कहा गया है, जिसको उदारता कहते हैं, सेवा कहते हैं, करुणा कहते हैं, परोपकार , लोकमंगल और दान कहते हैं। आप भगवान की आराधना कीजिए, ताकि भगवान आपकी आराधना करें। हमने अपने बॉस की आराधना की है। उसने हमारी आराधना की है। हमने अपने आपको उनके सुपुर्द कर दिया। उन्होंने अपने आपको हमारे सुपुर्द कर दिया है। ये कैसे? वाणी से नहीं, गपबाजी से नहीं, ख्वाबों और कल्पनाओं से नहीं। कार्य से, ऊँचे उद्देश्य के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए समर्पण से।

मित्रो! यह तीन काम अगर आप कर सकते हों, पात्रता विकास के नाप-तौल के हिसाब से, उसी अनुपात से आपको वो अनुदान मिलेंगे, जिन्हें आप हजार वर्ष तक उपासना करने के बाद भी नहीं पा सकते थे, पर इन दिनों अनुदान पा सकते हैं। कल हमने आपको अनुदानों की एक किश्त के बारे में जानकारी कराई थी कि प्राणधारा का संचार प्राप्त करने के लिए दैवी शक्तियाँ आपकी क्या सहायता कर सकती हैं। उसके तीन लाभ हैं—एक लाभ है उसका जीवनी शक्ति, दूसरा लाभ है उसका साहसिकता, तीसरा लाभ है उसका प्रतिभा। ये तीन प्रत्यक्ष सिद्धियाँ हैं। चमत्कारी सिद्धियों की बात आप मत पूछिए। उसे यदि हम आपको बता भी दें और करा भी दें, तो मारीच के तरीके से, भस्मासुर के तरीके से, कुंभकरण के तरीके से, रावण, हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के तरीके से तबाही के मुँह में जाना पड़ेगा। उनको तो नहीं बताते, लेकिन आपके व्यावहारिक जीवन में तीन चीजें आ सकती हैं। जीवनी शक्ति एक, हिम्मत दो, प्रतिभा तीन। जीवनी शक्ति उसे कहते हैं, जिसमें आदमी अपने शरीर और जीवन को अक्षुण्ण रख सकता है, मौत से लड़ सकता है, बीमारियों से लड़ सकता है। ये क्या हैं? ये प्राणधारा है, जो हमको भी मिली हुई है। ७१ वर्ष की उम्र में हम १७ वर्ष के आदमी के तरीके से जिंदा हैं। हमने कामधेनु का दूध पिया है और हमारे अंदर प्राणधारा है, जीवट है, इसलिए श्रम करने की शक्ति, बीमार न होने की शक्ति पूरी मात्रा में हमारे पास है, आप सुनते भी नहीं हैं।

प्राणधारा का दूसरा फायदा—साहसिकता है। साहसिकता हिम्मत को कहते हैं, जिसके सहारे नेपोलियन जैसा दो कौड़ी का आदमी कहाँ-से-कहाँ जा पहुँचा था। कोलंबस जैसा दो कौड़ी का आदमी अमेरिका जा पहुँचा और सारे यूरोपियनों द्वारा अमेरिका पर कब्जा कराने के लिए उतना दूर जाने में समर्थ हो गया था। ये हिम्मत है। हिम्मत तो आप में है भी नहीं। हिम्मत के नाम पर तो जनाजा निकल गया है। रोज संकल्प लेते हैं—बीड़ी नहीं पिएँगे, सिगरेट

नहीं पिएँगे, फिर क्या बात हो गई? संकल्प शक्ति का अभाव। अच्छे कामों के लिए एक इंच आपकी संकल्प शक्ति काम नहीं देती है। श्रेष्ठ कामों के लिए संकल्प करना भगवान का अनुदान है। खराब कामों के लिए तो साहस हर एक में होता है। चोरी के लिए, डकैती के लिए, बेईमानी के लिए, बदमाशी के लिए साहस हर एक में होता है; पर ऊँचा उठाने वाले साहस कभी किसी-किसी में पाए जाते हैं और जिनमें पाए जाते हैं, वे निहाल हो जाते हैं।

तीसरी चीज का नाम है—प्रतिभा। प्रतिभा किसे कहते हैं? जिसमें आदमी हावी हो जाता है, दूसरों पर। गाँधी जी सारे समाज पर हावी हो गए थे, बुद्ध सारे-के-सारे जमाने पर हावी हो गए थे। हावी होने वाली क्षमता का नाम है—प्रतिभा। प्रतिभा के अभाव में आपकी औरत तक कहना नहीं मानती। आपके बच्चे, आपके पड़ोसी, आपके सबोर्डिनेट आपका कहना नहीं मानते, लेकिन अगर आपके पास वो सामर्थ्य रही होती, तो दूसरे आदमी आपकी बात को मानने के लिए मजबूर होते।

मित्रो! हम इन्हीं वस्तुओं के आधार पर आगे बढ़े हैं। आपको भी प्राण संचार धारा के लिए ये चीजें अनुदान में, अनुदान सत्र में हम देने को तैयार हैं। शर्त एक ही है कि आप अपने व्यक्तित्व को पात्रता के उपयुक्त बनाइए। ये समय बिलकुल इसके लायक है कि आप ये फायदा उठा सकते हैं। आज हम आपको दूसरी किश्त सायंकाल को बताएँगे कि सूक्ष्म शरीर में क्या-क्या चीजें अनुदान के रूप में हिमालय से मिल सकती हैं। कल तो वसंत पंचमी है। अगले दिन हम वह बताएँगे कि कारण शरीर में विद्यमान ऋद्धि-सिद्धियों का जखीरा किस तरीके से प्राप्त कर सकते हैं। यह तीनों अनुदान आपके लिए बिलकुल सुरक्षित हैं, शानदार हैं। ऐसे अनुदान हैं जो आज की स्थिति की तुलना में आपको हजारों-लाखों गुना सामर्थ्यवान बना सकते हैं। हमारी बात समाप्त। ॐ शांतिः।

(८ फरवरी १९८१)

सूक्ष्मीकरण के बाद का ऐतिहासिक वसंत

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! वसंत पर्व पर हमें हमेशा नए संदेश मिलते रहे हैं। जिस सत्ता के साथ हमारा बड़ा घनिष्ठ संबंध है और जिसकी आज्ञा से हमारा सारा जीवन व्यतीत हुआ है, जिसको हमने अपने आपे का समर्पण किया है, उस समर्पण वाली शक्ति ने हमसे यह वायदा किया था कि वसंत पंचमी के समय पर हर साल का एक कार्यक्रम बनाकर भेजा करेंगे। वह सुबह हमको मिल गया है। आप में से कई आदमी वसंत पंचमी पर यहाँ आए होंगे, पर वह भावावेश का समय था। दो वर्ष बाद हम आपको मिले हैं तो भावावेश की ही बातें हमने कहीं और आपको क्या करना है और हमें क्या करना है, इसके संबंध में एक छपा हुआ इश्तहार बाँट दिया। मालूम नहीं आपने ध्यान दिया अथवा नहीं। गुरुजी के साक्षात्कार हो गए, दर्शन कर लिए, बहुत हो गया।

पिछले दिनों किसी ने वह अफवाह फैला दी कि गुरुजी बीमार पड़े हैं। उन लोगों को बताने के लिए कि हमारे शरीर में कोई खराबी नहीं है और न कभी कोई खराबी होगी हमारे शरीर में। अगर कभी हमारी मृत्यु हुई तो आप यह समझना कि गुरुजी का ट्रांसफर हुआ है किसी महत्त्वपूर्ण काम के लिए उनको भेज दिया गया है और जो काम अभी हम स्थूल शरीर से करते हैं उसकी अपेक्षा सौ गुना अधिक काम कर रहे होंगे, क्योंकि शरीर का बंधन ही ऐसा है कि हमको बहुत दूर तक चलने नहीं देता। इसलिए जो काम अभी हम इस शरीर से नहीं कर सकते, उसकी अगर आवश्यकता पड़ी, गुरुदेव को आवश्यकता पड़ी तो स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर में बदल जाने के लिए भले से हम कुछ ऐसा करें,

लेकिन फिलहाल अभी ऐसी कुछ योजना नहीं है। न हम बीमार हैं और न हमें कोई कष्ट है और न कोई बात है। हम ठीक तरीके से अपनी यह साधना-उपासना कर रहे हैं। हमें सूक्ष्मीकरण के लिए कहा गया था, उस साधना में हम मुस्तैदी से लगे हुए हैं। इस बारे में इतना ही कहना काफी है कि हमारे बारे में आपको कोई चिंता करने की बात नहीं है। चिंता तो आपकी हमको करनी है। आप क्यों करेंगे? बच्चे माँ-बाप की चिंता क्यों करेंगे कि पिताजी का यह काम कैसे होगा? वह काम कैसे होगा? पिताजी का कर्ज कैसे चुकेगा? बच्चों को क्या पता? पिता को ही यह ध्यान रखना पड़ता है कि अगर हम नहीं रहे या आगे चलकर बच्चे बड़े होंगे तो उनको खिलाने-पिलाने का क्या इंतजाम करना पड़ेगा। इनके रहने के लिए मकान का, इनके ब्याह-शादी का क्या इंतजाम करना पड़ेगा? इनके काम-धंधे का क्या इंतजाम करना पड़ेगा? यह चिंता करना बड़ों का काम है। हम बड़े हैं। आपसे उम्र में भी बड़े हैं, विद्या में भी बड़े हैं, ज्ञान में भी बड़े हैं, तप में भी बड़े हैं, भावनाओं में भी बड़े हैं। हम बड़े हैं तो यह हमारा काम है कि आप सब लोगों का ध्यान रखें।

विगत वर्ष जब वसंत पंचमी का उत्सव हुआ था, तब हमने बहुत-सी बातें कही थीं, पर उनमें से विशेष रूप से ध्यान देने लायक दो बातें खास थीं। एक बात यह है कि यह युग संधि का समय है, जिसमें अभी पंद्रह वर्ष बाकी हैं, सन् २००० आने में। यह खराब समय अभी खत्म नहीं हुआ है। पहले सभी समझते थे कि यह खत्म हो गया है, पर अभी न तो प्रकृति प्रकोप खत्म हुए हैं और न हारी-बीमारी। हारी-बीमारी के ऐसे-ऐसे चक्कर हैं कि एक दिन में एक-एक गाँव में २२-२३ बच्चों की मृत्यु हो जाती है। कभी-कभी चौपायों में ऐसी बीमारी फैलती है कि वे सारे-के-सारे ढेर हो जाते हैं। कभी-कभी भूकंप आ जाते हैं। अभी-अभी हिंदुस्तान में इस तरीके से तूफान आए कि लाखों आदमियों को तबाह करके

रख दिया। इस तरीके से चीजें पैदा हो जाती हैं और न जाने कहाँ से आ जाती हैं। नेचर-प्रकृति हमसे नाराज हो गई है। इंसानों का चाल-चलन देखकर प्रकृति ने नाराजगी से अपना बदला चुकाने का निश्चय किया है और वह बराबर बदला चुका रही है और हैरानी पैदा कर रही है।

एक बात हमने यह कही और आप सबको सावधान किया था कि आप लोग सावधान रहना। तो क्यों साहब! हमारे सावधान रहने से क्या हो जाएगा? मान लीजिए कोई ऐसी बीमारी आ जाए, मुसीबत आ जाए या बाढ़ आ जाए या कोई ऐसा उपद्रव खड़ा हो जाए तो हम क्या करेंगे? इसीलिए हमने कहा था कि अभी हम आपसे अलग नहीं हुए हैं। अभी हम आप से ज्यों-के-त्यों जुड़े हुए हैं। हमारी शक्ति के दो हिस्से जरूर हो गए हैं। अब तक जो शक्ति सीमित थी और गायत्री परिवार की शाखाओं में ही भरती जाती थी, संगठन करने या आयोजन करने या सम्मेलन बुलाने में, शिविर लगाने में खर्च हो जाती थी, अब दो साल की सूक्ष्मीकृत साधना में अपनी शक्ति को इस हिसाब से विकसित किया है कि पचास परसेंट शक्ति से हमारे पास जो अभी थोड़े-से २४ लाख व्यक्ति हैं, उनकी हम सुरक्षा कर लेंगे। पचास फीसदी शक्ति हम सुरक्षा में लगाएँगे। आपकी हारी-बीमारी में, घाटे में, दुःख में, मुसीबत में, हैरानी में हमारी आधी शक्ति बराबर काम करती रहेगी। इसमें भी आप कमी नहीं पाएँगे, चाहे आप कैसी ही मुसीबत में क्यों न फँसे हों और लोगों से आप हर हालत में नफे में रहेंगे, यह हमारा वायदा है और यह हमारा आपसे कहना है। एक और बात हमने यह कही थी कि अब आपको बार-बार हरिद्वार आने और बार-बार हमसे मिलने की आवश्यकता नहीं है। इसका बहुत सीधा सरल रास्ता हमने निकाल लिया है। वह यह है कि यदि हमसे मिलने की आवश्यकता हो तो आप इस बार लंबे-लंबे प्राणायाम करना और प्राणायाम करने बाद में सिर के ऊपर दाहिना हाथ फिराना। हाथ

फिराने के बाद में देखना कि जो कुछ भी आपके मन में विचार थे, वह सबके सब बाहर निकल गए और हमारे विचारों का भीतर आना शुरू हो गया। उस वक्त जो विचार उठें उनको यह मान लेना कि यह गुरुजी की बात है, विचार है। यह रविवार के दिन करना चाहिए। हो सके तो नित्य करना चाहिए।

एक बात हमने यह कही थी कि आपके देखभाल की, आपकी सुख-शांति की, आपको आगे बढ़ाने की, ऊँचा उठाने की, आपके दुःख-दरदों को कम करने की जिम्मेदारी हमारी है। आपको कोई मुसीबत हो, हैरानी की बात हो तो माताजी से कह देना अथवा जो कोई भी हों यहाँ हमने सात सदस्यों की एक कमेटी बनाई, ट्रस्ट बनाए हैं। ये ऐसे हैं जो अपने घर से ही अपना खर्च चलाते हैं, ऊँची योग्यता के हैं। यहाँ के कामों को बड़ी ईमानदारी और जिम्मेदारी से सँभालते हैं और हमको यकीन हो गया है कि वे आदमी हमेशा अपनी जिम्मेदारियों को सँभालते रहेंगे। उनके सुपुर्द हमने यह कर दिया है कि जो कोई भी यहाँ आया करें, इनके हाथों लिख कर दे दिया करें, वह हम तक पहुँच जाएगा और हम आपका काम कर देंगे। यह हम आपसे वायदा करते हैं और आपको वचन देते हैं। हमने आपके लिए अपने व्यक्ति, अपने नुमाइंदे नियुक्त किए हैं, जो आपसे संबंधित बातों को ठीक से समझा सकें। जो बातें आपसे, आपके बाल-बच्चों से संबंधित हैं, आपके पैसेसे संबंधित हैं, आपके शरीर से, आपके सुख और दुःख से संबंधित हैं, उसके बारे में हमारा जो वायदा है, जो दायित्व है, उसके बारे में ये आदमी आपको ठीक से समझा देंगे। अपने इन नुमाइंदों को हम आपकी सेवा में भेज रहे हैं।

एक बहुत बड़ा काम हमने किया है—यज्ञीय परंपरा का पुनर्जीवन। वैसे तो सारी जिंदगी भर हमने बड़े ही काम किए हैं। हमारा जीवन बड़ा है। हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ डाली गई हैं। दिमाग तो हमारा बड़ा है ही, पर हमारा कलेजा बहुत बड़ा

है। इतना कलेजा है कि या तो हाथी का होगा या ह्वेल का। उससे कम भारी कलेजा हमारा नहीं है। हमें वजनदार काम सौंपे गए हैं। हाथी के ऊपर जब वजन रखा जाता है तब भारी वजन रखा जाता है। शेर को छलांग मारनी पड़ती है तो बड़ी छलांग मारता है। इसीलिए हमारे कंधों पर बड़े काम डाले गए हैं। यह जो युग संधि के दिन हैं, इसमें अनेक काम पूरे करने के लिए हमें सौंपे गए हैं और उन सौंपे गए कामों को क्या हम अकेले पूरा कर लेंगे? यह कहना जरा मुश्किल है, क्योंकि जब रामचंद्र जी ने रावण को मारा था, तब अकेले उन्होंने मारा हो सो बात कहाँ थी। उनके साथ में नल-नील थे, जाम्बवंत थे, हनुमान थे, अंगद थे और कितने ही रीछ-वानर थे। सबने मिलकर मारा था। इसी तरीके से सबको मिलाकर हमको एक ऐसा अनुष्ठान करना है जैसा कि पहले जिस दिन से ब्रह्माजी ने धरती बनाई थी, उस वक्त से न कभी हुआ था और न कभी होगा।

एक संकल्प हमारा यह है कि एक लाख यज्ञ करें। एक लाख गायत्री यज्ञ कहाँ होंगे? हमारी इच्छा है कि एक लाख अलग-अलग स्थानों पर करें, ताकि हर गाँव का वातावरण, हर गाँव की सुरक्षा, हर गाँव में हमारा और हमारे गुरुदेव का प्राण इस यज्ञ के माध्यम से जा पहुँचे। यज्ञ एक माध्यम है। जिस तरीके से लाउडस्पीकर हमारी आवाज को पकड़कर उसे बाहर फैलाने का एक माध्यम है, इसी तरीके से यज्ञ एक माध्यम है जो कि हमारी आवाज को पकड़ रहा है, हमारे गुरुदेव की आवाज को पकड़ रहा है, गायत्री माता की आवाज को पकड़ रहा है। तो गुरुजी आजकल तो पैसे की तंगी है, सूखा पड़ गया है, अकाल पड़ गया है, तूफान आ गया है, कैसे होगा यज्ञ? बेटे! हमने उस हिसाब से इन यज्ञों को रखा ही नहीं है। जो यज्ञ रखे हैं वे ऐसे हैं कि ज्यादा-से-ज्यादा स्थानों में हों और उनमें गरीब-से-गरीब लोग भी भाग लें। यह यज्ञ भलों में भी हों, अछूतों में भी हों-सब जगह हो जाएँ। इस यज्ञ में यह

बात रखी है कि गुड़ जो सब घरों में होता है, उस गुड़ में जरा-सा घी मिला दीजिए और उनकी बेर जैसी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लीजिए। यहाँ से हम अभिमंत्रित की हुई जो हवन सामग्री भेजेंगे, उसे उन सबके ऊपर जितनी भी गुड़ की गोलियाँ बनी हुई हैं, उनके ऊपर रख दीजिए और उनसे हवन कर लीजिए। गुरुजी! वेदियाँ कौन बनाएगा? हमको तो बनाना आता नहीं। जमीन पर चौरस वेदियाँ बनेंगी और उन्हीं पर हवन होगा। यज्ञशाला का सारा सामान हम अपनी जीप गाड़ियों में रखकर भेजेंगे, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। गुड़ और घी मिलाकर के मुश्किल से एक रुपए लागत आएगी और उसी से यज्ञ पूरा हो जाएगा। इसमें गरीब आदमी भी एक रुपया खरच कर सकता है। इसके लिए आप यह भी कर सकते हैं कि पाँच कुंडीय, नौ कुंडीय, इक्यावन कुंडीय यज्ञ के स्थान पर एक कुंडीय यज्ञ से काम चला सकते हैं। इसमें यह भी हो सकता है कि आप पाँच कन्याओं को पीले कपड़े पहनाकर भेज दीजिए। वे पाँच कन्याएँ आपके नुमाइंदे के रूप में, पाँच देवियों के रूप में, गायत्री के पाँच मुख के रूप में बैठ जाएँगी और वही हवन कर लेंगी। यह छोटा-सा हवन है। इसमें आपको कोई सामान इकट्ठा नहीं करना है, केवल गुड़ की एक डली और थोड़ा-सा घी लाएँ, जिससे बेर के बराबर गोलियाँ बन जाएँगी और उसी से हवन हो जाएगा। इसमें एक रुपये की लागत आएगी। इस तरीके से हम एक लाख स्थानों पर यज्ञ करेंगे और यह यज्ञ आपको कराने हैं।

इसके लिए आपको पाँच नई जगह बनानी हैं। आपको हम पाँच-पाँच गाँवों का सरपंच बना रहे हैं, पाँच-पाँच गाँव सुपुर्द कर रहे हैं। आप एक ही जगह पर नहीं रहेंगे, वरन पाँच जगहों पर काम करेंगे। इस मिशन को इस स्थान पर पाँच जगहों पर फैलाने की कोशिश करेंगे। आपके समीपवर्ती जो गाँव हैं, नगर हैं, उनमें एक-एक मिशन की शाखा स्थापित कीजिए। शाखा स्थापित करने में हमारे दो काम तो पहले से ही चल रहे हैं—एक यह कि एक माला

गायत्री का जप सबको करना चाहिए। गायत्री चालीसा का पाठ और एक माला का गायत्री जप, यह दोनों काम तो पहले से ही हमने आपके सुपुर्द कर दिए थे। अब इस नए वसंत पंचमी से दो काम और सुपुर्द करते हैं। पहला यह कि आपको नए स्थानों पर पाँच यज्ञ करने हैं। हमको नए स्थानों की जरूरत है। इस बार हमने ५१ कुंडीय या १०० कुंडीय यज्ञों को कराने की स्पष्ट मनाही कर दी है और कहा है कि अभी मात्र एक कुंड का यज्ञ होगा। उसी से हमारा संतोष होगा, सौ कुंडीय यज्ञों से नहीं। बड़े यज्ञों की आवश्यकता अभी नहीं बाद में होगी। तब हम बता देंगे। इससे न उद्देश्य की पूर्ति होगी, न लक्ष्य पूरा होगा और न एक लाख की संख्या पूरी होगी। इसलिए जो भी आप लोग हमारी आवाज को सुन रहे हैं, उन सबका काम एवं उद्देश्य है कि वे सभी अपने-अपने समीपवर्ती गाँवों में जाकर के यह देखें कि एक-एक कुंड का हवन कहाँ-कहाँ होना संभव है। यह बात नंबर एक हो गई।

बात नंबर दो यह है कि आपके पास एक प्रचार मंडली होनी चाहिए। प्रचार मंडली का अर्थ यह है कि अब हमने इसके लिए संगीत को माध्यम बनाया है। नारदजी के पास भी संगीत था, शंकर जी के पास भी संगीत था। सरस्वती के पास संगीत था, विष्णु के पास संगीत था। सबने संगीत के माध्यम से प्रचार किया था। हमको अब जो भी व्याख्यान करना है, संगीत के माध्यम से करेंगे, व्याख्यानों से नहीं। व्याख्यानों में वक्ता का प्राण काम नहीं करता, लेकिन संगीत हमारे बनाए हुए हैं, हमारे मिशन के बनाए हुए हैं और देव कन्याओं ने गाए हैं, उन्हीं संगीतों में यह प्रभाव होगा कि लोगों को हिला करके रख देंगे और उनके हृदय के भीतरी हिस्सों को छुएँगे। यह संगीत यहीं से जाएगा और व्याख्यान भी हमारा यहीं से जाएगा। एक-एक यज्ञ में हम अपना वीडियो बनाकर भेजेंगे। वीडियो उसे कहते हैं, जो आदमी की आवाज भी सुनाता है और शकल भी दिखाता है। वह हमारी और माताजी की शकल भी दिखाएगा और

आवाज भी सुनाएगा और देवकन्याओं का गीत भी सुनाएगा। कुँवारी कन्याओं की वाणी में ओजस्विता भी ज्यादा होती है और उसमें प्रभाव भी अच्छा होता है। उनका भी टेप भेजेंगे और अपना तथा माताजी का भी टेप भेजेंगे-जहाँ कहीं भी आप एक कुंड का हवन करेंगे। सामान्यतया हमने यह आशा की है कि आप पाँच कुंड का हवन करेंगे, पाँच नए स्थानों पर। हर एक जिम्मेदार आदमी को जिसको हमने शक्तिपीठें कहा है, समर्थ शाखा कहा है, उपशाखा और स्वाध्याय मंडल कहा है, उनमें से हर एक आदमी जो हमारा प्रज्ञा पुत्र है, जो हमसे घनिष्ट है, हम चाहते हैं कि वह सौ नए गाँवों में हमको बिठा दे। हजारों गाँव ऐसे हैं जो हमने देखे नहीं। सात लाख गाँव हैं हिंदुस्तान के जो अभी हमने देखे नहीं। शहरों में हम गए हैं, बड़े कस्बों में गए हैं, पर गाँवों में तो गए ही नहीं। इस बार गाँवों में जाने का हमारा मन है। यह प्रबंध आप कीजिए। अभी हम जो अपने आदमी आपके पास भेज रहे हैं, सिर्फ इस काम के लिए कि आप सब मिलकर के इस तरह का संकल्प लें और सब मिल-जुलकर काम करें। एक लाख कुंड का, एक लाख वेदियों का हवन हमें करना है, जिसमें हमारा भी व्याख्यान होगा, माताजी का भी व्याख्यान होगा और हमारे गुरु का संरक्षण भी होगा और लागत क्या है—एक रुपया। इस तरह का व्यापक स्तर पर आयोजन करने का हमारा मन है। इसके लिए आप जी-जान से कोशिश करें।

यह वर्ष समयदान का वर्ष है। हमने आप लोगों से समयदान माँगा है। लोगों ने कहा था कि हम गुरुजी की हीरक जयंती मनाएँगे। तो आप क्या करेंगे हीरक जयंती में ? हवन करेंगे, जुलूस निकालेंगे ? नहीं—जो हम कहें सो कीजिए और हमारा कहना यह है कि एक गाँव पीछे एक यज्ञ हो, एक कुंड का या पाँच कुंड का हो और उसमें पाँच कन्याएँ बैठें और उसी में हमारा वीडियो दिखाया जाए। इस तरह एक काम तो हमारा यही है—एक लाख यज्ञों को पूरा करना। हमारा यह संकल्प अधूरा नहीं रह जाए। बाकी संकल्प तो

हमारे अधूरे रहे नहीं हैं। चारों वेदों के भाष्य का संकल्प अधूरा नहीं रहा, हजार कुंडीय यज्ञ का अधूरा नहीं रहा-तब नहीं रहा जब हम वहाँ थे, पर इस समय हम नहीं हैं। इस समय हमारी जगह पर हैं आप, तब पाँच यज्ञों की जिम्मेदारी भी आप सँभालिए और उन यज्ञों को अपने समीपवर्ती गाँवों में कीजिए। वहाँ शाखा स्थापित कीजिए, ताकि हमारी शाखाएँ जितनी भी हों-पाँच गुनी अधिक बढ़ जाएँ। अभी २४०० शाखाएँ हैं। उसमें पाँच का गुणा कर दीजिए तो एक लाख से अधिक हो जाएँगी। कम-से-कम एक लाख स्थानों पर इस तरह गायत्री परिवार का प्रचार करने के लिए, शाखाएँ स्थापित करने के लिए हमारी इच्छा है और इसलिए आप हमारे काम में मदद कीजिए।

नंबर दो—इसके लिए प्रचारक मंडलियों की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि आप प्रत्येक घर में जा करके हमारा संदेश सुना सकें। इसके लिए आपको अपना तथा प्रत्येक प्रज्ञा पुत्र का, परिवार के हर सदस्य का जन्मदिन मनाना पड़ेगा। जन्मदिन मनाने में केवल एक कुंडीय हवन कर लेने भर से काम नहीं चलेगा, वरन कुछ धूम-धड़ाका भी होना चाहिए। इसके लिए संगीत प्रचारकों की जरूरत पड़ेगी। संगीत प्रचारकों के लिए आपको यह करना है कि यहाँ शांतिकुंज में जो युगशिल्पी सत्र चलते हैं, उसमें एक आदमी आप भेज दीजिए जो यहाँ से प्रशिक्षण लेकर जाने के बाद में वहाँ के लोगों को प्रवचन करना, हवन करना सिखा देगा, संगीत सिखा देगा। पहले भी युगशिल्पी सत्र में आ चुके हैं, लोग, पर तब संगीत पर इतना जोर नहीं दिया गया था। अब नए शिक्षण में हमारा ध्यान संगीत पर है। मध्यकालीन जितने भी संत हुए हैं, उनने संगीत के माध्यम से अपना प्रचार किया है। कबीर ने अपना प्रचार संगीत के माध्यम से किया था। मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु आदि ने संगीत के प्रचार से अपना काम किया था। मध्यकालीन सभी संतों ने वाणी के व्याख्यान द्वारा नहीं, बल्कि संगीत के द्वारा प्रचार किया था। तो

आपके यहाँ से भी एक मंडली ऐसी होनी चाहिए जो यहाँ से संगीत सीखकर के जाए। इसका नाम हमने 'वक्ता विश्वविद्यालय' रखा है। संगीत और यज्ञ कराना हम सिखा देंगे। इसके लिए आप लोग अपने-अपने यहाँ से एक-एक आदमी ऐसा भेजिए जो जीवंत हो, जिसमें जान हो, जिसको हम आपके क्षेत्र का अध्यापक बनाकर भेज सकें। मंडली आपको तैयार करनी है, प्रचार आपको करना है, मिशन के विचार आपको फैलाने हैं। इसके लिए गाँव में जन्मदिन के समय तथा त्यौहारों के अवसर पर मीटिंग बुला लीजिए, काम के लोगों को बुला लीजिए। अबकी बार जो भी यज्ञ होंगे, उसमें हमने यह इंतजाम किया है कि ढाई सौ से ज्यादा आदमी न आएँ, क्योंकि हम जो वीडियो भेजेंगे उसमें दो सौ-ढाई सौ आदमी ही आ सकेंगे।

एक बात और जो करनी है, वह यह कि अब हमारा विश्वविद्यालय चलने वाला है। इसमें हम एक लाख व्यक्तियों को पढ़ाने वाले हैं, लेकिन हमारे इस मिशन के लिए हर एक आदमी को शांतिकुंज आना तो मुश्किल है। अतः वह एक नया प्रशिक्षित अध्यापक जो यहाँ से जाएगा, वही अपने स्थानीय लोगों को बुलाकर के वही शिक्षण देगा जो हम यहाँ युगशिल्पी सत्र में बुलाकर देते हैं। इस तरीके से देश भर में जितनी भी शाखाएँ हैं यदि उनमें से दस-दस आदमी भी आ जाएँ तो एक लाख आदमी हो जाते हैं। इस तरह के अब तक जितने भी विश्वविद्यालय चले हैं उनमें से किसी में भी एक लाख विद्यार्थी नहीं थे। न किसी आंदोलन में एक लाख व्यक्ति शामिल हुए। घुमा-फिराकर वही चले जाते थे, इसलिए उनके नाम और संख्याएँ बढ़ जाती थीं, लेकिन लाख व्यक्ति कभी नहीं रहे। हमारा मन है कि एक लाख व्यक्तियों को हम पढ़ाकर जाएँ, जिससे वे यों कहें कि गुरुजी ने हमको पढ़ाया था। गुरुजी के हाथ का सर्टिफिकेट हमारे पास है। जो भी आदमी यहाँ युगशिल्पी सत्र में आएँगे हम सर्टिफिकेट देंगे कि तुमको अध्यापक नियुक्त किया है। इस तरह से एक लाख अध्यापक नियुक्त करने का

हमारा संकल्प है। आप लोग इन दो कामों में हमारी मदद करेंगे। अब शांतिकुंज से हम अपने आदमी इसलिए भेज रहे हैं कि जो भी जीवंत आदमी हैं, प्राणवान हैं, वे इस बात का संकल्प लें कि हीरक जयंती वर्ष में इस कार्य को हम करेंगे ही। जो भी काम आप करें, उसका पानी लेकर संकल्प कर दीजिए, वह संकल्प हमारे पास आ जाएगा और तब समाधान होगा।

दो-तीन काम और हैं जो आपको करने हैं। हरीतिमा संवर्द्धन के लिए जो आपको करने हैं। हरीतिमा संवर्द्धन के लिए कुछ पेड़ भी लगाए जाने चाहिए। जड़ी-बूटी औषधालय हमारे यहाँ है, हम चाहते हैं कि वह भी आपके यहाँ हो जाए। अभी जो हवन सामग्री बाहर से मँगाते हैं, उसके पेड़-पौधे आप अपने खेतों में खुद पैदा कर लें और उसी को कूट-पीसकर प्रयुक्त कर लिया करें। इस तरह के कई काम हैं जो आप कर सकते हैं। आपके पास कमरे हों तो छोटे बच्चों के स्कूल चला सकते हैं। जगह न हो तो आप किराए पर ले लीजिए। किसी से एक कमरा माँग लीजिए और कह दीजिए कि जितने समय तक हमारे काम आएगा, उतने समय तक मिशन का है, शेष सारे समय आपका है, चाहे जैसा उपयोग कीजिए। या फिर कोई धर्मशाला में एक कमरा ले लीजिए। कोई मंदिर टूटा-फूटा हो उसकी मरम्मत करा लीजिए तो उसका जीर्णोद्धार भी हो जाएगा। अब तक २४०० शक्तिपीठें बनाई हैं, जिनमें से किसी-किसी में लाखों रुपए लगे हैं। वे हैं तो सही, पर उन्हें अपने स्थान पर रहने दीजिए। अब कुछ ऐसी नई शक्तिपीठें भी हो सकती हैं, जो छप्पर की छाई हुई हों, जिन्हें हर साल नए सिरे से बदल दिया जाए। कुछ ऐसी भी शक्तिपीठें हो सकती हैं, जो खपरैल से छाई गई हों, जिन्हें बरसात में ठीक कर लें और उसी से काम चला लिया करें। जब जरूरत हो तो उसी में बच्चों के संस्कार कर लें, जन्मदिन मना लें, उसी में अपनी पाठशाला चला लें। या कहीं किसी का एक कमरा माँग लें, इसके

लिए हम आपको यकीन दिलाते हैं कि अच्छे उद्देश्यों के लिए वह आपको मिल जाएगा।

इन सब कार्यों के लिए हम अपने कार्यकर्ता भेज रहे हैं कि आप सब वहाँ इकट्ठा होकर यह विचार करें कि गुरुजी ने नए वर्ष के लिए जो संकल्प लिए हैं, उस संकल्प के कई उद्देश्य हैं। उसमें से एक तो यह है कि इन दिनों का जो वातावरण है उसमें प्रलय होने जैसी दुर्घटनाएँ होना संभव है। दूसरा यह है कि इन बीस सालों में आप लोग किसी मुसीबत में फँस सकते हैं। आपको तो दिखाई नहीं पड़ता, परंतु मुझे दिखाई पड़ता है कि आप किसी मुकदमे में पड़ सकते हैं या कोई और बात हो सकती है। कोई अकाल की चपेट में आ सकते हैं या कोई और कठिनाई उठा सकते हैं, जिन्हें देखना हमारा काम है और इसीलिए हम यह आयोजन कर रहे हैं। यह आयोजन हम इसलिए भी कर रहे हैं कि सारे संसार में जो दुर्घटनाएँ घट रही हैं—चाहे वह ईरान-ईराक का युद्ध हो, फिलिस्तीन और इस्रायल का युद्ध हो या अमेरिका की नक्षत्र युद्ध योजना हो या परमाणु युद्ध की विभिषिका। हमने पचास फीसदी अपनी शक्ति ऐसे कामों के लिए सुरक्षित रखी है कि जिससे इस वातावरण को शुद्ध करने में और जो आदमी इस तरह की बातें करने के लिए तुले हुए बैठे हैं, आमादा बैठे हैं और जिन्होंने अरबों-खरबों डालर खरच करके वह साधन बनाए हैं, उनकी भी हम रोकथाम करेंगे। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए, संसार में शांति स्थापित करने के लिए और आप लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं के लिए इन तीनों उद्देश्यों के लिए यह कार्यक्रम हमने बनाए हैं। हम आशा करते हैं कि आप सब मिलकर संकल्प लेंगे कि यह काम गुरुजी का तो हम कर ही डालेंगे।

मित्रो! हम चाहते हैं कि जो वजनदार काम हमारे गुरुजी ने हमारे जिम्मे सौंपा है, उस वजनदार काम को पूरा करने में हम समर्थ हो सकें। समर्थ बनने के लिए 'बैकिंग शक्ति' भी होनी

चाहिए और वह 'बैकिंग शक्ति' आप होंगे। हमारी पीठ पीछे वाली शक्ति आप होंगे। इसलिए इस वर्ष के सौंपे हुए जो काम हैं, उनको आप किस सीमा तक पूरा कर सकेंगे और किसी सीमा तक पूरा नहीं कर सकेंगे, यह ध्यान रखना है। हमने हर वर्ष वसंत पंचमी पर संकल्प लिए हैं। अबकी बार हम आपसे संकल्प करने के लिए कहते हैं कि आप क्या करेंगे और अगले वर्ष आपका कार्यक्रम क्या होगा? बस, यही हमारा उद्देश्य था। इसी के लिए हमने आपको बुलाया था। अब जो यज्ञ होंगे उनमें आप लोगों को एकत्रित होकर के सामूहिक रूप से संकल्प लेने की उम्मीद और अपेक्षा कर रहे हैं। बस यही कहना था आप लोगों से।

ॐ शांतिः।

(वसंत पर्व २०४२, फरवरी १९८६)

हमने जीवन भर बोया एवं काटा

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

भाइयो, लगभग साठ वर्ष हो गए जब हमारे गुरुदेव घर पर आए थे और उन्होंने कई बातें बताईं। शुरू में तो डर जैसा कुछ लगा, पर पीछे मालूम पड़ा कि वे पिछले तीन जन्मों से हमारे साथ रहे हैं, तब भय दूर हो गया और बातचीत शुरू हो गई। उन्होंने कहा—अपनी पात्रता को विकसित करने के लिए तुम्हें चौबीस लक्ष के चौबीस साल तक चौबीस पुरश्चरण करने चाहिए। मैंने उनकी वह आज्ञा शिरोधार्य की और सब नियम, विधि वगैरह मालूम कर लिया कि किस प्रकार जौ की रोटी और छाछ पर रह करके चौबीस पुरश्चरण पूरे करने पड़ेंगे। यह पूरी जानकारी देने के बाद उन्होंने एक और बात कही जो बड़ी महत्त्वपूर्ण है। आज उसी के बारे में मैं आपको बताऊँगा।

उन्होंने कहा—गायत्री मंत्र कइयों ने जपे हैं, कई लोग उपासना करते हैं, लेकिन ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ किसी के पास नहीं आतीं। जप कर लेते हैं और लोगों से बता देते हैं कि हमने गायत्री का जप कर लिया है, लेकिन न ऋद्धि, न सिद्धि। हम तो तुम्हें इस तरह की गायत्री बताना चाहते हैं जिसमें ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ भी मिलें और इस जप से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने का लाभ भी मिले। हमने कहा—यह तो बड़े सौभाग्य की बात है। आप इतनी अच्छी बात बताएँगे। इससे अधिक अच्छा और सौभाग्य हमारे लिए क्या हो सकता है? तब उन्होंने गायत्री के २४ पुरश्चरणों की विधि बताने के बाद में एक और नई बात बताई—'बोना और काटना।' उन्होंने कहा—तुम्हारे पास जो कुछ भी चीज है उसे भगवान के खेत में बोना शुरू करो, वह सौ गुना होकर फिर मिल जाएगा। ऋद्धि और सिद्धि का तरीका यही है, वे फोकट में कहीं नहीं मिलतीं। दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ बाँट रहा हो या कुछ कहीं से मिल रहा हो। इस तरह का कोई नियम नहीं है। बोने पर ही किसान काटता है। ठीक इसी तरीके से तुमको भी बोना और काटना पड़ेगा। कैसे? बताइए, सब बातें। उन्होंने कहा—देखो, शरीर तुम्हारे पास है। शरीर माने श्रम और समय। इन्हें भगवान के खेत में बोओ। कौन-सा भगवान? यह विराट भगवान जो चारों ओर समाज के रूप में विद्यमान है। इसके लिए तुम अपने श्रम, समय और शरीर को खरच कर डालो, वह सौ गुना होकर तुमको सब मिल जाएगा। नंबर एक।

नंबर दो—बुद्धि तुम्हारे पास है। भगवान की दी हुई संपदाओं में अकल तुम्हारे पास है। इससे बजाय इस-उस बात का चिंतन करने, अहंकार का चिंतन करने, वासनाओं का चिंतन करने, बेकार की बातों का चिंतन करने की अपेक्षा अपने चिंतन करने की जो सामर्थ्य है, उस सारी-की-सारी सामर्थ्य को भगवान के निमित्त

लगा दो। उनकी खेती में बोओ, यह तुम्हारी बुद्धि सौ गुनी होकर तुमको मिल जाएगी।

तीसरी चीज है—भावनाएँ। मनुष्य के तीन शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इसमें से स्थूल शरीर से श्रम होता है, सूक्ष्म शरीर में बुद्धि होती है और कारण शरीर में भावनाएँ होती हैं। भावनाएँ भी तुम्हारे पास हैं, इन्हें अपने घरेलू आदमियों के साथ खरच कर डालने के बजाय भगवान का जो सारा खेत है, उद्यान है, उसमें बोओ और यह भावनाएँ तुम्हें सौ गुनी होकर के मिलेंगी। यह तीन चीजें—शरीर, बुद्धि और भावनाएँ भगवान ने दिए हैं, किसी आदमी ने नहीं। एक और चीज है जो तुम्हारी कमाई हुई है, भले ही वह इस जन्म में कमाया हो या पिछले जन्म में। वह है—धन। धन भगवान किसी को नहीं देता। मनुष्य चाहे ईमानदारी से कमा ले या बेईमानी से कमा ले या मत कमाए, भगवान को इससे कोई लेना-देना नहीं है। धन जो तुम्हें मिला है—शायद तुम्हारा कमाया हुआ नहीं है। मैंने कहा—मेरा कमाया हुआ कहाँ से हो सकता है? १४-१५ वर्ष का बच्चा कहाँ से धन कमाकर लाएगा। अच्छा पिताजी का दिया हुआ धन है। इस सारे-के-सारे धन को भगवान के खेत में बो दो और वह सौ गुना होकर के मिल जाएगा। बस मैंने गाँठ बाँध ली और ६० वर्ष से बँधी हुई वह गाँठ मेरे पास ज्यों-की-त्यों चली आ रही है। गायत्री उपासना के जब २४ साल से भी अधिक हो गए, उसके बाद भी बोने और काटने का यह सिलसिला बराबर चलता रहा। आप लोग भी अगर बोएँ, तो आप भी सिद्धियाँ पाएँगे, ऋद्धियाँ पाएँगे, जैसे कि मैंने पा लीं। भगवान के नियम सबके लिए समान हैं। सूरज के लिए सब आदमी एक समान हैं। जो नियम हमारे ऊपर लागू हुए हैं, वही आपके ऊपर भी लागू हो सकते हैं। आप भी ऋद्धि-सिद्धियों से सराबोर हो सकते हैं। यह चारों चीज मेरे गुरु ने मुझे बताई थीं और मैं आप से निवेदन कर रहा हूँ। इन चारों चीजों को अगर आप बोना शुरू करें तो वह

सौ गुनी होकर के आपको मिलेंगी। मुझे तो मिल गया है और मैं अपनी गवाही देकर, साक्षी देकर आप में से हर एक आदमी को बताना चाहता हूँ कि जो बोएँगे, वे काटेंगे और किसान के तरीके से फायदे में रहेंगे।

भगवान को आप क्या समझते हैं कि वे बाँटते फिरते हैं? बाँटते तो हैं, पर उससे पहले वे माँगते फिरते हैं। भगवान की इच्छा माँगने की है। भगवान शबरी के दरवाजे पर गए थे और उससे कहा था कि हम तो भूखे हैं, कुछ हो तो खाने को ले आओ। शबरी के पास बेर थे सो उन्होंने ला करके दे दिए और कहा—हमारे पास यही है, आप खा लीजिए। केवट के पास भगवान गए थे और कहा था—भाई साहब! हमको तैरना नहीं आता, मेहरबानी करके हमको, लक्ष्मण और सीताजी को पार निकाल दीजिए। केवट ने निकाल दिया। भगवान माँगते फिरते हैं। वे सुग्रीव के पास भी गए थे और कहा था कि हमारी सीताजी को कोई चुराकर ले गया है, उनका पता लगाने के लिए आप अपनी सेना हमको दे दें और ऐसा कुछ इंतजाम कर दें, जिससे हमारी धर्मपत्नी लिए जाए, तो बड़ी मेहरबानी होगी। सुग्रीव ने वही किया, अपना सर्वस्व दे दिया उनको। हनुमान जी का भी यही हुआ। हनुमान जी से भी वे माँगते फिरे कि हमारा भाई बीमार हो गया है, घायल हो गया है, उसके लिए आप दवा ले आइए। सीता जी को संदेश पहुँचा दीजिए, लंका से उनकी खबर ले आइए। राजा बलि की कहानी मालूम है आपको। वे बलि के पास गए थे और कहा था कि जो कुछ भी तुम्हारे पास है हमको दे दो। बलि ने कहा—क्या है हमारे पास? तब उन्होंने कहा था कि तुम्हारे पास जमीन है, उसमें से साढ़े तीन कदम हमको दे दो। नाप लिया भगवान ने और जो कुछ भी माल-टाल था सारा छीन लिया।

गोपियों से बड़ी मोहब्बत थी उनकी। उनसे कहा—तुम्हारा दही और मक्खन कहाँ रखा है? गोपियाँ समझती थीं कि वे भगवान

हैं, तो सोने-चाँदी के जेवर लाए होंगे, कोई उपहार लाए होंगे, पर वे तो कुछ नही लाए। उलटे, उन्होंने जो कुछ भी मक्खन तथा दही जमा किया हुआ था, वह भी छीन लिया। कर्ण जब घायल पड़े हुए थे, तब अर्जुन को लेकर भगवान उनके पास मैदान में जा पहुँचे और कहा—अरे कर्ण! हमने सुना है तुम्हारे दरवाजे पर से कोई खाली हाथ नहीं जाता। हम तो कुछ माँगने आए थे, पर तुम कुछ देने की हालत में मालूम नहीं देते। कर्ण ने कहा—नहीं महाराज! ऐसा मत कीजिए, खाली हाथ मत जाइए। मेरे दाँतों में सोना लगा हुआ है, जिसे उखाड़कर मैं अभी देता हूँ आपको। उन्होंने एक पत्थर का टुकड़ा लिया और दोनों दाँत तोड़ करके एक अर्जुन के हाथ पर रखा और एक कृष्ण के। इसी तरह सुदामा जी की कहानी है। सुदामा जी की पत्नी ने उनको इसलिए भेजा था कि कृष्ण उनके मित्र हैं और वे उनसे कुछ माँगकर ले आएँ तो गुजारा चले। सुदामा जी गए तो इसी ख्याल से थे, लेकिन भगवान ने उनसे पूछा कि लाए हो या कुछ माँगने आए हो। हमारे दरवाजे पर माँगने वाले तो भिखारी आते हैं, पर तुम लाए क्या हो? पहले यह बताओ। देखा सुदामा जी के बगल में चावल की पोटली दबी थी। उस पोटली को भगवान ने उनसे माँग लिया और उस चावल को स्वयं खाया तथा अपने परिवार को खिलाया। जो कुछ भी सुदामा जी के पास था सब खाली कर दिया। बाद में उन्हें कुछ दिया होगा जरूर। गोपियों को भी दिया होगा, कर्ण को भी दिया होगा, बलि को भी दिया होगा। हनुमान, केवट, सुग्रीव सभी को दिया होगा, पर सबसे पहले उन्होंने लिया था।

भगवान जब कभी आते हैं, तब माँगते हुए आते हैं। भगवान के साक्षात्कार जब कभी आपको होंगे, तब यही मानकर चलना कि वह आपसे माँगते हुए आएँगे। संत नामदेव के पास भगवान कुत्ता का रूप बनकर गए थे और सूखी रोटी लेकर के भागे थे, तब नामदेव ने कहा था—घी और लेते जाइए। देने के लिए उन्होंने

अपना कलेजा चौड़ा किया। मेरे गुरु ने मुझसे यही कहा था। उसी वक्त से मैंने बात गिरह बाँध ली और लगातार जिंदगी के इन ६० वर्षों में देता ही चला आया हूँ, जो कुछ भी संभव हुआ है। देने में कोई नुकसान नहीं है। अगर अच्छी जगह बोया जाए, तब लाभ ही लाभ है, लेकिन कहीं खराब जगह पर, पत्थर पर बो दिया गया तब मुश्किल है। अच्छा खेत भगवान का खेत है, उसमें बोने से ज्यादा होकर मिलेगा। आपने देखा होगा कि बादल समुद्र से लेते हैं और वर्षा कर जाते हैं, पर क्या वे खाली रह जाते हैं? नहीं, समुद्र उन्हें दुबारा देता है। शरीर का चक्र भी इसी तरह का है। हाथ कमाता है और मुँह को दे देता है और मुँह पेट में पहुँचा देता है और वह खून बन जाता है। एक हाथ खाली रहा है क्या? नहीं हाथ के पास फिर दुबारा माँस के रूप में, रक्त के रूप में, हड्डियों के रूप में, स्फूर्ति के रूप में वह ताकत आ जाती है, जो उसने कमाई थी। दुनिया का एक चक्र है। हम किसी को जो कुछ देते हैं वह घूम-फिरकर हमारे पास फिर से आ जाता है। वृक्ष अपने फल, फूल, पत्ते सभी कुछ बाँटता रहता है और भगवान उसको दुबारा देते रहते हैं। भेड़ अपनी ऊन बाँटती रहती है। काटने के थोड़े दिन बाद ही शरीर पर ज्यों-की-त्यों दुबारा ऊन आ जाती है।

देना बहुत शानदार चीज है, हमारे गुरु ने यही बात सिखाई थी। तो आपको कुछ मिला क्या? यही तो मैं बताना चाहता हूँ कि मुझे मिला है और अगर आप हमारी बात पर विश्वास कर सकते हों तो अपने बारे में भी यह ख्याल कर सकते हैं कि आपको भी मिलेगा, आप भी खाली हाथ रहने वाले नहीं हैं। इस बात का हमने बराबर ध्यान दिया है। रात के वक्त भगवान का नाम लिया होगा और दिन के वक्त सूरज निकलने से लेकर के सूरज डूबने तक हमने सिर्फ भगवान की सेवाएँ की हैं। नाम जब कभी हमने लिया होग, तब रात के वक्त लिया होगा और दिन समाज के रूप में फैले हुए भगवान के लिए खर्च करते रहे। हमारी ७५ साल की उम्र होने

को आई। इस उम्र में ढेरों-के-ढेरों आदमी मर जाते हैं और जो जिंदा भी रहते हैं वे किसी काम के नहीं रहते। ६० वर्ष के बाद प्राय: आदमी नकारा हो जाता है, पर हमारे काम करने की ताकत ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। हमारा शरीर लोहे का है। लोहे का क्यों है? इसलिए कि हमने अपने शरीर को भगवान के काम में लगा दिया है। हमारा शरीर बहुत ठीक है और अगर आप भी अपने शरीर को समाज के लिए खरच करना शुरू करें तो ठीक रहेंगे। गांधी, जवाहर, विनोबा—तीनों ८० वर्ष के होकर मरे थे। यकीन रखिए अगर आप भी अपने शरीर को भगवान के खेत में बोना शुरू करें, तो आपके लिए बहुत फायदेमंद वाली बात होगी। यह शरीर की बात हुई।

नंबर दो—अपनी बुद्धि को हमने भगवान के खेत में बोया। बुद्धि हमारे दिमाग में रहती है। कहाँ तक पढ़े हैं आप? हमारे गाँव में प्राइमरी स्कूल है। उस जमाने में दरजा चार तक प्राइमरी होते थे, अब तो पाँचवीं तक होते हैं। वहीं तक हम पढ़े, इसके बाद फिर कभी मौका नहीं मिला। जेल में लोहे के तसले के ऊपर कंकड़ों से अंगरेजी पढ़ना शुरू किया, संस्कृत पढ़ना शुरू किया, अमुक भाषा शुरू किया, तमुक शुरू किया। हमारी बुद्धि बहुत पैनी है। आपने देखा नहीं—चारों वेदों के भाष्य हमने किए। १८ पुराण, ६ दर्शन आदि सभी के भाष्य किए। व्यासजी ने एक महाभारत लिखा था और गणेश जी को मददगार बनाकर ले गए थे। हमारा तो कोई मददगार भी नहीं है। अकेले ये हमारे हाथ ही मददगार हैं। हमने इतना साहित्य लिखा है, जो सामान्य नहीं असामान्य बात है। हम प्लानिंग करते हैं। कोई आदमी अपनी खेती का, घर का प्लानिंग करता है और हम सारी दुनिया को, सारे विश्व को नए सिरे से बनाने की प्लानिंग करते हैं। भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाएँ बनती हैं, जिसके लिए कितना बड़ा स्टाफ, कितने मिनिस्टर और कौन-कौन लोग काम करते हैं, लेकिन हम

तो सारी दुनिया का नया-नक्शा बनाने के लिए इसी अकल से काम कर लेते हैं। अपनी अकल की हम जितनी प्रशंसा करें उतनी ही कम है।

अकल के अलावा हमने अपनी भावनाओं को भी भगवान को दे दिया। जो भी कोई आदमी हमारे नजदीक आया होगा, तो हमारे मन में उसके प्रति दो ही बातें रही हैं कि हम अपने सुख को बाँट दें और उसके दुःखों को बँटा लें। यदि हम बँटा सकते होंगे, तो हमने जी जान से कोशिश की है। अगर हमारे पास कोई सुख होगा, तो हमने बाँटने के लिए बराबर कोशिश की है, क्योंकि हमारी भावनाएँ हमको मजबूर करती हैं। वे कहती हैं कि तुम्हारे पास है और जिनको जरूरत है उनको दोगे नहीं, तो हम कहते हैं कि जरूर देंगे। जो मुसीबत में है और कहते हैं कि हमारी मुसीबत में हिस्सा नहीं बटाएँगे क्या? तब हम कहते हैं कि आपकी मुसीबत में हम जरूर हिस्सा बटाएँगे। हमारी भावनाएँ इसी तरह की हैं। भावनाएँ-जिन्हें संवेदना कहते हैं, प्यार कहते हैं, उनको हमने बोया है। फलतः सारी दुनिया हमको बेहद प्यार करती है। हमने प्यार दिया है, प्यार बोया है, इसलिए प्यार पाया है।

भगवान की चीजों को हमने अमानत के तरीके से रखा और उन्हीं के खेत में बोकर उनकी ही दुनिया के लिए खरच कर डाला। हमारे पास पिता जी का कमाया हुआ जो भी था, हमने सब उसी के लिए खरच कर दिया। हमारे पास जो भी जमीन थी, जेवर थे—सब बेचकर के गायत्री तपोभूमि को बनाने में, भगवान का घर बनाने में खरच कर दिया। जो पैसा पिताजी ने छोड़ा हुआ था, एक-एक पाई खरच कर डाला। हमने किसी का दिया हुआ धन खाया नहीं। तो आप नुकसान में रहे होंगे? आप नुकसान की बात करते हैं। कभी आप हमारे गाँव जाइए, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, अखण्ड ज्योति कार्यालय देखिए। आप यहाँ आइए, शांतिकुंज, गायत्री नगर देखिए, ब्रह्मवर्चस देखिए, कितने शानदार हैं। २४०० गायत्री शक्तिपीठों को

देखिए। इतनी तो बिल्डिंगें हैं और जो उनमें लोग रहते हैं, उन पर जो रुपया खरच होता है, वह कहाँ से आता है ? जाने कहाँ से आता है कि धन हमारे लिए कम नहीं पड़ता। भगवान की तरफ हम इशारा कर देते हैं और वह हमारे लिए जिन भी वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह बस ज्यों-की-त्यों भेज देता है। यह क्या हो गया? यह सिद्धियाँ हो गईं। सिद्धियों में हम चार चीजें शुमार करते हैं, (१) धन, (२) लोगों का प्यार, (३) बुद्धि और (४) शारीरिक स्वास्थ्य, हमारे पास सिद्धियाँ हैं। गायत्री का जप करने से किसी के पास सिद्धियाँ आई हों या नहीं, यह मालूम नहीं, लेकिन हमको जरूर मिली हैं। इन चारों चीजों की कोई भी परीक्षा ले सकता है।

एक और चीज है—ऋद्धि। ऋद्धियाँ वह होती हैं, जो दिखाई नहीं पड़तीं। ऋद्धियाँ तीन हैं और सिद्धियाँ चार। पहली ऋद्धि है—आत्मसंतोष,। हमारे भीतर इतना संतोष है, जितना कि न किसी राजा को होगा, न बिड़ला जी को और न किसी मालदार को। उन्हें नींद नहीं आती है, पर हमको ऐसी नींद आती है कि ढोल बजते रहें, नगाड़े बजते रहें और हम ऐसे सो जाते हैं बिलकुल निश्चिंत मानो दुनिया की कोई समस्या ही हमारे सामने नहीं है। आत्मसंतोष के अलावा दूसरी ऋद्धि है—लोक सम्मान और जन सहयोग। हमें लोगों का सम्मान ही नहीं उनका सहयोग भी मिला है। माला पहना देना ही सम्मान करना नहीं है, वरन जनता जिसका सहयोग कर रही हो तो मान लीजिए यह उस आदमी को सम्मान मिला है। माला तो खरीदी भी जा सकती है, लेकिन सम्मान उसमें होता है जिसमें जन सहयोग मिलता है। गांधी जी का सहयोग किया था लोगों ने। बिनोवा का सम्मान किया था, तो सहयोग भी दिया था। ढेरों-की-ढेरों जमीनें उनको दान में दे दी थीं। गांधी जी के एक इशारे पर लोग जेल जाने के लिए और फाँसी के तख्तों पर झूलने के लिए, गोलियाँ खाने के लिए चले गए थे। यह उनका

सम्मान था और सहयोग था। सम्मान कहते हैं—सहयोग को। हमारा भगवान हमारे लिए बहुत सहयोग करता है। जनता हमको बहुत सहयोग करती है।

तीसरी ऋद्धि है—दैवी अनुग्रह। दैवी अनुग्रह किसे कहते हैं? आपने रामायण में कई प्रसंग पढ़े होंगे कि जब देवता प्रसन्न होते हैं तब फूल बरसाते हैं और कुछ नहीं बरसाते। कई बार अमुक पर फूल बरसाए, तमुक पर फूल बरसाए, यह क्या है? भगवान की बिना माँगे की सहायता है। बिना माँगे की अकल, बिना माँगे के इशारे, बिना माँगे का सहयोग फूलों के तरीके से बरसते रहे हैं हमारे ऊपर। अगर ऐसा न हो तो न जाने अब तक हमारा क्या हो गया होता? समय-समय पर जो रास्ते उसने बताए हैं, ऐसे शानदार रास्ते बताए हैं कि उन पर हम चलते गए और वह हमारे ऊपर फूल बरसाते रहे। हमको हमारे पिता की संपत्ति का अधिकार मिला है, कर्तव्य और अधिकार दोनों का जोड़ा मिला हुआ है। भगवान ने हमको अपना बच्चा माना है, बेटा माना है और अधिकार दिया है कि उसको नेक काम में खरच कर डालना। हमने उसे पिताजी के ही काम में सब खरच कर डाला, अपने लिए कुछ नहीं रखा, इसलिए कि पिताजी का वंश, पिताजी का कुल कलंकित न होने पाए। पिताजी माने भगवान-परमेश्वर। परमेश्वर का भक्त कहलाने के कारण हमारे ऊपर कोई यह अँगुली न उठाने पाए कि यह कैसा आदमी है? हमने उनके वंश को सुरक्षित रखा है।

भगवान ने हमको दिया तो है, पर हमने भी कुछ दिया है। पिता की मृत्यु हो जाती है और उनका कुटुंब रह जाता है। भाई, बहन, बच्चे-कच्चे, स्त्री सभी का पालन वह करता है, जो परिवार में बड़ा होता है। अपने पिताजी के वरिष्ठ का ही नहीं, वरन उनका जो इतना बड़ा विराट कुटुंब फैला हुआ है—इन सबका पालन करने में, उनकी निगरानी करने में, उनकी देखभाल करने में जो कुछ भी

हमारे लिए संभव हुआ, हमने ईमानदारी से किया है। हमने बराबर भगवान के कुटुंब का पालन किया है। अपना ही पेट नहीं, वरन भगवान के कुटुंब का भी पालन किया है। भगवान की दुकान, भगवान का व्यवसाय-उद्योग अच्छे तरीके से चलता रहे, कोई यह न कहने पाए कि बाप इनके लिए खेत छोड़कर मरा था, कारखाना, फैक्ट्री छोड़कर मरा था और इन्होंने सब बिगाड़ डाला। व्यवसाय भगवान का, दुकान भगवान की, आप तो समझते ही नहीं, यह सारा व्यवसाय तो उसी का है। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, सब उसी का उद्योग है। उसको ठीक तरह से, बढ़िया ढंग से चलाने में हमने ईमानदारी से पूरी-पूरी कोशिश की है। पिता की संपदा लेकर, उनका अधिकार लेकर के हम चुपचाप बैठ नहीं गए बल्कि अपने फर्ज और कर्तव्य का भी पालन किया है। पिता जी का व्यवसाय चलाने में, उनके परिवार का पालन करने में, उनके कुल और वंश की सुरक्षा रखने में हमने बराबर काम किया है। आप भी यह कीजिए और निहाल हो जाइए। रास्ता एक ही है। जो कानून हमारे ऊपर लागू होता है, वही कानून आपके ऊपर भी लागू होता है। सबके लिए एक कानून, एक कायदा है। भगवान न हमारे साथ रियायत करने वाले हैं, न आपके साथ में उनका कोई बैर-विरोध है। तरीके वही हैं, जो हमारे जीवन में बताए गए। हमारे गुरु ने हमको तरीका बताया था और हमने स्वीकार कर लिया। हम अपने गुरु को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं और आपको सिखाते-बताते-समझाते हैं कि आप भी उसी रास्ते पर चलिए, जिस रास्ते पर हम चले हैं तो आप भी निहाल हो जाएँगे और धन्य हो जाएँगे और क्या कहें आपसे।

ॐ शांतिः।

(१० जून १९८५)

अध्यात्म एक परखा हुआ विज्ञान

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! अध्यात्म एक विज्ञान है। इसका सही अर्थ और मर्म न समझ पाने के कारण ही इस क्षेत्र में अंधविश्वास पनपा है। नई पीढ़ी के लोग कहते हैं कि यह अंधविश्वास है। इसके पीछे वे तर्क देते हैं कि जो कर्मकांड लिखे हुए हैं, उसको जब हम करते हैं, तो जो उसके परिणाम और फल बताए गए हैं, वे नहीं मिलते, तो उनके कहने के मुताबिक यह अंधविश्वास सही है? और जो विश्वासी हैं, वे कहते हैं कि ऋषियों को, शास्त्रकारों को, आप्त पुरुषों को जिन्होंने अध्यात्म के विधि-विधानों के ऊपर इतना जोर देकर कहा है, तो उनको झूठ बोलने से क्या फायदा? इसके पीछे कोई-न-कोई सचाई तो होनी ही चाहिए। अध्यात्म विज्ञान है अथवा अंधविश्वास है, यह तलाश करने के लिए हमने अपनी पूरी-की-पूरी जिंदगी इस काम के लिए खरच कर डाली और अब हम जिस नतीजे पर पहुँचे हैं, उस नतीजे को आप लोगों को सुनाने का हमारा मन है।

लोहा जब खदानों से निकलता है, तब आपने देखा होगा, कच्चा निकलता है, मिट्टी मिला हुआ होता है। धातुएँ जब जमीन में से निकलती हैं, तब सभी कच्ची होती हैं। उनमें मिट्टी का सम्मिश्रण होता है। आग पर तपाने के बाद में उनका वास्तविक स्वरूप निकलता है। मिट्टी गल जाती है और लोहा, सोना तथा दूसरी धातुएँ निकल आती हैं। तेल के बारे में भी यही बात है। कोयला जो होता है, उसे भी साफ करना पड़ता है। हर चीज को साफ करना पड़ता है। जो व्यक्ति अध्यात्म का प्रयोग करता है, अगर अपनी सफाई का भी ध्यान रखता है, तो जानना चाहिए कि

उसको परिणाम मिलेगा और अगर उसने सफाई का ध्यान नहीं रखा, अपने आपका संशोधन नहीं किया है, उसको ठीक तरीके से काम में लाने की स्थिति में नहीं है, तो फिर मान लीजिए कि वह कर्मकांड केवल अंधविश्वास है। अंधविश्वास से क्या काम निकलने वाला है? इसलिए साधक को अपने जीवन में जीवन का परिष्कार करना पड़ता है। पात्रता का विकास करना पड़ता है। पात्रता का विकास न करे, जीवन का संशोधन न करे तो उसका वह लाभ जो मिलना चाहिए नहीं मिलेगा। तब फिर अंधविश्वास कहलाने वाली बात सही है और अगर आदमी उसके समग्र स्वरूप को समझता है और संयम, स्वरूप की कीमत चुकाने के लिए तैयार है तो फिर मैं समझता हूँ कि इसको विज्ञान ही होना चाहिए।

मेरी सारी जिंदगी इसी काम में खरच हुई है और मैंने पाया है कि अध्यात्म एक विज्ञान है, साइंस है और यह सही है। कैसे? इस तरीके से कि हमारे गुरु ने, हमारे मास्टर ने, 'बॉस' ने सबसे पहले यह समझाया कि कारतूस से भी ज्यादा बंदूक का सही होना आवश्यक है। कर्मकांड अपने आप में पर्याप्त नहीं है। उसको चलाने वाला जो व्यक्ति है, वह सही होना चाहिए। बीज में अपनी शक्ति है। जो बीज जमीन में बोते हैं वही पैदा होता है। आम बोते हैं तो आम पैदा होता है, बबूल बोते हैं तो बबूल पैदा होता है। गेहूँ बोते हैं तो गेहूँ पैदा होता है—यह बात सही है, लेकिन इससे भी ज्यादा सही यह है कि जमीन ठीक होनी चाहिए। जमीन को जोता नहीं गया है, खाद-पानी नहीं दिया गया है, तो ऐसी ऊबड़-खाबड़ जमीन में अच्छी पैदावार की आप कैसे उम्मीद रखेंगे? इसलिए अध्यात्म के साथ में दो सिद्धांत जुड़े हुए हैं। एक सिद्धांत यह मिला हुआ है कि जो इसके लिए कर्मकांड बताए गए हैं, वह करने चाहिए। दूसरी इससे भी सही बात यह है कि जो आदमी प्रयोग करने वाला है, उसे व्यक्तित्व की दृष्टि से बहुत साफ, बहुत पैना और बड़ा तीखा होना चाहिए। तीखे व्यक्तित्व के ऊपर—बढ़िया

वाली बंदूक के अंदर अगर आपने कारतूस रखी है, तो निशाना सही लगेगा और बहुत दूर तक लगेगा। लेकिन अगर आपके पास बंदूक नहीं है या नकली बंदूक है और खाली कारतूस लेकर के आप चलाने का मन करते हैं, तो फिर आपकी बात बनेगी नहीं। तो फिर आप इसे अंधविश्वास भी कह सकते हैं।

खेत में जो बीज बोया जाता है वही पैदा होता है, इसमें कोई दो राय नहीं, लेकिन अगर खेत में खाद-पानी नहीं लगाएँगे, जुताई नहीं करेंगे, तब फिर कुछ भी पैदा नहीं होगा। तब फिर आपको यही कहना पड़ेगा कि बीज बोना, खेती करना, मेहनत करना बेकार है, इस तरीके से बीज बोना अंधविश्वास हो गया और अगर आपने ढंग से, कायदे से बीज बोया है, तो बीज बोना विज्ञान हो गया। लोहे के बारे में आप जानते हैं कि वह जमीन से मिट्टी मिला हुआ निकलता है। उससे आप बर्तन बनाना चाहें, हथियार बनाना चाहें, औजार बनाना चाहें, तो कुछ नहीं बन सकता। लेकिन आपने उसे तपाया है और तपाकर के मिट्टी वाले हिस्से को जला दिया है, तब फिर आप उस लोहे से जो कुछ भी बनाना चाहें बना सकते हैं। ज्यादा टेंपरेचर देंगे, तो फिर स्टील बना सकते हैं, फौलाद बना सकते हैं और दूसरी कीमती चीज बना सकते हैं। लौह भस्म भी बना सकते हैं, मंडूर भस्म भी बना सकते हैं। यह सब चीजें ताप के ऊपर टिकी हुई हैं। लोहे के ऊपर नहीं। लोहा तो जैसा है वैसा ही रहेगा। यही बात अध्यात्म के सिद्धांतों के बारे में है। अध्यात्म के सिद्धांतों को जो आदमी अपने जीवन में प्रयोग करता है और अपने आपको सही बना लेता है तो उसके चमत्कार जरूर दिखाई पड़ेंगे। ऋद्धियाँ और सिद्धयाँ—जैसा कि उसके बारे में बताया गया है, सब बिलकुल सही बैठेंगी। कहीं भी गलती करने का अवसर नहीं आएगा, अगर आपने अपने जीवन को साफ किया है तब।

सर्वत्र पात्रता के हिसाब से मिलता है। बर्तन अगर आपके पास है तो उसी बर्तन के हिसाब से आप जो चीज लेना चाहें, तो ले

भी सकते हैं। खुले में रखें तो पानी उसके भीतर भरा रह सकता है। दूध देने वाले के पास जाएँगे तो जितना बड़ा बर्तन है उतना ही ज्यादा दूध देगा। ज्यादा लेंगे तो वह फैल जाएगा और फिर वह आपके किसी काम नहीं आएगा। इसलिए पात्रता को अध्यात्म में सबसे ज्यादा महत्त्व दिया गया है। जो अध्यात्म का प्रयोग करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में अपनी पात्रता का विकास कर रहे हैं कि नहीं कर रहे हैं—यह बात बहुत जरूरी है। आदमी का व्यक्तित्व अगर सही नहीं है, तो यह सब बातें गलत हैं। कपड़े को रंगने से पहले धोना होगा। धोएँ नहीं और मैले कपड़े पर रंग लगाना चाहें तो रंग कैसे चढ़ेगा? रंग आएगा ही नहीं, गलत-सलत हो जाएगा। इसी प्रकार से अगर आप धातुओं को गरम नहीं करेंगे तो उससे जेवर नहीं बना सकते। हार नहीं बना सकते। क्यों? इसलिए कि आपने सोने को गरम नहीं किया है। गरम करने से आप इंकार करते हैं, फिर बताइए जेवर किस तरीके से बनेगा? इसलिए गरम करना आवश्यक है। जो आदमी साधना के बारे में दिलचस्पी रखते हैं या उससे कुछ लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहला जो कदम उठाना पड़ेगा, वह है अपने व्यक्तित्व का परिष्कार। साधना भगवान की नहीं की जाती, वरन अपने आपकी की जाती है। उपासना भगवान की की जाती है। कर्मकांड किसी की मनुहार नहीं है, खुशामद नहीं है, कोई बाजीगरी नहीं है। कर्मकांड का सार, उद्देश्य और मकसद यह है कि आदमी अपने आपको ठीक बनाकर इस लायक बना ले कि उसके माध्यम से कर्मकांडों के मंत्रों के जो विधि-विधान हैं, देवपूजन हैं उनका समुचित लाभ उठाया जाना संभव हो सके।

इसके लिए आदमी को संयमी बनना पड़ता है। आपने देखा होगा कि रेलगाड़ी को चलाने के लिए थोड़ी भाप बनाई जाती है और पिस्टन के साथ जोड़ दी जाती है। यही संग्रहीत भाप रेलगाड़ी और इंजन सहित हजारों लाखों मन बोझ को खींच ले जाती है।

अगर यही भाप फैला दी जाए तो यह हवा में चारों तरफ बिखर जाएगी और फिर किसी काम नहीं आएगी। इसी तरीके से व्यक्ति के बारे में भी यही बात लागू होती है कि उसे सही तरीके से ठीक किया जाए। कोयले से ही हीरा बनता है। हीरा कोई अलग चीज नहीं, वरन साफ किया हुआ कोयला कहलाता है। कच्चा पारा सस्ता होता है और शरीर के लिए नुकसानदेह भी, लेकिन अगर उसी पारे को मकरध्वज बना लें तो वह बहुत कीमती होता है, रसायन कहलाता है, बुड्ढे को जवान बना देता है और बहुत-से मरजों में काम आता है। अध्यात्म के बारे में भी यही बात है कि इससे व्यक्ति को स्वयं अपने आपको ठीक करना पड़ता है। मंत्र आप किससे जपेंगे, वाणी से। वाणी अगर ठीक की हुई नहीं है, तो फिर आप मंत्र जप कैसे कर पाएँगे और उसका परिणाम किस तरीके से निकल पाएगा। ठीक की हुई वाणी का अर्थ यह होता है कि जीभ ऐसी होनी चाहिए जिससे आप किसी दूसरे आदमी को गलत रास्ते पर नहीं ले जाएँ। अगर आपने जीभ को इस तरीके से बना करके रखा है, तो आपकी जिह्वा चमत्कार दिखाने में समर्थ हो सकेगी।

इस बारे में, मैं एक पुराना किस्सा सुनाना चाहता हूँ—शृंगी ऋषि का। उनके पिता ने शृंगी ऋषि को इस तरीके से पाला अपने आश्रम में कि उनको स्त्रियों एवं अन्य बातों के बारे में कुछ मालूम न था। राजा दशरथ के पुत्र नहीं होता था। गुरु वसिष्ठ ने कहा—आप शृंगी ऋषि के पास जाइए। अगर वे आपके पुत्रेष्टि यज्ञ-अनुष्ठान को पूरा कर देंगे तो आपका उद्देश्य पूरा हो जाएगा। राजा ने पूछा—शृंगी ऋषि में क्या बात है जो अन्यान्य ब्राह्मणों में नहीं है। गुरु वसिष्ठ ने कहा—दूसरे ब्राह्मणों को कर्मकांड आते हैं, विधि-विधान आते हैं, मंत्र बोलना आता है, लेकिन अपने स्वयं के जीवन को जैसा बनाना चाहिए, वैसा बनाने के बारे में उन्होंने न कभी खयाल किया और न उसका अभ्यास किया। शृंगी ऋषि के पिता ने अभ्यास कराया है। जब शृंगी ऋषि आए और राजा दशरथ का

पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, तो उनकी तीनों रानियों से चार बच्चे हुए और चारों बच्चे साधारण नहीं, भगवान के स्तर के थे, क्योंकि उनकी वाणी में बल था। शृंगी ऋषि को प्रयोग करना आता था। यही ऋषि परंपरा है। शारीरिक श्रम, बुद्धि, समय, धन, भावनाएँ, व्यक्तित्व ये सभी चीजें ऐसी हैं, जो एक-एक करके ठीक करनी चाहिए। हमारे जीवन में यही करना पड़ा और उसी का परिणाम है कि जो कुछ हमने पाया उसमें से हर चीज को सही पाया। कोई चीज ऐसी नहीं पाई जिसके बारे में हम यह कह सकें कि हमको इसमें संदेह रह गया है कि अध्यात्म विज्ञान नहीं है।

वस्तुत: अध्यात्म विज्ञान है। इस विज्ञान को और ज्यादा तेज करने के लिए अब हम आप लोगों से विदा होते हैं। विदा होने का मतलब है कि अब हमारी और आपकी बातचीत का सिलसिला, जो इतने लंबे समय से चलता रहा है, आगे से चलना अब मुमकिन नहीं है। आगे से अब हमारा दूसरा कार्यक्रम यह है कि अध्यात्म के विज्ञान को जिस हद तक हमने समझा है, उस हद तक यह लोभ हमसे अब संवरण नहीं होता कि इससे भी ज्यादा फायदा होना चाहिए। व्यक्तियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान होना अध्यात्म से संभव है, लेकिन समूह का, समाज का और सारे विश्व का समाधान होने के लिए उससे भी बड़ी ताकत की जरूरत है। अब तक हमने जैसी उपासना की है, उससे भी बड़ी उपासना करने की अब हमको आवश्यकता पड़ी है। इसलिए अब आप लोगों से विदा लेते हैं। क्यों? साथ रहते तो क्या हरज था? अब यह हरज था कि शक्ति बिखर जाती। पहले भी ऐसा हुआ है। कई व्यक्तियों को इसी तरीके से करना पड़ा है। पांडिचेरी वाले अरविंद घोष के बारे में आपने सुना है। श्री अरविंद ने कई इंतजाम किए कि अंगरेजों को हिंदुस्तान से भगा दिया जाए, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। आखिर में उनकी समझ में आया कि रूहानी शक्ति को इकट्ठा करना चाहिए। रूहानी शक्ति ही इस दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है।

उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है। वे पांडिचेरी चले गए। वहाँ अंगरेजों की हुकूमत नहीं थी। वहाँ जाकर उन्होंने तप करना शुरू किया और तप से इतनी गरमी पैदा की कि सारे-के-सारे वातावरण को 'साइक्लोन्स' चक्रवातों से भर दिया। जब ज्यादा गरमी पड़ती है तब साइक्लोन-चक्रवात आते हैं और पेड़ों को, छप्परों को उखाड़कर फेंक देते हैं। इसी प्रकार श्री अरविंद के तप करने की वजह से ऐसे साइक्लोन आए जिन्होंने पेड़ों को जड़ों से उखाड़कर फेंक दिया। क्या नाम थे साइक्लोनों के? इनमें से एक साइक्लोन का नाम था—गांधी, एक का नाम था—मालवीय, एक का नाम था—जवाहर लाल नेहरू, एक का नाम था—सरदार पटेल, एक का नाम था—सुभाषचंद्र बोस, लाला लाजपतराय वगैरह-वगैरह। जब वे उठे तब अंगरेजों को बोरी-बिस्तर बाँधने पड़े। ऐसे जबरदस्त थे साइक्लोन। वे महापुरुष थे, महामानव थे। इनके व्यक्तित्व और इनकी हस्तियाँ ऐसी जबरदस्त थीं जो बहुत दिनों से पैदा नहीं हुई थीं।

वे कैसे हुईं। यह श्री अरविंद एवं श्री माँ का तप था। और किसका? महर्षि रमण का तप था। महर्षि रमण ने भी इन्हीं दिनों ऐसा तप किया था, जिससे कि सारे-के-सारे वातावरण में गरमी पैदा हो गई थी और उससे हिंदुस्तान की आजादी के लिए बड़े-बड़े काम संपन्न हो गए थे। महर्षि रमण और श्री अरविंद के अतिरिक्त बाहरी दुनिया में भी कई व्यक्ति हुए हैं। बाहर कौन हुआ है? आइंस्टीन, उन्होंने भी अपनी शक्तियों को बिखेरने से बचाने के और अपने वैज्ञानिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए एकांत में रहना शुरू कर दिया था। उनके रहने की जगह ऐसी थी, जहाँ कोई भी नहीं जा सकता था। जिसको उनके पास जाना होता था, वे नौकर की मार्फत अपना विजिटिंग कार्ड भिजवा देते थे और जब उनको फुरसत होती थी तभी वे किसी को बुलाते थे, अन्यथा किसी की हिम्मत नहीं होती थी जो उनके पास जाए, उनसे बातचीत करे। टाल्स्टाय ने भी अपने जीवन के अंतिम दिनों में ऐसा ही किया था। वे मौन धारण

करने लगे थे। मौन धारण करने का मतलब है, अपनी शक्तियों को एकत्र करना। अब हम भी अपनी शक्तियों को एकत्र करने के लिए मौन धारण करते हैं। आप हमको बहुत प्यारे हैं और हमारे बहुत प्यारे रहेंगे। प्यार में हम कुछ भी कमी नहीं आने देंगे और न ही दूर रहने से हमारे और आपके बीच कुछ फरक पड़ेगा। सूर्य, चंद्रमा, और तारों के नजदीक क्या कभी गए हैं आप? वे आप से करोड़ों मील दूर हैं, फिर भी अपनी शक्ति से आपको कितना फायदा पहुँचाते हैं। हम और आप भी पास-पास खड़े रहें, पास-पास बैठे रहें, देखते रहें, इसकी कोई जरूरत हमें नहीं दीखती। अब इससे आगे आप हमें नहीं भी देखें तो उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। आपने अपना दिल देखा है क्या? फेफड़े देखे हैं क्या? गुरदे देखे हैं क्या? वे दिन-रात चौबीसों घंटे आपकी सेवा में लगे रहते हैं। हमको आप इसी तरीके से मानिए कि दिल के तरीके से आपके साथ हम चौबीसों घंटे लगे रहेंगे। गुरदे के तरीके से आपकी जिंदगी को साफ करेंगे। फेफड़ों के तरीके से ऑक्सीजन पहुँचाने के लिए हमसे जो कुछ भी मुमकिन होगा बराबर करते रहेंगे। इसलिए आप तो इस बात को त्याग दीजिए कि गुरुजी से मिलना-जुलना नहीं हो सकेगा।

मिलने-जुलने की प्रक्रिया को हम सिर्फ इसलिए बंद कर रहे हैं कि अब तक आध्यात्मिक जीवन से जो अपने व्यक्तियों का, समाज का जो हित कर सकते थे, किया, अब समस्याएँ ऐसी पैदा हो गई हैं जो बड़ी हैं और उनके लिए बड़ी तैयारी करनी पड़ेगी। छोटे कामों के लिए छोटी तैयारी करनी पड़ती है। चिड़िया को मारना हो तो गुलेल भर से काम चल जाता है या छोटी बंदूक से भी मार सकते हैं। किसी डाकू को मारना होता है, शेर को मारना होता है, तो स्टेनगन की जरूरत पड़ती है। जब कुछ बड़े काम करने पड़ते हैं या शत्रु सेना पर हमला बोलना होता है तब तोपों की जरूरत पड़ती है। अब समय कुछ इस प्रकार का आ गया है कि हमको

बड़े कदम उठाने पड़ सकते हैं, पड़ेंगे। अब छोटे कदमों से आज की समस्याएँ हल होने वाली नहीं हैं। कौन-कौन-सी समस्याएँ हैं? आपको आँखों से दिखाई नहीं पड़ेगा। आपको सूर्य का परिभ्रमण तथा पृथ्वी की परिक्रमा कहाँ दिखाई पड़ती है। हमारी आँखें आपकी अपेक्षा अधिक तेज हैं। वे कुछ ऐसी समस्याएँ देख रही हैं जो कि बहुत ही मुश्किल हैं। इन मुश्किल समस्याओं को हल करने के लिए बड़ी शक्ति की जरूरत है। मुश्किल समस्याएँ क्या हैं? एक समस्या यह है कि वातावरण में जहर भरता जा रहा है। हवा में जहर, पानी में जहर, मिट्टी में जहर सभी जगह औद्योगीकरण के द्वारा, मोटर वाहनों के द्वारा, रासायनिक खादों एवं एटमी विकिरण के द्वारा जहर-ही-जहर भरता जा रहा है। जिससे कैंसर से लेकर अन्यान्य बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। यह चीजें वह हैं, जो साइंस ने तमाम जगह भर दी हैं। पर एक चीज ऐसी है जो साइंस ने तो नहीं भरी है, पर हमारे और आपके खयालातों से जन्मी है, जिससे कि यह परोक्ष वातावरण गंदा हुआ है। परोक्ष वातावरण की इस गंदगी को दूर करने की, साफ करने की भरसक जरूरत है।

सफाई किस तरीके से की जाए? हमको उसके लिए मुनासिब स्थान और मुनासिब कदम उठाने की जरूरत है। अब हम बड़े कदम उठाएँगे। अब तक जैसे अनुष्ठान किए हैं, वैसे अनुष्ठानों से काम नहीं चलेगा। अब हमको बड़े अनुष्ठान करने चाहिए। पिछले अनुष्ठानों में हम लोगों से मिलते भी रहे हैं और काम भी करते रहे हैं, पर आगे अब क्या करना है? आगे हम अकेले पड़ जाएँगे। अकेले से काम नहीं चलेगा। रामचंद्र जी से अकेले से काम नहीं चलता था। इसलिए वे सुग्रीव को बुलाने के लिए गए, हनुमान को बुलाने के लिए गए। फिर नल और नील को बुलाने के लिए गए, जिनने समुद्र का सेतु बना दिया। सबने मिलकर लंका को पार करने की फतह करने की तैयारी की। अकेले रामचंद जी नहीं कर पाए। उन्होंने जब रामराज्य की स्थापना की, तब भी इन्हीं लोगों की

सहायता की जरूरत पड़ी। अकेले रामचंद्र जी रामराज्य की स्थापना नहीं कर सकते थे। हम भी अकेले नहीं कर पाएँगे। कुंती ने श्रीकृष्ण भगवान की आज्ञा मानकर उनके लिए पाँच सहायक पैदा किए थे। पाँच देवताओं की शक्तियों से वे पैदा हुए थे, जिनके नाम थे—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। एक का नाम कर्ण था, जो सूर्य के अंश से पैदा हुए थे। काम बड़ा था-छोटा नहीं।

एक बार ऐसा हुआ कि सब जगह पानी का अभाव हो गया। पानी बिना कुएँ, तालाब सूख गए। कहीं पानी दिखाई नहीं पड़ रहा था। सब जगह त्राहि-त्राहि मच गई। कई वर्ष हो गए कहीं पानी नहीं बरसा। कुछ चीजें, जिन्हें मनुष्य अपने आप नहीं कर सकता, उसे बड़ों की सहायता से पूरी करता है। उसके लिए बड़ी शक्तियों की सहायता चाहिए। भगीरथ ने विचार किया कि इसके लिए स्वर्ग से गंगा जमीन पर लाई जाए। गंगा को स्वर्ग से जमीन पर लाने के लिए वे तप करने चले गए। उन्हें खुशामद नहीं करनी पड़ी। खुशामद करने, प्रार्थना करने, चावल चढ़ाने, धूप-दीप-नैवेद्य चढ़ाने से कोई भी बड़ी शक्ति काबू में नहीं आ सकती। ऐसे बड़े कामों के लिए तप करने पड़ते हैं। भगीरथ ने जैसे-जैसे तप किया और तप करके गंगा को स्वर्ग से लाए, तो देवताओं ने भी मदद की। जो अपनी मदद आप करता है उसकी ईश्वर भी मदद करता है। भगवान शंकर ने उनकी मदद की। हमारे गुरु ने भी हमारी मदद की, क्योंकि हमारे सामने बड़े मकसद रहे हैं। शुरू से आखिर तक जो कुछ भी काम हम करते रहे हैं, बड़े उद्देश्यों के लिए करते रहे हैं। अगर यह बात, यह नीयत नहीं रही होती और यह नीयत रही होती जो कुछ भी हम अपने लिए, अपने बाल-बच्चों के लिए, रिश्तेदारों के लिए करेंगे, तब ये सब देवता हमको सूँघकर भाग खड़े हुए होते। आप देवताओं की शक्ति का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो उनको एक ही बात बतानी पड़ेगी कि हम किसी बड़े काम के लिए, बड़े मकसद के लिए, बड़े उद्देश्यों के लिए कुछ काम

करना चाहते हैं। भगीरथ ने जब यह बताया कि गंगा हमें इसलिए चाहिए कि जो पीढ़ियाँ सदियों से अनास्था के कारण शाप से जल रही हैं, सारी धरती सूखी पड़ी है, उसके लिए चाहिए, तो गंगा भी तैयार हो गईं और उनकी मदद करने के लिए शंकर जी भी तैयार हो गए और गंगा ने उनकी जटाओं में गिरने के बाद जमीन पर बहना शुरू कर दिया।

देवताओं के ऊपर एक बार एक और मुसीबत आई। ऐसा हुआ कि वृत्रासुर नामक एक दैत्य ने देवताओं को मार-पीट कर भगा दिया और उनका इंद्रासन वगैरह राज सिंहासन छीन लिया। देवताओं ने देखा कि इसको मारने के लिए तपस्वी की शक्ति चाहिए। तपस्वी की शक्ति से बड़ी और किसी की शक्ति नहीं होती। वे दधीचि के पास गए। दधीचि ने कहा कि मेरी अस्थियों का वज्र यदि बने तो वह इतना मजबूत हो सकता है कि सब देवता एक ओर और राक्षस एक ओर। तपस्वी दधीचि ने इंद्र को बुलाया और कहा कि आप हमारी हड्डियाँ ले जाइए और उससे वज्र बनाकर वृत्रासुर के विरुद्ध काम में लाइए। ऐसा ही हुआ। इंद्र ने उन्हीं हड्डियों से वज्र बनाया और उससे वृत्रासुर का नाश किया और बड़ा काम हो गया।

बड़े कामों के लिए बड़ी ताकत की जरूरत पड़ती है। हमारे सामने भी बड़ा काम है। इसके लिए बड़े त्याग की जरूरत है। इसमें दधीचि जैसे, भगीरथ जैसे त्याग करने वाले होने चाहिए, बड़े आदमी होने चाहिए। बड़े आदमी आएँगे कहाँ से? हमने आपसे कहा है कि भगवान केवल उसी की सहायता करता है, जो बड़े कामों के लिए बड़े उद्देश्यों के लिए अपने आपको सौंप देते हैं। सुग्रीव के साथ भी यही हुआ और हनुमान के साथ भी यही हुआ। पहले दोनों बालि का मुकाबला नहीं कर सकते थे और जान बचाकर एक पहाड़ पर जा छिपे थे और वहीं पर किसी प्रकार अपना गुजारा कर रहे थे। लेकिन जब दोनों रामचंद्र जी के साथ जुड़

गए और सीता की खोज करने और लंका का दहन करने का जोखिम उठाने को तैयार हो गए, तो वही हनुमान भी पहाड़ उखाड़ने और लंका जलाने सहित समुद्र को छलांग मारने में समर्थ हो गए। जो आदमी जोखिम नहीं उठा सकता, केवल फायदा-ही-फायदा तलाश करता है, उसको मैं क्या कह सकता हूँ, लेकिन जो महापुरुष हैं, वे महान कामों के लिए ही सहायता करते हैं। उन्होंने रामराज्य की स्थापना के लिए बड़े गजब के काम किए और रामचंद्र जी का इतना प्यार पाया कि उन्हें राम पंचायतन में स्थान मिला। यह वह तथ्य है कि जिसने अपने आपको रामचंद्र जी के सुपुर्द कर दिया। सुपुर्द करके तो देखिए कि बदले में क्या मिलता है। इसी तरीके से नल-नील ने, रीछ-वानरों ने एक ऐसा पुल बना दिया, जो पानी पर तैरता था। तो क्या नल-नील में इतनी ताकत थी? नहीं, भगवान की ताकत थी। अच्छे उद्देश्यों के लिए, अच्छे कामों के लिए भगवान की हमेशा सहायता मिलती रही है और आगे भी मिलती रहेगी।

कुंती के पाँच पुत्रों में अर्जुन सहित पाँच पांडव थे। जब उनको वनवास हो गया तो अपनी जान बचाने के लिए वे मारे-मारे फिरते थे। नहीं साहब, वे बड़े ताकतवर थे और उन्होंने कौरवों को मार गिराया और महाभारत फतह करके दिखा दी। तो फिर पहले क्यों नहीं दिखा दी थी? पहले इसलिए नहीं दिखा सके कि पहले भगवान नहीं थे उनके साथ। भगवान किसके साथ होते हैं? उसके साथ होते हैं जो बड़े कामों के लिए समर्पित हो जाते हैं, बड़े कामों के लिए अब हम आपसे अलग हो रहे हैं। आप में से कई आदमी बड़े ताकतवर भी हैं, शक्तिशाली भी हैं। कौन-कौन ताकतवर हैं? ताकतवर मैं उन्हें मानता हूँ जो कि बुद्धिजीवी हैं, जो कलाकार हैं, संपन्न हैं और जो राजनेता हैं और किसे मानते हैं—भावनाशीलों को मानते हैं। आप लोग तो भावनाशील हैं। भावनाशीलों ने ही दुनिया में ऐसे-ऐसे गजब के बड़े-बड़े काम किए हैं कि सारी दुनिया को हिला करके रख दिया है। भावनाशील किसी से भी कम नहीं हैं,

राजनेताओं से भी नहीं। तब क्या करना है ? अब हमको इससे आगे आने वाले समय में अकेला नहीं रहना है। पाँच बच्चे ऐसे पैदा करना है जो बड़े हों। वायु-पवन ने एक बच्चा पैदा किया था, जिसका नाम था—हनुमान, बजरंगबली। ऊपर से एक शिला पर पटक दिया कि देखें यह है कुछ या नहीं। बच्चे ने पत्थर की शिला को तोड़कर फेंक दिया और वह बजरंगबली कहलाया। कर्ण जो था वह सूर्य से पैदा हुआ था। उसके पास कवच, कुंडल थे। इसी तरह से हमको अपने सहायकों की आवश्यकता पड़ी है। ऊपर जिन पाँच ताकतवरों का नाम गिनाया है, उनको ठीक करना और सही रास्ते पर लाना एक बड़ा काम है। जो अगले ही दिनों संपन्न होने जा रहा है।

तो फिर आपको क्या करना पड़ेगा ? आपको कभी करना हो, अध्यात्म को विज्ञान के तरीके से देखना हो, उसे अंधविश्वास न कहना हो, तो कृपा करके आप भगवान का तरीका समझना, भगवान का कायदा समझना, भगवान के मन को समझना। भगवान का मन क्या है ? भगवान का मन यह कि वे माँगते हैं। जो कोई भी सामने आता है, हर एक से माँगते हैं। किसको दें, किसको नहीं दें, इसकी उनकी एक ही परीक्षा है कि वह आदमी देने को तैयार है कि नहीं। यदि देने को तैयार है तो भगवान उसे देंगे। उन्होंने जिससे भी मिले पहले माँगा। शबरी के पास गए तो माँगते गए कि हम तो भूखे हैं। गोपियों के पास गए तो माँगते गए कि हम भूखे हैं। राजा कर्ण के पास गए तो उससे कहा कि हमको सोना चाहिए। राजा बलि के पास गए तो कहा कि हमको जमीन चाहिए। जहाँ कहीं भी भगवान गए हैं, उनमें से हर एक से माँगा है और जिस किसी ने दिया है, वह खाली हाथ रहने नहीं पाया है। भगवान ने सबसे माँगा है। हमारे गुरु ने भी हमसे माँगा था और जब हमने दिया तो उसके बदले में क्या पाया ? उन्होंने कहा—जो तुम्हारे पास है, वह दे। मैंने कहा—कहाँ दूँ, किसको दूँ। तो उन्होंने कहा—भगवान की खेती में बो दे। अपने

पास जो कुछ भी था, हमने सब भगवान की खेती में बो दिया और जो कुछ भी बोया, सौ गुना होकर के पाया। हमारे पास शरीर है। शरीर हमने बोया और शरीर सौ गुना होकर हमने पाया। आपने सुना नहीं है अभी एक पागल आया था और उसने सिर से पैर तक सैकड़ों छुरे चलाए, रिवाल्वर तान दिया, पर उसमें से कोई बाल तक बाँका नहीं हुआ। यह शक्तियाँ भगवान की दी हुई हैं। भगवान की दी हुई यह शक्तियाँ किसी को भी मिल सकती हैं, आपको भी।

इस तरीके से हमने अपना शरीर दिया था और शरीर पाया। हमने अपनी बुद्धि दी। अपनी सारी बुद्धि का इस्तेमाल अपने लिए नहीं समाज के लिए किया। हमारी जो बुद्धि है वह इतनी पैनी और तीखी है कि आप यह जानकर अचंभे में रह जाएँगे। व्यास जी ने एक महाभारत लिखा था और उसके लिए गणेश जी को स्टेनो टाइपिस्ट बनाकर ले गए थे। हमारे पास कोई स्टेनो टाइपिस्ट नहीं है। हमारी यह भुजाएँ ही स्टेनोटाइपिस्ट हैं। इसी से हमने इतना साहित्य लिखा है जो कि हमारे वजन से भी भारी है। यह हमारी बुद्धि है। हमारे पास धन है। हमारे पास तो नहीं था, पर पिताजी का दिया हुआ था, जिसे सारे-का-सारा समाज को दे दिया। गायत्री तपोभूमि को दे दिया। उससे जो कुछ बचा हुआ था, उससे अपने गाँव में एक स्कूल बना दिया। उसके बाद भी कुछ धन बचता दिखाई दिया तो कुछ और इंतजाम करके गाँव में ही एक अस्पताल बना दिया। सारी-की-सारी चीजें ऐसी बना दीं जो समाज की हैं। आप पूछेंगे कि तो फिर आपका धन चला गया होगा और आप गरीबी के दिन काट रहे होंगे? नहीं, हम गरीबी के दिन नहीं काटते। आप देखते नहीं, जहाँ हम रहते हैं, कितने दामों की है। आपने शांतिकुंज देखा है, लाखों रुपयों का बना हुआ है। गायत्री तपोभूमि लाखों रुपयों का बना हुआ है। ब्रह्मवर्चस् लाखों रुपयों का बना हुआ है। हमें लाखों से कम में गिनती ही नहीं आती, क्यों?

इसलिए नहीं आती कि जो हमारे पास था हमने भगवान को, समाज को दे दिया है। बोया है और बोने के बदले में काटा है।

अध्यात्म विज्ञान है या अंधविश्वास—अगर आपका मन यह जानने को हो तो फिर आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अध्यात्म का सही तरीका क्या है ? सही तरीका नहीं मालूम है, इसलिए आप बेकाबू होते हैं, परेशान हैं। आप केवल पूजा-पाठ करते हैं, कर्मकांड करते हैं, परंतु कर्मकांड के साथ-साथ जीवन को जैसा ऊँचा बनाना चाहिए वैसा ऊँचा बनाने के लिए आप का मन नहीं करता। आप कोई प्रयत्न नहीं करते। आप मन से कीजिए, प्रयत्न कीजिए, फिर देखिए कि भगवान आपकी सहायता करता है कि नहीं, भगवान झूठा है कि सच्चा है ? भगवान सच्चा है। और कैसा है ? कैसा देखा है आपने ? भगवान को, हमने प्रतिच्छाया के रूप में और प्रतिध्वनि के रूप में देखा है। शीशे में आप जैसा अपना चेहरा देखते हैं, भगवान हूबहू वैसा ही होता है। भगवान को हमने देखा कि बिलकुल हमारे जैसा है। हमारे जैसा उसका ईमान, हमारे जैसा उसका मन, हमारी जैसी उसकी बुद्धि, हमारे जैसा उसका प्यार। हमारे भगवान का रूप बिलकुल हमारे जैसा है। गुंबज में जो आवाज लगाते हैं, ठीक वही आवाज प्रतिध्वनित होकर सुनाई देती है। इसी प्रकार जो आवाज हम लगाते हैं, वही आवाज सुनाई देती है। हम कहते हैं लीजिए और आप आवाज लगाते हैं कि लाइए भगवान जी आपके पास जो कुछ है हमारे सुपुर्द कीजिए। भगवान भी इसके बदले में आवाज लगाते हैं कि लाइए आपके पास क्या है, हमारे सुपुर्द कीजिए। आप कहते हैं कि हम तो देने वाले नहीं हैं, भगवान भी कहते हैं कि हम देने वाले नहीं हैं। दोनों में जद्दोजेहद होती है। राम और भरत में राजगद्दी को लेकर लड़ाई हो गई थी। राम कहते थे कि हमारा भरत इसी गद्दी पर बैठेगा और भरत कहते थे कि राजगद्दी पर तो हमारे भाई राम बैठेंगे। दोनों के बीच में जद्दोहद होती रही, लड़ाई होती रही। गेंद को दोनों ठोकरें मारते रहे और गेंद

यहाँ पड़ी कभी वहाँ पड़ी। हमारे और हमारे भगवान के बीच प्यार की बातें हुई हैं और लड़ाई की बातें भी हुई हैं। लड़ाई इस बात पर हुई है कि भगवान ने बीसियों बार हमसे कहा है कि हमारे पास जो कुछ भी है, तू ले ले। हमने कहा—जो कुछ भी हमारे पास है आप ले लें। हम देने की कोशिश करते हैं। भगवान से हमने यह नहीं कहा कि आप हमें यह दीजिए, वह दीजिए, हमारे पास यह कम है। हम न तो भिखारी हैं और न दीन-दुर्बल, हम ब्राह्मण हैं और हम तपस्वी हैं। हम शक्तिशाली हैं और इसीलिए हमने भगवान से कहा कि आपको जो कुछ जरूरत है—माँगिए। भगवान ने कहा—क्यों नहीं जरूरत है, समाज के लिए, देश के लिए क्यों नहीं जरूरत है, दुनिया में जो तहस-नहस मचा हुआ है, विष फैला हुआ है, उसके लिए तेरी हड्डियों की जरूरत है, तप की जरूरत है। हमने कहा—लीजिए, इस दधीचि का सब कुछ आपके सामने है।

भगवान को आपने कैसे देखा? भगवान को हमने घोड़े-हाथी पर सवार नहीं देखा। हमने भगवान को पायलट के तरीके से देखा और अपने बॉडीगार्ड के तरीके से देखा। भगवान हमारे बॉडीगार्ड के तरीके से चलता है और यह कहता है कि आप जो कहेंगे, हम वही करेंगे। आप आगे-आगे चलिए हम पीछे से सँभाल लेंगे। हमारा पायलट आगे-आगे चलता है और कहता है कि देखिए रास्ता साफ है। मैं रास्ता साफ करता हूँ आपके लिए, आप आगे बढ़िए। भगवान इस तरह का है। ऐसा भगवान आप चाहते हों तो आप वही रास्ता अख्तियार करना जो हमने अख्यार किया है। हमारा जीवन एक वैज्ञानिक अध्यात्म के साथ मिला हुआ है, इसलिए उसका परिणाम भी हमने वैज्ञानिक अध्यात्म जैसा ही पाया है। आपसे भी प्रार्थना है कि आप भी ऐसे ही करना। आप भी वही पाएँगे जो कि हमने पाया है।

ॐ शांतिः।

(२० जनवरी १९८६)

श्रावणी पर्व (१९८८) की विशेष कार्यकर्ता गोष्ठी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मेरे प्यारे बच्चो,

हमारे तुम सबके बीच आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। सारे समाज का कायाकल्प हो जाता। पचास आदमी गांधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग परिवर्तन कर सके, क्योंकि उनके पास काम के इंसान थे। विवेकानंद के साथ निवेदिता थीं और कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नजर आते हैं। यदि काम के इंसान होते, तो जमीन पलट दी गई होती। तुम सब यहाँ आए हो, तो काम के आदमी बन जाओ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थ में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

यहाँ शांतिकुंज में न्यूनतम पाँच सौ सशक्त कार्यकर्ताओं की, सही मायने में आदमियों की जरूरत है। आदमियों के लिए जमीन प्यासी है व आकाश प्यासा है। यदि पूर्ति हो जाए तो सारा सपना हमारा पूरा हो जाए। हमने ठहरने, खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर दी है। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति अध्यात्म के, समाज सेवा के रंग में रँगकर जाए, यही हमारा उद्देश्य है। यह काम अकेले संभव नहीं है। तुम्हारा सहयोग इसके लिए हमें चाहिए।

इसके लिए हमें तुमसे कुछ भी नहीं व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

गांधी जी ने अपने साथ में रहने वाले सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। वे, जो पूरी तरह जुड़े धन्य हो गए। श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ, तो तुम सबका व्यक्तित्व बने, सभी सँवर जाएँ। आज से ६३ वर्ष पूर्व हमने वसंत पर्व पर अपने भगवान से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा मुख्य, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने। अनगिनत उसकी उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो। यह हम कह इसलिए रहे हैं कि कहीं भावावेश में घर छोड़कर आए हो व मन में तुम्हारे दुःख-क्लेश बना रहे, इसके स्थान पर एक ही बार में सारी स्थिति स्पष्ट हो जाए। कहीं के तो बन सको तुम।

हमने जो समर्पण किया, बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें स्वयं को सोंप दिया। हमारे अंदर प्रभावोत्पादकता भर दी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनंदिन आचरण में। यही तुम्हारे अंदर भी आ जाएगी। भगवान के हम कोई संबंधी थोड़े ही हैं, जो उनने हमारे साथ कोई विशेष पक्षपात किया हो। तब तुम्हें भी क्यों नहीं वही सब मिल सकता है, जो हमें मिला। बस कसौटी एक ही 'अहं' को गलाना, विसर्जन, समर्पण। जब तक अहंकार जिंदा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा। 'अहं' ही है, जिसके कारण न सिद्धांत, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है। तुम्हें ईसा मसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्य ने उनसे कहा कि हम भी आपके समान महान-बड़ा बनना चाहते हैं। हम क्या करें? तो

उन्होंने एक ही जबाव दिया—बच्चो! जीवन भर मैं तिनका बना, विनम्र बना, गला तथा इसीलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका। अपनी इच्छा समाप्त कर दी तो सही अर्थों में बड़े बन गए। पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो। तुम वैसा बन गए, तो पेड़ भी बन सकोगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। वास्तव में सेण्टपाल भी इसी प्रकार सच्चे ईसाई थे। वे ईसा के बाद विकसित हुए। उनकी पीढ़ी के दूसरे महापुरुष भी विनम्रता, सेवाभावना, निरहंकारिता के कारण ही बने।

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग है। मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष संपर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है वही परस्पर चर्चा-व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। व्यक्तित्व को बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। प्याज खाने वाले के मुँह से, शराब पीने वाले के मुँह से जिस प्रकार की गंध आती है, पायरिया वाले मसूड़े के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो। तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं, मात्र निंदा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो। तुरंत तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जाएँगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात को। कतई मतलब नहीं है वाणी में चापलूसी का वाणी की मिठास से। दोनों नितांत भिन्न चीजें हैं। दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना, मीठी वाणी बोलना एक ऐसा सद्गुण है जो व्यक्ति को चुंबक की तरह खींचता व अपना बनाता है। दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जाएँगे, यदि तुम यह गुण अपने अंदर पैदा कर लो। इसके लिए अंतः के अहंकार को गलाओ। अपनी इच्छा, कामना, स्वाभिमान

को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनंत फलश्रुतियाँ सुनाई हैं। अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ। मैनेजर की, इंचार्ज की, बॉस की नहीं बल्कि स्वयंसेवक की। जो स्वयंसेवक जितना बड़ा है, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं। तुम सबमें भी वे मौजूद हैं। अहं की टकराहट बंद होते ही वे विकसित होना आरंभ हो जाएँगे। तुमने हम से दीक्षा तो ली है, पर यह अपने अंदर टटोलो कि तुमने समर्पण किया कि नहीं। यही पर्यवेक्षण इस श्रावणी पर्व पर अपने अंतरंग का करो।

हमारी एक ही महत्त्वाकांक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते हैं। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारे मन की बात है। गुरु-शिष्य एक-दूसरे से अपने मन की बात कहकर हलके हो जाते हैं। हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो। पति-पत्नी की तरह, गुरु व शिष्य की आत्मा में भी परस्पर ब्याह होता है, दोनों एक-दूसरे से घुल-मिलकर एक हो जाते हैं। समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिटकर एक हो जाना। तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को हमारी अनंत आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं जिंदा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया वह पतिव्रता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो। इसके लिए निरहंकारी बनो। स्वाभिमानी तो होना चाहिए पर निरहंकारी बनकर। निरहंकारी का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास।

वाणी व्यक्तित्व का प्रमुख हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार हो भी तो बेकार है। यदि वाणी सही

है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवंत हो जाएगा, बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा। अपनी विनम्रता, दूसरों को सम्मान व बोलने में मिठास यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना-चाँदी ढेरों लाकर रख दिया है, तुम्हीं को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे कार्यकर्ता छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ-मैटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है पर 'डाई' कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्रेष्ठतम 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

तुमसे दो और अपेक्षा—एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती-हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा-बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं। श्रम का माद्दा इस सबमें असीम है। हमने कभी उसका मूल्यांकन किया ही नहीं। हमारा जीवन निरंतर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घंटे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घंटे काम करता है, नौकर आठ घंटे तथा चोर चार घंटे काम करता है। तुम सब अपने आप से पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं? जीभ चलाने के साथ

कठोर परिश्रम करो, अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की। इसी को पुण्य-परमार्थ, सेवा-उदारता कहते हैं। अपना मन सभी से मिलाओ। मिल-जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दु:ख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है। साधु तुम अभी बने नहीं हो। मन से ब्राह्मणत्व की साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनो। साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवाबुद्धि का, दूसरों के प्रति पीड़ा का, भाव संवेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है। आज इस वर्ष श्रावणी पर्व पर तुमसे कुछ अपेक्षाएँ हैं। आशा है तुम इन्हें अवश्य पूरा करोगे व हेमाद्रि संकल्प के साथ ही गुरु जी की भुजा, आँख व पैर बन जाने का संकल्प लोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है जो तुम से कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है कितना तुम हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो।

हमारी बात समाप्त।

अपने अंग-अवयवों से कुछ विशिष्ट अपेक्षाएँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अपने बच्चों से, साथियों से, मिशन के कार्यकर्ताओं से मिलने का मेरा बड़ा मन था, पर संयोग नहीं मिल पा रहा था। पहले मन यह था कि यहाँ बुलाऊँ और बुला करके एक-एक से बात करूँ और अपने मन को खोलकर आप सब के सामने रखूँ और आपकी नब्ज भी देखूँ, पर अब यह संभव नहीं रहा। कितने कार्यकर्ता हैं ? यहाँ शांतिकुंज के स्थायी कार्यकर्ता एवं सामयिक स्वयंसेवक आए

हुए हैं। एक समुदाय जो शुरू में आया था वह समुदाय, न केवल यहाँ का, वरन गायत्री तपोभूमि का, वह भी हमारा समुदाय है। सब लोगों को बुलाने के लिए मैं विचार करता रहा कि क्या ऐसा संभव है कि एक-एक आदमी को बुलाऊँ, अपने जीवन के अनुभव सुनाऊँ और अपनी इच्छा और आकांक्षा बताऊँ। लेकिन एक-एक करके बुलाने में तो मालूम पड़ा कि यह संख्या तो इतनी बड़ी है कि इनको बुलाने में महीनों लगाऊँ तो भी पूरा नहीं हो सकेगा। इसलिए आप यह मानकर चलिए कि आप से व्यक्तिगत बात की जा रही है और एकांत में, अकेले में बुलाकर के, कंधे पर हाथ रखकर के और आप से ही कहा जा रहा है किसी और से नहीं।

आप इन बातों को अपने जीवन में प्रयोग करेंगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपकी ऐसी उन्नति होती चली जाएगी जैसी कि एक छोटे-से देहात में जन्म लेने के बाद हम उन्नति करते चले आए और उन्नति के ऊँचे शिखर पर जा पहुँचे। आपके लिए भी यह रास्ता खुला हुआ है। आपके लिए भी सड़क खुली हुई है। लेकिन अगर आप ऐसा नहीं कर पाएँगे, तो आप यह विश्वास रखिए कि आप घटिया आदमी रहे होंगे किसी भी समय में और घटिया ही रहकर जाएँगे। भले ही आप शांतिकुंज में रहें। आपकी कोई कहने लायक महत्त्वपूर्ण प्रगति न हो सकेगी और आप वह आदमी न बन सकेंगे जैसे कि बनाने की मेरी इच्छा है।

अब क्या करना चाहिए? आपको वह काम करना चाहिए जो कि हमने किया है। क्या किया है आपने? क्रिया-कलाप गिनाऊँ आपको? नहीं क्रिया-कलाप नहीं गिनाऊँगा। क्रिया-कलाप गिनाऊँगा तो मुझे वहाँ से चलना पड़ेगा जहाँ से कांग्रेस का वालंटियर हुआ और फिर यहाँ आकर के होते-होते वहाँ आ गया जहाँ अब हूँ। यह बड़ी लंबी कहानी है। उन सब कहानियों का अनुभव और निष्कर्ष निकालना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा। उस पर तो ध्यान नहीं देता, लेकिन मैं सैद्धांतिक रूप से बताता हूँ। हमने

आस्था जगाई, श्रद्धा जगाई, निष्ठा जगाई। निष्ठा, श्रद्धा और आस्था किसके प्रति जगाई? व्यक्ति के ऊपर? व्यक्ति तो माध्यम होते हैं। हमारे प्रति गुरुजी के प्रति श्रद्धा है। बेटा, यह तो ठीक है लेकिन वास्तव में सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा होती है। आदर्शों के प्रति श्रद्धा, मूर्तियों के प्रति श्रद्धा, देवताओं के प्रति श्रद्धा टिकाऊ नहीं होती। इसका कोई ज्यादा महत्त्व नहीं। महत्त्वपूर्ण वह जो सिद्धांतों के प्रति निष्ठा होती है। हमारी सिद्धांतों के प्रति निष्ठा रही। आजीवन वहाँ से जहाँ से चले, जहाँ से विचार उत्पन्न किया है, वहाँ से लेकर निरंतर अपनी श्रद्धा की लाठी को टेकते-टेकते यहाँ तक चले आए और यहाँ तक आ पहुँचे। अगर यह श्रद्धा की लाठी हमने पकड़ी न होती तो तब संभव है कि हमारा चलना, इतना लंबा सफर पूरा न होता। यदि सिद्धांतों के प्रति हम आस्थावान न हुए होते तो संभव है कि कितनी बार भटक गए होते और कहाँ-से-कहाँ चले गए होते और हवा का झोंका उड़ाकर हमको कहाँ ले गया होता? लोभों के झोंके, मोहों के झोंके, नामवरी के झोंके, यश के झोंके, दबाव के झोंके ऐसे हैं कि आदमी को लंबी राह पर चलने के लिए मजबूर कर देते हैं और कहीं-से-कहीं घसीट ले जाते हैं। हमको भी घसीट ले गए होते। ये आदमियों को घसीट ले जाते हैं। बहुत से व्यक्ति थे जो सिद्धांतवाद की राह पर चले और कहाँ-से-कहाँ जा पहुँचे।

भस्मासुर का पुराना नाम बताऊँ आपको। मरीचि का पूरा नाम बताऊँ आपको। ये सभी योग्य तपस्वी थे। पहले जब उन्होंने उपासना-साधना शुरू की थी, तब अपने घर से तप करने के लिए हिमालय पर गए थे। तप और पूजा-उपासना के साथ-साथ में कड़े नियम और शर्तों का पालन किया था। तब वे बहुत मेधावी थे, लेकिन समय और परिस्थितियों के भटकाव में वे कहीं के मारे कहीं चले गए। भस्मासुर का क्या हो गया? जिसको प्रलोभन सताते हैं, वे भटक जाते हैं और कहीं के मारे कहीं चले जाते हैं।

तो श्रद्धा आदमी को टिकाऊ बनाए रखने के लिए एक रस्सी या एक संबल है, जिसके सहारे, जिसको पकड़ करके मनुष्य सीधी राह पर चलता हुआ चला जाता है। भटक नहीं पाता। आप भटकना मत। घर से आप चले थे न, यह विचार लेकर चले थे न कि हम लोग कल्याण के लिए, जन मंगल के लिए घर छोड़कर चले गए हैं। आप जब कभी भी भटकन आए तो आप अपने उस दिन को, उस समय की मन:स्थिति को याद कर लेना जबकि आपके भीतर से श्रद्धा का एक अंकुर उगा था और अंकुर उगकर के फिर आपके भीतर एक उमंग पैदा हुई थी और उमंग को लेकर के आप यहाँ आ गए थे। आपको याद है जब यहाँ आए थे, जिस दिन आप आए थे उसी मन को याद रखना।

साधु-बाबा जी जिस दिन घर से निकलते हैं, उस दिन यह श्रद्धा लेकर निकलते हैं कि हमको संत बनना है, महात्मा बनना है, ऋषि बनना है, तपस्वी बनना है। लेकिन थोड़े दिनों बाद वह जो उमंग होती है वह ढीली पड़ जाती है और ढीली पड़ने के बाद में संसार के प्रलोभन उनको खींचते हैं। किसी की बहन-बेटी की ओर देखते हैं, किसी से पैसा लेते हैं। किसी को चेला-चेली बनाते हैं। किसी की हजामत बनाते हैं। फिर जाने क्या-से-क्या हो जाते हैं। पतन का मार्ग यहीं से आरंभ होता है। ग्रैविटी-गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की हर चीज को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। संसार भी एक ग्रैविटी है जो ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। आप लोगों से सबसे मेरा यह कहना है कि आप ग्रैविटी से खिंचना मत। रोज सबेरे उठकर भगवान के नाम के साथ में यह विचार किया कीजिए कि हमने किन सिद्धांतों के लिए समर्पण किया था। और पहला कदम जब उठाया था तो किन सिद्धांतों के आधार पर उठाया था। उन सिद्धांतों को रोज याद कर लिया कीजिए। रोज याद किया कीजिए कि हमारी उस श्रद्धा में, उस निष्ठा में, उस संकल्प में और उस त्यागवृत्ति में कहीं फर्क तो नहीं आ गया।

संसार ने हमको खींच तो नहीं लिया। वातावरण ने हमको गलीज तो नहीं बना दिया। कहीं हम कमीने लोगों की नकल तो नहीं करने लगे। आप यह मत करना।

यह नहीं करेंगे तो क्या हो जाएगा? यदि आपकी श्रद्धा कायम रही, तो फिर एक नई चीज पैदा होगी। तो उसमें से अंकुर जरूर पैदा होगा। फिर क्या पैदा होगा-आपको काम करने की लगन पैदा होगी। काम करने की ऐसी लगन, ऐसी लगन कि आपने जो काम शुरू किया है उसको पूरा करने के लिए कितने मजबूत कदम उठाए जाएँ, कितने तेज कदम उठाए जाएँ, यह आपसे करते ही बनेगा। आप फिर यह नहीं कहेंगे कि हमने छह घंटे काम कर लिया, चार घंटे काम कर लिया। यहाँ बैठे हैं, वहाँ बैठे हैं। ओवर टाइम लाइए और ज्यादा काम हम क्यों करें? नहीं फिर आप काम किए बिना रह नहीं सकेंगे।

हमारा भी यही हुआ। श्रद्धा जब उत्पन्न हुई तो हमने यह सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि प्रलोभन हमको खींचने लगें। तो वहाँ से घर संपत्ति को त्याग करने से लेकर के स्त्री के जेवरों से लेकर के और जो कुछ भी था, सबको त्याग करते चले आए कि कहीं प्रलोभन खींचने नहीं लगें। प्रलोभन खींचने नहीं पाए और वह श्रद्धा हमको निरंतर बढ़ाती हुई चली आई। फिर उसने लगन को कम होने नहीं दिया। घीयामंडी के मकान में १७ वर्ष तक बिना बिजली के हमने काम किया। न उसमें पंखा था, न उसमें बल्व। मकान मालिक से झगड़ा हो गया था, सो मकान मालिक कहता था कि मकान खाली करो तो उसने बिजली के सेंक्शन पर साइन नहीं किए थे और बिजली हमको नहीं मिली। १७ वर्षों तक हम केवल मिट्टी के तेल की बत्ती जलाकर, रात के दो बजे से लेकर सबेरे तक, अपना पूजा-पाठ से लेकर के और अपना लेखन कार्य तक बराबर करते रहे। पंखा था नहीं, घोर गरमियों के दिनों में लू में भी काम करते रहे। १८ घंटे काम करते रहे। यह काम हमने किया।

अब क्या बात रह गई—दो बातों के अलावा। दो बातों में से आप में से हर आदमी को देखना चाहिए कि हमारी श्रद्धा कमजोर तो नहीं हुई। एक ओर हमारी लगन कमजोर तो नहीं हुई अर्थात परिश्रम करने के प्रति जो हमारी उमंग और तरंग होनी चाहिए, उसमें कमी तो नहीं आ रही। किसान अपने घर के काम समझता है तो सबेरे से उठता है और रात के नौ बजे, दस बजे तक बराबर घर के कामों में लगा रहता है। वह १८ घंटे काम करता है। किसी से शिकायत नहीं करता कि हमको १८ घंटे रोज काम करना पड़ता है। हमें अवकाश नही मिला या हमको इतवार की छुट्टी नहीं मिली और हमको यह नहीं हुआ, वह नहीं हुआ, इसकी कोई शिकायत नहीं करता, क्योंकि वह समझता है कि हमारा काम है। यह हमारी जिम्मेदारी है। खेत को रखना, जानवरों को रखना और बाल-बच्चों की देखभाल करना यह हमारा काम है। जिम्मेदारी हर आदमी को दिन-रात काम करने के लिए लगन लगाती है और वह आपके प्रति भी है। आपको भी व्यक्तिगत जीवन में अपनी श्रद्धा को कायम रखना एक और अपनी लगन को जीवंत रखना, दो काम तो आपके व्यक्तिगत जीवन के हैं, वह आपको करने चाहिए।

अब एक और नई बात शुरू करते हैं। नई बात यह है कि यह मिशन हमने कितने परिश्रम से बनाया। कितना विस्तार इसका हो गया, कितना फैल गया, कितना खुल गया। कितना विस्तार होता जाता है। आप सुनते रहते हैं न-हजार कुंड के यज्ञीय समाचार आपको मिलते हैं। आपको २४०० शक्तिपीठों की स्थापना की बात मिलती है। इस साल जो युग निर्माण सम्मेलन हुए हैं, उन सम्मेलनों की बात याद है। यहाँ तक कि शिविर चलते हैं, उनकी बात याद है। गवर्नमेंट के कितने शिविरों को हम चलाते हैं, इसकी बात याद है। यहाँ का फिल्म स्टूडियो, टी० वी० स्टूडियो, फिल्म चलाने वाले हैं-यह सब बातें आपको याद हैं। बहुत बड़ा काम है। बहुत बड़ी योजना है। इस काम को हमने आरंभ किया, लेकिन अब यह

जिम्मेदारी हम आपके सुपुर्द करते हैं। आप में से हर आदमी को हम यह काम सौंपते हैं कि आप हमारे बच्चे के तरीके से हमारी दुकान को चलाइए, बंद मत होने दीजिए। हम तो अपनी विदाई ले जाएँगे, लेकिन जिम्मेदारी आपके पास आएगी। आप कपूत निकलेंगे तो, तो फिर आदमी आपकी बहुत निंदा करेंगे और हमारी बहुत निंदा करेंगे।

कबीर का बच्चा ऐसा हुआ था जो कबीर के रास्ते पर चलता नहीं था, तो सारी दुनिया ने उससे यह कहा—'बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।' आपको कमाल कहा जाएगा और यह कहा जाएगा कि कबीर तो अच्छे आदमी थे, लेकिन उनकी संतानें दो कौड़ी की भी नहीं हैं। आपको दो कौड़ी की संतानें पैदा नहीं करना है। आपको इस कार्य का विस्तार करना है। जो काम हम करते रहे हैं, वह अकेले हमने नहीं किया। मिल-जुलकर ढेरों आदमियों के सहयोग से किया है और यह सहयोग हमने प्यार से खींचे हैं, समझा करके खींचे हैं, आत्मीयता के आधार पर खींचे हैं। ये गुण आपके भीतर पैदा हो जाएँ तो जो आदमी आपके साथ-साथ काम करते रहते हैं, उनको भी मजबूत बनाए रहेंगे और नए आदमी जिनकी कि इससे आगे भी आवश्यकता पड़ेगी। अभी ढेरों आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी। आपको संकल्प का नाम याद है न—'नया युग लाने का संकल्प'। नया युग लाने का संकल्प दो आदमियों का काम है, चार आदमियों का काम है, हजारों आदमियों का काम है। जो काम हमने अपने जीवन में किया है वही काम आपको करना है।

नए आदमियों को बुलाने का भी आपका काम है। कैसे बुलाना? यहाँ शांतिकुंज में कितने आदमी काम करते हैं? यहाँ २५० के करीब आदमी काम करते हैं। एक कुटुंब बनाकर बैठे हैं और उस कुटुंब को हम कौन-सी रस्सी से बाँधे हुए हैं? प्यार की रस्सी से बाँधे हुए हैं, आत्मीयता की रस्सी से बाँधे हुए हैं, भावना

की रस्सी से बाँधे हुए हैं। ये रस्सियाँ आपको तैयार करनी चाहिए ताकि आप नए आदमियों को बाँध करके अपने पास रख सकें और जो आदमी वर्तमान में हैं आपके पास उनको मजबूती से जकड़े रह सकें। नहीं तो आप इनको भी मजबूती से जकड़े नहीं रह सकेंगे, यह भी नहीं रहेंगे। इनकी सफाई भी आपको करनी है। आत्मीयता अगर न होगी और आपका व्यक्तित्व न होगा तो आपके लिए इनकी सफाई करना भी मुश्किल हो जाएगा।

इसलिए क्या करना चाहिए? आपके पास एक ऐसी प्रेम की रस्सी होनी चाहिए, आपके पास ऐसी मिठास की रस्सी होनी चाहिए, आपके पास अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण पेश करने की ऐसी रस्सी होनी चाहिए, जिससे प्रभावित करके आप आदमी के हाथ जकड़ सकें, पैर जकड़ सकें, काम जकड़ सकें। सारे-के-सारे को जकड़ करके जिंदगी भर अपने साथ बनाए रख सकें। यह काम आपको भी विशेषता के रूप में पैदा करना पड़ेगा। संस्थाएँ इसी आधार पर चलती हैं। संस्थाओं की प्रगति इसी आधार पर टिकी है। संस्थाएँ जो नष्ट हुई हैं, संगठन जो नष्ट हुए हैं, इसी कारण नष्ट हुए हैं। चलिए मैं आपको एक-दो उदाहरण सुना देता हूँ।

एक मैं उदाहरण सुनाऊँगा स्वामी श्रद्धानंद का। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने मकान को बेच करके गुरुकुल कांगड़ी नाम के एक छोटे-से गाँव में छप्पर बनाया। दस विद्यार्थियों को लाए। मास्टर एवं नौकर रखने की हैसियत नहीं थी, इसलिए पढ़ाना भी उनने ही शुरू कर दिया। रसोइया रखने की हैसियत नहीं थी, इसलिए खाना पकाना भी उन्होंने शुरू कर दिया। यह लगन, यह निष्ठा जिन किन्हीं ने भी देखी, वही आदमी प्रभावित होता हुआ चला गया, वही सहयोगी होता हुआ चला गया। यह उनका विश्वास था जिसने मकान बेच करके साधु बना दिया और वह उनकी लगन थी जिसमें कि उन्होंने झाड़ू लगाने से लेकर

के खाना पकाने तक के और पढ़ाने तक के और बच्चों के कपड़े धोने तक के सारे-के-सारे काम अपने जिम्मे लिए। उनकी लगन, उनकी श्रद्धा, बस यही दो शक्तियाँ जागीं, बस मैग्नेट बन गया, चुंबक बन गया और लोगों का पैसा भी आता चला गया। यह भी होता हुआ चला गया, बढ़ता हुआ चला गया। गुरुकुल कांगड़ी बन गई और स्वामी श्रद्धानंद की वजह से ४०-४५ आदमी उनके जमाने में गुरुकुल कांगड़ी जिन दिनों स्थापित हुई थी, ऐसे पैदा हुए जिन्होंनें हिंदुस्तान में तहलका मचा दिया। आर्य समाजियों में नया जीवन फूँक दिया। नए गुरुकुल उन्हीं दिनों खुले थे और ढेरों-के- ढेरों गुरुकुल खुले थे। स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी थी कि जैसा गुरुकुल यहाँ का गुरुकुल कांगड़ी है—तुम अपने क्षेत्र में वैसा ही गुरुकुल कायम करना। तो उन्हीं दिनों २० के करीब गुरुकुल स्थापित हुए।

मैं अभी और उदाहरण सुनाता हूँ आपको। प्रेम महाविद्यालय का नाम सुना है आपने। हमारी गायत्री तपोभूमि से कुछ आगे जाकर के वृंदावन रोड पर बना हुआ है। पहले जहाँ प्रेम विद्यालय था—राजा महेंद्रप्रताप ने अपनी जमीन तो दान कर दी थी, बना भी दिया, लेकिन उसको चलाने के लिए बाबू संपूर्णानंद और आचार्य जुगलकिशोर, ब्रह्मचारी कृष्णचंद्र जैसे पहली श्रेणी के लोग आए, जिनका कि व्यक्तिगत चरित्र, ज्ञान नहीं, चरित्र और लगन उनमें थी। उन्होंने क्या काम किया कि प्रेम महाविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ने आते थे, उनमें ऐसी लगन फूँक दी, ऐसे प्राण फूँक दिए, ऐसी जान फूँक दी कि यू० पी० कांग्रेस का सारे-का-सारा काम सत्याग्रह के दिनों में उन्होंने किया। यू० पी० सत्याग्रह में, किसी जमाने में जब नमक सत्याग्रह प्रारंभ हुआ था तब पहली श्रेणी का था जिसमें कि इतने आदमी गिरफ्तार हुए, इतने आदमी जेल गए। इतने आंदोलन हुए। इस सबका श्रेय, ६० फीसदी श्रेय जो है, प्रेम महाविद्यालय के विद्यार्थियों को था, जो पहले साल में पढ़े, दूसरे

साल में पढ़े, तीसरे साल में पढ़े। उन पढ़े हुए विद्यार्थियों ने इतना हाहाकार मचा दिया कि गवर्नमेंट को प्रेम महाविद्यालय बंद कर देना पड़ा। जितने भी विद्यार्थी थे, चाहे वे सत्याग्रह कर रहे थे, चाहे नहीं कर रहे थे, प्रेम महाविद्यालय के सारे विद्यार्थियों को मकानों से पकड़-पकड़ करके जेल में बंद कर दिया कि इनको बागी बना दिया गया है।

दो उदाहरण, एक मैंने श्रद्धानंद का उदाहरण सुनाया, दूसरा मैंने प्रेम महाविद्यालय का उदाहरण सुनाया। लगन की बात कर रहा हूँ, आपसे लगनकी और आप से श्रद्धा की बात कह रहा हूँ। श्रद्धा और लगन, श्रद्धा और लगन। लगन आदमी के अंदर हो तो सौ गुना काम करा लेती है। इतना काम करा लेती है, इतना काम करा लेती है कि हमारे काम को देखकर आपको आश्चर्य होगा। इतना साहित्य लिखने से लेकर इतना बड़ा संगठन खड़ा करने तक और इतनी बड़ी क्रांति करने से लेकर इतने आश्रम बनाने तक जो काम शुरू किए हैं, वे कैसे हो गए? बेटा, यह श्रम है श्रम। यह हमारा श्रम है। यदि हमने श्रम से जी चुराया होता तो उसी तरीके से घटिया आदमी होकर के रह जाते जैसे कि अपना पेट पालना ही जिनके लिए मुश्किल हो जाता है। चोरी-ठगी से, चोरी-चालाकी से जहाँ-कहीं से मिलता पेट भरने के लिए, कपड़े पहनने के लिए और अपना मौज-शौक पूरा करने के लिए पैसा इकट्ठा करते रहते, पर इतना बड़ा काम संभव न होता।

तो क्या करना चाहिए? बेटे, मैं नहीं बताता हूँ। कैसे कहूँ आपको, देख लीजिए और हमको पढ़ लीजिए। हमारी श्रद्धा को पढ़ लीजिए। जिस दिन से हमने साधना के क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में कदम बढ़ाया, उस दिन से लेकर आज तक हमारी निष्ठा ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। इसमें कहीं एक राई-रत्ती, सुई के नोंक के बराबर फर्क नहीं आएगा। जिस दिन तक हमारी लाश उठेगी उस दिन तक आप कभी यह नहीं सुनेंगे

कि इन्होंने अपनी श्रद्धा डगमगा दी। इन्होंने अपने विश्वास में कमी कर दी।

आप हमारी वंश परंपरा को जानिए और हम मरने के बाद में जहाँ कहीं भी रहेंगे, भूत बनकर देखेंगे। हम देखेंगे कि जिन लोगों को हम पीछे छोड़कर आए थे, उन्होंने हमारी पंरपरा को निबाहा है और अगर हमको यह मालूम पड़ा कि इन्होंने हमारी परंपरा नहीं निबाही और इन्होंने व्यक्तिगत ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया और अपना व्यक्तिगत अहंकार, अपनी व्यक्तिगत यश कामना और व्यक्तिगत धन संग्रह करने का सिलसिला शुरू कर दिया। व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और जहाँ कहीं भी हम भूत होकर के पीपल के पेड़ पर बैठेंगे, वहाँ जाकर के हमारी आँखों से जो आँसू टपकेंगे, आपको चैन से नहीं बैठने देंगे और मैं कुछ कहता नहीं हूँ। आपको हैरान कर देंगे, हैरान। दुर्वासा ऋषि के पीछे भगवान का चक्र लगा था तो दुर्वासा जी तीनों लोकों में घूम आए थे, पर उनको चैन नहीं मिला था। आपको भी चैन नहीं मिलेगा। अगर हमको विश्वास देकर के विश्वासघात करेंगे, तो मेरा शाप है आपको कि आपको चैन नहीं पड़ेगा कभी भी और न आपको यश मिलेगा, न आपको ख्याति मिलेगी, न उन्नति होगी। आपका अध:पतन होगा। आपका अपयश होगा और आपकी जीवात्मा आपको मारकर डाल देगी। आप यह मत करना अच्छा!

मुझे अपने मन की बात कहनी थी सो मैंने कह दी। अब करना आपका काम है कि इन बताई हुई बातों को किस हद तक कार्य में लें और कहाँ तक चलें। बस ये ही मोटी-मोटी बातें थीं जो मैंने आपसे कहीं। बस मेरा मन हलका हो गया। अब आप इन्हें सोचना। मालूम नहीं आप इन्हें कार्य रूप में लाएँगे या नहीं लाएँगे। यदि लाएँगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और मैं समझूँगा कि आज मैंने जी खोलकर आपके सामने जो रखा था आपने उसे ठीक तरीके

से पढ़ा, समझा और जीवन में उतार करके उसी तरह का लाभ उठाने की संभावना शुरू कर दी जैसे मैंने अपने जीवन में की।

यह रास्ता आपके लिए भी खुला है, भले आप पीछे-पीछे आइए साथ आइए। हमको देखिए और अपने आपको ठीक करिए। बस आज की बात समाप्त।

(२५ मार्च १९८७)

बहुदेववाद का तत्त्वदर्शन

(मोंवासा, केन्या)

गायत्री मंत्र जिन-जिन लोगों को याद हो, कृपाकर हमारे साथ बोलें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।
भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तःस्थमीश्वरम्॥

गोस्वामी तुलसीदास जी जब रामायण का निर्माण करने लगे तो उनके मन में एक विचार आया कि इतना बड़ा ग्रंथ जिसके जहाज पर बिठा करके संसार के प्राणियों का उद्धार किया जा सकता है, उसे बनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? इसके लिए किस शक्ति की सहायता लेनी चाहिए? उन्होंने यह कहा कि भवानी-शंकर की वंदना करनी चाहिए और उनकी सहायता लेनी चाहिए। उनकी शक्ति के बिना इतना बड़ा रामचरितमानस, जिस पर बिठा करके अनेक मनुष्यों को भवसागर से पार किया जा सकता है, कैसे संभव होगा? उन्होंने भवानी और शंकर की वंदना की जैसे कि सायंकाल आरती के समय हमने और आप लोगों ने भगवान शंकर और पार्वती की वंदना की। पश्चात उनके जी में एक और विचार आया कि आखिर भगवान शंकर हैं क्या? शक्ति कहाँ से आ जाती है? क्यों आ जाती है? उद्धार कैसे हो सकता है। ऐसे अनेक

प्रश्न तुलसीदास जी के मन में उत्पन्न हुए। उनका समाधान भी उसी श्लोक में हुआ जिसका कि मैंने आप लोगों के सम्मुख विवेचन किया—'भवानी शंकरौ वंदे' भवानी और शंकर की हम वंदना करते हैं।

ये कौन हैं? 'श्रद्धा विश्वास रूपिणौ' अर्थात श्रद्धा का नाम पार्वती और विश्वास का नाम शंकर। श्रद्धा और विश्वास—इन दोनों का नाम ही शंकर-पार्वती है। इनका प्रतीक विग्रह, मूर्ति हम मंदिरों में स्थापित करते हैं। इनके चरणों पर अपना मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, आरती करते हैं। यह सब क्रिया-कृत्य हम करते हैं, लेकिन मूलतः शंकर क्या हैं? श्रद्धा और विश्वास। 'याभ्यां बिना न पश्यन्ति'—जिनकी पूजा किए बिना कोई सिद्ध पुरुष भी भगवान को प्राप्त नहीं कर सकते। भवानी शंकर की इस महत्ता और माहात्म्य पर मैं विचार करता रहा तब एक और पौराणिक कथा मेरे सामने आई।

पौराणिक कथा आती है कि एक संकट का समय था जब भगवान परशुराम को यह मालूम पड़ा कि सब जगह अन्याय, अत्याचार फैल गया, अनाचार फैल गया। इसके निवारण के लिए क्या करना चाहिए? परशुराम जी उत्तरकाशी गए और वहाँ भगवान शिव का तप करने लगे। तप करने के पश्चात भगवान शंकर ने उन्हें एक परशु दिया और कहा—अनीति का, अन्याय का और अत्याचार का इस संसार में से उच्छेदन किया जा सकता है और आपको करना चाहिए। भगवान शंकर की ऐसी महत्ता और ऐसी शक्ति का वर्णन पुराणों में पाया गया है, पर आज हम देखते हैं कि वह शक्ति कुंठित कैसे हो गई? हम शंकर की पूजा करते हैं, पर समस्याओं से घिरे हुए क्यों हैं? शंकर की शक्ति वरदान हो करके सामने क्यों नहीं आती? शंकर के भक्त होते हुए भी हम किस तरीके से पिछड़ते और पददलित होते चले जा रहे हैं? भगवान हमारी कब सहायता करेंगे? यह विचार मैं देर तक करता रहा।

अठारह पुराणों का अनुवाद मैंने संस्कृत से हिंदी में किया है। उसमें से शिवपुराण की एक कथा मुझे याद आई, जिसने हमारी शंका का समाधान कर दिया कि भगवान शंकर सहायता क्यों नहीं करते हमारी? क्यों नहीं उनकी शक्ति का लाभ मिलता? क्यों उनके चमत्कार हमें दिखाई नहीं पड़ते? जबकि शंकर भगवान के भक्त जिन्होंने क्या-से-क्या वरदान प्राप्त किए हैं, जो भी तप करने के लिए खड़ा हो गया वह न जाने क्या-से-क्या प्राप्त करता चला गया। हम और आप जैसे शिव उपासक उस शक्ति को प्राप्त न कर सकते हों, सो ऐसी बात नहीं, पर कहीं-न-कहीं चूक रह जाती है, कहीं-न-कहीं भूल रह जाती है। उस भूल को हमें निकालना ही पड़ेगा और निकालना ही चाहिए। इसके बिना अध्यात्म का पूरा लाभ नहीं मिल सकेगा और दुनिया के सामने हम सिर ऊँचा उठाकर यह नहीं कह सकेंगे कि हम ऐसी शक्ति के उपासक हैं, जो अपनी उँगली के इशारे से सारी दुनिया को हिला सकती है। तो गलती और चूक कहाँ हो गई? चूक और गलती वहाँ हो गई जहाँ भगवान शिव और पार्वती का असली स्वरूप हमको समझ में नहीं आया। उसके पीछे जो फिलॉसफी है वह समझ में नहीं आई, मात्र उसका बाहरी स्वरूप ही समझ में आ गया।

भगवान शंकर का भी एक कलेवर है और एक प्राण, एक बहिरंग स्वरूप है और अंतरंग स्वरूप। जब हम दोनों को मिला देंगे, तब पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तारों को मिला करके जिस तरीके से स्पार्क उठते हैं और करेंट चालू हो जाता है, उसी प्रकार से भगवान का करेंट चालू हो जाएगा। बहिरंग रूप के बारे में आप जानते हैं और जिस तक आप सीमित हो गए हैं, वह कलेवर है जो इस मंदिर में बैठा हुआ है। जिसके चरणों में हम मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, पूजा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, आरती उतारते हैं और जय-जयकार करते हैं—वह बहिरंग कलेवर है, जिसकी भी सख्त

जरूरत है, परंतु यही सब कुछ नहीं है। हमें अंतरंग रूप के बारे में भी जानना चाहिए।

भगवान शंकर का अंतरंग रूप क्या है? उसकी फिलॉसफी क्या है? भगवान शंकर का रूप गोल बना हुआ है। गोल क्या है—ग्लोब। यह सारा विश्व ही तो भगवान है। अगर विश्व को इस रूप में मानें तो हम उस अध्यात्म के मूल में चले जाएँगे, जो भगवान राम और कृष्ण ने अपने भक्तों को दिखाया था। गीता के अनुसार जब अर्जुन मोह में डूबा हुआ था तब भगवान ने अपना विराट् रूप दिखाया और कहा—यह सारा विश्व-ब्रह्मांड जो कुछ भी है, मेरा ही रूप है। एक दिन यशोदा कृष्ण को धमका रहीं थीं कि तैने मिट्टी खाई है। वे बोले—नहीं, मैंने मिट्टी नहीं खाई और उन्होंने मुँह खोलकर सारा विश्व-ब्रह्मांड दिखाया और कहा—यह मेरा असली रूप है। भगवान राम ने भी यही कहा था। रामायण में वर्णन आता है कि माता कौशल्या और कागभुसुंडि जी को उनने अपना विराट् रूप दिखाया था। इसका मतलब यह है कि हमें सारे विश्व को भगवान की विभूति, भगवान का स्वरूप मानकर चलना चाहिए। शंकर की गोल पिंडी उसी का छोटा-सा स्वरूप है, जो बताता है कि यह विश्व-ब्रह्मांड गोल है, एटम गोल है, धरती माता-विश्वमाता गोल है। इसको हम भगवान का स्वरूप मानें और विश्व के साथ वह व्यवहार करें जो हम अपने लिए चाहते हैं दूसरों से, तो मजा आ जाए। फिर हमारी शक्ति, हमारा ज्ञान, हमारी क्षमता वह हो जाए, जो शंकर भक्तों की होनी चाहिए।

भगवान शंकर के स्वरूप का कैसा-कैसा सुंदर चित्रण मिलता है। शिवजी की जटाओं में से गंगा प्रवाहित हो रही है। गंगा का मतलब है-ज्ञान की गंगा। पानी बालों में से प्रवाहित नहीं होता, यदि होगा तो आदमी डूब जाएगा, पैदल नहीं चल सकेगा। इसका मतलब यह है कि शंकर-भक्त के मस्तिष्क में से ज्ञान की गंगा प्रवाहित होनी चाहिए। उसकी विचारधारा उच्चकोटि की और उच्चस्तरीय

होनी चाहिए। घटिया किस्म के आदमी जिस तरीके से विचार करते हैं, जिनकी जिंदगी का मतलब केवल एक ही है कि किसी तरीके से पेट भरना चाहिए और औलाद पैदा करनी चाहिए, शंकर जी के भक्त को इस तरह के विचार करने वाला नहीं होना चाहिए। जो कोई ऊँची बात सोच नहीं सकते, देश की, समाज की, धर्म की, लोक-परलोक की बात, कर्तव्य-फर्ज की बात जिसकी समझ में नहीं आती, उनको इंसान नहीं हैवान कहेंगे और ज्ञान की गंगा जिन लोगों के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती है, उनका नाम शंकर का भक्त होता है। हमारे और आपके मस्तिष्क में से भी ज्ञान की गंगा बहनी चाहिए, जो हमारी आत्मा को शांति और शीतलता दे सकती है और पड़ोस के लोगों को, समीपवर्ती लोगों को उसमें स्नान कराकर पवित्र बना सकती है। यदि हमारा मस्तिष्क ऐसा व्यवहार करता हो तो जानना चाहिए कि शंकर जी की छवि आपने अपने घरों में टाँग रखी है, उसके मतलब को, उसकी फिलॉसफी को जान लिया और समझ लिया है।

भगवान शंकर के मस्तिष्क के ऊपर चंद्रमा लगा हुआ है। चंद्रमा शांति का प्रतीक है, जो बताता है कि हमारे मस्तिष्क को संतुलित होना चाहिए, ठंढा होना चाहिए, बलिष्ठ होना चाहिए। हम पर मुसीबतें आती हैं, संकट के, कठिनाई के दिन आते हैं। हर हालत में हमें अपनी हिम्मत बना करके रखनी चाहिए कि हम हर मुसीबत का सामना करेंगे। इंसानों ने बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना किया है। जो घबरा जाते हैं उनका मस्तिष्क संतुलित नहीं रहता, गरम हो जाता है। जिस व्यक्ति का दिमाग ठंढा है, वही सही ढंग से सोच सकता है और सही काम कर सकता है, पर जिसका दिमाग गरम हो जाता है, असंतुलित हो जाता है, तो वह काम करता है जो नहीं करना चाहिए और वह सोचता है जो नहीं सोचना चाहिए। मुसीबत के वक्त आज जब घटाएँ चारों ओर से हमारी ओर घुमड़ती हुई आ रही हैं, तब सबसे जरूरी बात है हम शंकर भगवान के

चरणों में जाएँ। आरती उतारने के बाद मस्तक झुकाएँ और यह कहें कि आपके मस्तक पर शांति का प्रतीक, संतुलन का प्रतीक, विभेद का प्रतीक चंद्रमा लटक रहा है। क्या आप हमको धीरज देंगे नहीं? संतुलन देंगे नहीं? क्या शांति नहीं देंगे? हिम्मत नहीं देंगे? क्या आप इतनी भी कृपा नहीं कर सकते? अगर हमने यह प्रार्थना की होती तो मजा आ जाता, फिर हम शांति ले करके आते और शंकर जी के भक्तों के तरीके से रहते।

शंकर भगवान के गले में पड़े हुए हैं काले साँप और मुंडों की माला। काले विषधरों का इस्तेमाल इस तरीके से किया है उन्होंने कि उनके लिए ये फायदेमंद हो गए, उपयोगी हो गए और काटने भी नहीं पाए। शंकर जी की इस शिक्षा को हर शंकर भक्त को अपनी फिलॉसफी में सम्मिलित करना ही चाहिए कि विषैले लोगों से किस तरीके से 'डील' करना चाहिए, किस तरीके से उन्हें गले से लगाना चाहिए और किस तरीके से उनसे फायदा उठाना चाहिए। शंकर जी के गले पर पड़ी मुंडों की माला भी यह कह रही है कि जिस चेहरे को हम बीस बार शीशे में देखते हैं, सजाने-सँवारने के लिए रंग-पाउडर पोतते हैं, वह मुंडों की हड्डियों का टुकड़ा मात्र है। चमड़ी, जिसे ऊपर से सुनहरी चीजों से रंग दिया गया है और जिस बाहरी टुकड़े के रंग को हम देखते हैं, उसे उघाड़कर देखें तो मिलेगा कि इंसान की जो खूबसूरती है उसके पीछे सिर्फ हड्डी का टुकड़ा जमा हुआ पड़ा है। हड्डियों की मुंडमाला की यह शिक्षा है, नसीहत है, मित्रो! जो हमको शंकर भगवान के चरणों में बैठकर सीखनी चाहिए।

शंकर जी का विवाह हुआ तो लोगों ने कहा कि किसी बड़े आदमी को बुलाओ, देवताओं को बुलाओ। उन्होंने कहा नहीं, हमारी बारात में तो भूत-पलीत ही चलेंगे। रामायण का छंद है— 'तनु क्षीन कोउ अति पीत पावन कोउ अपावन तनु धरे।' शंकर जी ने भूत-पलीतों का, पिछड़ों का भी ध्यान रखा और अपनी बारात में

ले गए। आपको भी इनको साथ लेकर चलना है। शंकर जी के भक्तो! अगर आप इन्हें साथ लेकर चल नहीं सकते तो फिर आपको सोचने में मुश्किल पड़ेगी, समस्याओं का समाना करना पड़ेगा और फिर जिस आनंद में और खुशहाली में शंकर के भक्त रहते हैं, आप रह नहीं पाएँगे। जिन शंकर जी के चरणों में आप बैठे हुए हैं, उनसे क्या कुछ सीखेंगे नहीं? पूजा ही करते रहेंगे आप। वह सब चीजें सीखने के लिए ही हैं। भगवान को कोई खास पूजा की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शंकर भगवान की सवारी क्या थी? बैल। वह बैल पर सवार होते हैं। बैल उसे कहते हैं जो मेहनतकश होता है, परिश्रमी होता है। जिस आदमी को मेहनत करनी आती है वह चाहे भारत में हो, इंग्लैंड, फ्रांस या कहीं का भी रहने वाला क्यों न हो, वह भगवान की सवारी बन सकता है। भगवान सिर्फ उनकी सहायता किया करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं। बैल हमारे यहाँ शक्ति का प्रतीक है, हिम्मत का प्रतीक है। आपको हिम्मत से काम लेना पड़ेगा और अपनी मेहनत तथा पसीने के ऊपर निर्भर रहना पड़ेगा, अपनी अकल के ऊपर निर्भर रहना पड़ेगा, आपके उन्नति के द्वार और कोई नहीं खोल सकता, स्वयं खोलना होगा। भैंसें के ऊपर कौन सवार होता है—देखा आपने शनीचर। भैंसा वह होता है जो काम करने से जी चुराता है। बैल हमेशा से शंकर जी का बड़ा प्यारा रहा है। वह उस पर सवार रहे हैं, उसको पुचकारते हैं, खिलाते-पिलाते, नहलाते-धुलाते और अच्छा रखते हैं। हमको और आपको बैल बनना चाहिए, यह शंकर जी की शिक्षा है।

भगवान शंकर मरघट में निवास करते हैं। मरघट में क्यों करते हैं? इसका मतलब है कि हमें जिंदगी के साथ मौत को भी याद रखना पड़ेगा। सब चीजें याद हैं, पर मौत को हम भूल गए। अपना फायदा-नुकसान, जवानी, खाना-पीना सब कुछ याद है, पर मौत जरा भी याद नहीं है? मौत की बात भी अगर याद रही होती तो

हमारे काम करने और सोचने के तरीके कुछ अलग तरह के रहे होते। वे ऐसे न होते जैसे कि इस समय आपके हैं। अगर यह ख्याल बना रहे कि आज हम जिंदा हैं, पर कल हमें मरना ही पड़ेगा; आज मरे हैं, पर कल जिंदा रहना ही पड़ेगा, तो यह स्मृति सदा बनी रहती कि हमको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। हमारे लिए मरघट और घर दोनों एक ही होने चाहिए। समझना चाहिए कि आज का घर कल मरघट होने वाला है और आज का मरघट कल घर होने वाला है। आज की जिंदगी कल मौत में बदलने वाली है, तो कल की मौत नई जिंदगी में बदलने वाली है। मौत और जिंदगी रात और दिन के तरीके से खेल हैं, फिर मरने के लिए डरने से क्या फायदा? यह नसीहतें हैं जो शंकर भगवान मरघट में रहकर के हमको सिखाते हैं।

भगवान शंकर न जाने क्या-क्या सिखाते हैं। उनके शरीर को देखा जाए तो मालूम पड़ेगा कि उस पर भस्म लगी हुई है और गले में मुंडों की माला पड़ी है। अगर सही ढंग से जीवन जीना आता होता तो हमने शंकर जी की भस्म का महत्त्व समझा होता। पूजा करने के बाद हम हवन करते और उसकी भस्म मस्तक पर लगाते हैं। इसका अर्थ है 'भस्मांतक ९ शरीरम्' यह शरीर खाक होने वाला है। यह शरीर मिट्टी और धूल है जो हवा में उड़ने वाला है। जिस शरीर पर हम लोगों को अहंकार और घमंड है, वह कल लोगों के पैरों तले कुचलने वाला है और हवा के धुर्रे की तरीके से आसमान में उड़ने वाला है। शंकर भगवान की यह फिलॉसफी अगर हमने सीखी होती तो मजा आ जाता।

शंकर भगवान की तीन आँखें हैं। दो आँखें तो सबकी होती हैं, पर शंकर जी की तीन आँखें क्यों बनाई गईं? शंकर भगवान की यह वह आँख है जो मनुष्य के 'विवेक' की आँख कहलाती है। यह तीसरी आँख आपके भी होती है। उन्होंने इसका इस्तेमाल तब किया जब कामदेव उन्हें हैरान करने और पाप में डुबाने के लिए

चला आ रहा था। जैसे ही शंकर भगवान ने तीसरी आँख खोली, कामदेव जलकर भस्म हो गया। रामायण में यह कथा आप लोगों ने पढ़ी होगी, पर यह गौर क्यों नहीं किया कि तीसरी आँख क्या है? कामदेव जलने की बात क्या है? जिन लोगों ने साइंस पढ़ी है वे 'थ्री डाइमेंसन' की बात समझते हैं—लंबाई, चौड़ाई और गहराई की बात जानते हैं। तीसरी आँख हमें गहराई में घुसने की बात सिखाती है। गहराई में हम घुसते नहीं, बाहर की चीजें देखते हैं। हमें दो चीजें दिखाई देती हैं—सुख और दुःख, लाभ और हानि। यही दो चीजें हैं जो दोनों आँखें दिखा सकती हैं। ये दुनियाबी आँखें हैं जो भगवान ने आपको दी हैं। शरीर क्या माँगता है? इंद्रियाँ क्या माँगती हैं? यह हम सबको मालूम है। एक और आँख भी है जो खुशहाली की बात दिखाती है। शंकर के हर एक भक्त को भी एक तीसरी आँख रखनी चाहिए और खोलनी चाहिए और वह है दूरगामी विवेकशीलता।

शंकर का भक्त जब अपने भगवान के चरणों में जाता है, तब वह देखता है कि उस ठप्पे पर मुझको भी अपने को ढालना चाहिए। शंकर भगवान क्या हैं—एक ठप्पा। ठप्पा उसे कहते हैं, जिसमें गीली मिट्टी चिपकाकर कुम्हार बरतन बनाता चला जाता है। शंकर भगवान के लिए पूजा और आरती ही काफी नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि उनका भक्त उनके जैसा हो जाए। उपासना का मतलब ही होता है, पास बैठना। पास बैठने का मतलब है—उनसे सीखना, उनके साथ संबंध जोड़ना। लकड़ी जब तक आग के समीप नहीं बैठती, अग्नि नहीं बन सकती। हमको शंकर भगवान के पास तक जाना पड़ेगा, दूर रहकर ही प्रणाम करने से काम चलने वाला नहीं है। शंकर जी से चिपक जाना चाहिए और अपने आपको ठप्पा बना लेना चाहिए। हमको अपनी तीसरी आँख खोलनी चाहिए और दूर की बात सोचनी चाहिए।

देवताओं की शिक्षाओं और प्रेरणाओं को मूर्तमान करने के लिए ही अपने हिंदू समाज में प्रतीक पूजा की व्यवस्था की गई है।

जितने भी देवताओं के प्रतीक हैं, उन सबके पीछे कोई-न-कोई संकेत भरा पड़ा है, प्रेरणाएँ और दिशाएँ भरी पड़ी हैं। अभी भगवान शंकर का उदाहरण दे रहा था मैं आपको और यह कह रहा था कि सारे विश्व का कल्याण करने वाले शंकर जी की पूजा और भक्ति के पीछे जिन सिद्धांतों का समावेश है हमको उन्हें सीखना चाहिए था, जानना चाहिए था और अपने जीवन में उतारना चाहिए था। लेकिन हम उन सब बातों को भूलते चले गए और केवल चिह्न पूजा तक सीमाबद्ध रह गए। विश्व कल्याण की भावना को हम भूल गए। जिसे 'शिव' शब्द के अर्थों में बताया गया है। 'शिव' माने कल्याण। कल्याण की दृष्टि रखकर के हमको कदम उठाने चाहिए और हर क्रिया-कलाप एवं सोचने के तरीके का निर्माण करना चाहिए। यह शिव शब्द का अर्थ होता है। कल्याण हमारा कहाँ है? सुख हमारा कहाँ है? लाभ नहीं वरन कल्याण हमारा कहाँ है? कल्याण को देखने की अगर हमारी दृष्टि पैदा हो जाए तो यह कह सकते हैं कि हमने भगवान शिव के नाम का अर्थ जान लिया। 'ॐ नमः शिवाय' का जप तो किया, लेकिन 'शिव' शब्द का मतलब क्यों नहीं समझा? मतलब समझना चाहिए था और तब जप करना चाहिए था, लेकिन हम मतलब को छोड़ते चले जा रहे हैं और बाह्य रूप को पकड़ते चले जा रहे हैं। इससे काम बनने वाला नहीं है।

हिंदू समाज के पूज्य जिनकी हम दोनों वक्त आरती उतारते हैं, जप करते हैं, शिवरात्रि के दिन पूजा और उपवास करते हैं और न जाने क्या-क्या प्रार्थनाएँ करते हैं। क्या वे भगवान शंकर हमारी कठिनाइयों का समाधान नहीं कर सकते? क्या हमारी उन्नति में कोई सहयोग नहीं दे सकते? भगवान को देना चाहिए, हम उनके प्यारे हैं, उपासक हैं। हम उनकी पूजा करते हैं, वे बादल के तरीके से हैं। अगर पात्रता हमारी विकसित होती चली जाएगी तो वह लाभ मिलते चले जाएँगे जो शंकर भक्तों को मिलने चाहिए।

शंकर भगवान के स्वरूप का जैसा कि मैंने आपको निवेदन किया, इसी प्रकार के सारे पौराणिक कथानकों, सारे देवी-देवताओं में संदेश और शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं। काश! हमने उनको समझने की कोशिश की होती, तो हम प्राचीनकाल के उसी तरीके से नर-रत्नों में एक रहे होते जिनको कि दुनिया वाले तैंतीस करोड़ देवता कहते थे। तैंतीस करोड़ आदमी हिंदुस्तान में रहते थे और उन्हीं को लोग कहते थे कि वे इंसान नहीं देवता हैं, क्योंकि उनके ऊँचे विचार और ऊँचे कर्म होते थे। वह भारत भूमि जहाँ से आप लोग पधारे हैं, वह देवताओं की भूमि थी और रहनी चाहिए। देवता जहाँ कहीं भी जाते हैं वहाँ शांति, सौंदर्य, प्रेम और संपत्ति पैदा करते हैं। आप लोग जहाँ कहीं भी जाएँ वहाँ आपको ऐसा ही करना चाहिए। आप लोगों ने जो अब तक मेरी बात सुनी, बहुत-बहुत आभार आप सब लोगों का।

ॐ शांतिः। *(१० दिसंबर १९७२)*

संजीवनी विद्या : बनाम जीवन जीने की कला

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! जानवर की एक विशेषता यह होती है कि उसे अपने पेट की हमेशा फिक्र बनी रहती है। जब वह जवान होता है तो उसे संतान पैदा करने का ख्याल आता है। दो के अलावा वह और कोई काम कर नहीं पाता और इंसान? इंसान देखने में तो वह जानवरों जैसा ही मालूम होता है, किंतु उसमें भावनाएँ पाई जाती हैं। वनमानुष, बंदर, लंगूर शायद आपने देखे हों, इनसे मिलता-जुलता है आदमी का देह। लेकिन उसकी विशेषता खास तौर से ये है कि उसमें भावनाएँ होती हैं। कहीं अकाल पड़ता है तो आदमी अपने अनाज के कोठों को खाली कर देता है। कहता है हम अकेले जीकर के

क्या करेंगे? बाकी लोग भी खाएँ तो क्या हर्ज है? यदि किसी के छप्पर में, मुहल्ले में आग लगे तो वह सबसे पहले दौड़ता है आग बुझाने के लिए। यह क्या है? यह हैं आदमी की भावनाएँ। दूसरों की सेवा के लिए दौड़ पड़ना, यह इंसानियत की एक ही परीक्षा है। अगर इस परीक्षा में फेल हो जाए तो जानना चाहिए कि शकल इंसान जैसी भले हो, पर है तो वास्तव में जानवर! जानवर !!

इस समय जिसमें आप हमारी बात सुन रहे हैं, ऐसा समय है जिसको सामान्य नहीं कह सकते। इसे असामान्य ही कहा जाएगा। वैसे आपका सूरज सवेरे निकलता है, शाम को अस्त हो जाता है। कुएँ से पानी निकालते हैं, चक्की से आटा पीसते हैं, चौके से खाना खा लेते हैं। समय मामूली-सा मालूम पड़ता है, लेकिन हम और आप विचारपूर्वक अगर इसका अंदाज लगाना चाहें तो मालूम पड़ेगा कि यह बहुत भयंकर समय है। इस भयंकर समय में तूफान भले ही न आते हों, आपके ऊपर घनघोर वारिश भले ही न होती हो, लेकिन संसार की निगाह से जरा लंबी दृष्टि फेंककर देखेंगे तो आपको यह मालूम पड़ेगा कि यह बहुत ही असाधारण समय है। इस समय में हवा में जहर-ही-जहर घुला हुआ है। जो सांस आप लेते हैं उससे आपके भीतर जहर चला जा रहा है और आपकी जिंदगी को रोज कम कर रहा है।

इस भयंकर समय में प्रत्येक आदमी के ऊपर मुसीबत छाई हुई है। थोड़े आदमियों के ऊपर नहीं बहुत आदमियों के ऊपर, सारे संसार के ऊपर। पानी गंदा हुआ जा रहा है। विकिरण बढ़ता जा रहा है। इससे बच्चे अपाहिज, लँगड़े-लूले पैदा हो रहे हैं। जनसंख्या की दृष्टि से आदमी किस कदर बढ़ता हुआ चला जा रहा है और खाने के लिए सामान कम पड़ता चला जा रहा है। आपने देखा, सुना? आपकी इतनी उमर हो गई? जिस भाव से आपको आज गेहूँ मिलता है, चावल, घी मिलता है, क्या आपने इससे पहले कभी सुना था? नहीं, कभी नहीं सुना था। यह मँहगाई बढ़ रही है। अभी

और बढ़ेगी। मुझे घटने की कोई सूरत नजर नहीं आती, वस्तुतः यह मुसीबत का समय है और आदमी पर मुसीबतें बढ़ती चली जा रही हैं, और बढ़ेंगी अभी।

यह ऐसा समय है जिसमें किसी को किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। आतंक और आशंकाओं से वातावरण चारों ओर से घिरा हुआ है। सड़क पर जब आप निकलते हैं तो मालूम नहीं कि आपके साथ पड़ोस में चलने वाला व्यक्ति आपके चाकू भोंककर कब आपकी संपत्ति छीन लेगा, इसका क्या विश्वास है ? इंसान का चाल-चलन, इंसान का विचार इतना गंदा-घटिया हो गया है कि यह स्थिति अगर बनी रही तो कोई किसी पर विश्वास नहीं करेगा, न भाई-भाई पर विश्वास करेगा, न स्त्री पुरुष पर विश्वास करेगी, न पुरुष स्त्री पर विश्वास करेगा। ऐसा गंदा, ऐसा वाहियात समय है यह। यह समय इसलिए भी घटिया और वाहियात है कि नेचर हमसे आप सबसे नाराज हो गई है। प्रकृति हमसे नाराज हो गई है। आज उसकी मौज आती है तो अंधाधुंध बरसा देती है और जब मूड आता है तो सूखा नजर आता है। कहीं मौसम का ठिकाना नहीं कि मौसम पर पानी बरसेगा कि नहीं, ठंढ के समय ठंढ ही पड़ेगी कि गरमी पड़ेगी, कोई नहीं कह सकता। भूकंप कब आ जाएँ कोई नहीं कह सकता। बाढ़ कब आ जाए कोई ठिकाना नहीं। नेचर हम सबसे बिलकुल नाराज हो गई है, इसलिए उसने काम करना बंद कर दिया है। यह ऐसा भयंकर समय है।

ऐसे भयंकर समय में क्या आपके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं है ? क्या आपके कोई कर्तव्य नहीं हैं ? क्या आपके अंदर भावनाएँ नहीं हैं ? क्या आपका हृदय पत्थर और लोहे का हो गया है ? नहीं मेरा ख्याल है कि सब आदमियों का ऐसा नहीं हुआ होगा। ज्यादातर लोगों का तो ऐसा ही हुआ है कि वे घटते-घटते जानवर के तरीके से बनते चले जा रहे हैं। जवान आदमी जब ज्यादा बुड्ढा हो जाता है, तो कमर झुकने लगती है, आँखें नीची हो जाती हैं, लाठी टेककर

चलता है। इंसान की जवानी चली जाती है तो वह बौना हो जाता है, घटिया हो जाता है, कमर झुक जाती है, उसका आसमान की ओर देखने का न मन होता है, न उसकी बनावट ही ऐसी रह जाती है कि वह ऊपर देखे। अधिकांश आदमी आज ऐसे हो गए हैं।

ऊपर की ओर सिर उठाकर देखेंगे, हमें आपसे यह उम्मीद है। यह उम्मीद है कि ऐसे भयंकर समय में अपना सारा वक्त केवल पेट पालने के लिए और संतान पैदा करने के लिए जाया नहीं करेंगे। अगर आप चाहें तो ढेरों समय बचा सकते हैं, बीस घंटे में अपना, अपने शरीर व कुटुंब का आराम से आप गुजारा कर सकते हैं। आठ घंटा काम करने के लिए, सात घंटा विश्राम के लिए और पाँच घंटा घरेलू काम के लिए। फिर भी चार घंटा आप समाज के लिए आई हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए, समय को ऊँचा उठाने के लिए, इंसान का भाग्य और भविष्य शानदार बनाने के लिए आप लगा सकते हैं। करना ही पड़ेगा यह आपको। इसमें तो नुकसान पड़ेगा? नहीं, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि नुकसान नहीं पड़ेगा। जिनने भी अपने समय को लोक सेवा में लगाया है, वे चाहे गांधी रहे हों या नेहरू, बिनोवा रहे हों या विवेकानंद किसी भी तरह वे नुकसान में नहीं रहे हैं। वे ऊँचा उठे हैं, आगे बढ़े हैं और उनने हजारों आदमियों को ऊँचा उठाया व आगे बढ़ाया है। स्वयं भी नफे में रहे हैं। वे नुकसान में रहे? क्या नुकसान में रहे आप बताइए? किसी एक का नाम तो बताइए।

गांधी जी ने वकालत की होती तो वकालत में कितना कमा लेते? लेकिन जब उन्होंने अपना समय सेवा में लगा दिया तो आप बताइए, क्या कमी रह गई उनके पास। उनने इस्तेमाल नहीं किया, यह उनकी इच्छा पर है। ब्राह्मण अपने लिए कभी इस्तेमाल नहीं करते। गांधी ब्राह्मण थे, बड़े शानदार आदमी थे और शानदार सिर्फ इसलिए कि उन्होंने अपने समय को पेट और जानवर के तरीके से नहीं, बल्कि इंसान के तरीके से खर्च किया।

यह समय ठीक ऐसा ही है। इस विषम समय में मेरी आप लोगों से प्रत्येक से यही प्रार्थना है कि आप अपने समय का थोड़ा अंश निकालें। हमने कितनी बार कहा व छापा है कि आप समयदान कीजिए। चंद्रमा पर ग्रहण जब पड़ता है तब कितने ही लोग आते हैं व पुकार करते हैं कि चंद्रमा पर ग्रहण पड़ा है, पुण्य कमाना हो तो दान करो। इस खराब समय में हमारी भी एक ही पुकार एक ही रट है—महाकाल की भी एक ही पुकार है। आप समय दीजिए, समय खरच कीजिए। किस काम के लिए? आप इस काम के लिए समय लगाइए जिससे आप लोगों के दिमागों और विचारों को ठीक कर सकें। इंसान के अंदर क्या है? वस्तुतः न हाड़ है, न मांस है, न मिट्टी, न पखाना, जो भी कुछ काम की चीज है, वह है विचार।

विचारों से ही अब्राहम लिंकन जैसे, जार्ज वाशिंगटन जैसे, गारफील्ड जैसे छोटे-छोटे इंसान कितने महान बन जाते हैं। विचार अगर मनुष्य के पास हों तो, आज अगर विचारशीलता और दूरदर्शी विवेकशीलता लोगों के अंदर आ गई होती तो दुनिया खुशहाल होती। इंसान, इंसान न रहकर देवता हो गया होता और जमीन का वातावरण स्वर्ग जैसा होता। पर विचारशीलता है कहाँ? समझदारी है कहाँ? अगर समझदारी बढ़ेगी तो आदमी के अंदर ईमानदारी बढ़ेगी, ईमानदारी बढ़ेगी तो आदमी में जिम्मेदारी आएगी और जिम्मेदारी आएगी तो बहादुरी आएगी। चारों चीजें एक साथ जुड़ी हुई हैं। समझदारी इसका मूल है। हमको लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए जी-जान से कोशिश करनी चाहिए। प्राचीनकाल के ब्राह्मण और संत यही काम करते थे। वे अपना गुजारा कम-से-कम में करते थे व जीवन का उद्देश्य यही रहता था कि लोगों की समझदारी बढ़ाएँ। आप लोगों से भी मेरी यही प्रार्थना है कि लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए अपने समय का जितना अंश आप लगा सकते हों, लगाएँ, दिमाग में से आप यह ख्याल निकाल पाएँ तो बड़ा अच्छा हो कि बहुत-सा पैसा इकट्ठा होना चाहिए। पैसा रहेगा नहीं। मैं एक

बात आपको बताए देता हूँ। अगले दिनों समाज की ऐसी व्यवस्था बनने वाली है जिससे कि धन व्यक्तिगत नहीं रह जाएगा। सच्चा अध्यात्मवाद आपको मालदार नहीं बनने देगा। चौबीसों घंटे आपका दिमाग व शक्तियाँ मालदार बनने की ख्वाहिश में लगते हैं तो आप गलती पर हैं आप ठीक कीजिए अपने आपको।

अपना गुजारा सामान्य मनुष्य जिस तरीके से करते हैं, आप भी उसी तरीके से गुजारा करना सीखिए। फिर आप देखेंगे कि आपके पास समय, श्रम, बुद्धि, क्षमताएँ कितनी ही चीजें बच जाती हैं, जो समाज के काम में लगाई जा सकती हैं। जरूरी नहीं कि आप अपना मकान छोड़कर बाहर चले जाएँ। आप अपने घर रहकर भी बहुत से काम कर सकते हैं, जिससे आपका क्षेत्र, आपका गाँव, आपके समीपवर्ती वातावरण में जाने कैसी हवा पैदा हो सकती है। कमाल हो सकता है। तो इसके लिए क्या करना पड़ेगा? इसके लिए मेरे ख्याल से आपको एक ट्रेनिंग लेनी चाहिए, छोटी-से-छोटी चीजों के लिए ट्रेनिंग की जरूरत पडती है। लुहार, संगीतज्ञ, रेलगाड़ी चलाने वाले, मोटर चलाने वाले, अध्यापक, चिकित्सक सभी को ट्रेनिंग लेनी पड़ती है।

ट्रेनिंग बड़ी आवश्यक है। विश्वामित्र राम व लक्ष्मण को उनके पिता से माँगकर ले गए थे और उनको ट्रेनिंग दी थी। काहे की ट्रेनिंग दी थी। बड़ी महत्त्वपूर्ण ट्रेनिंग थी। शिवजी का इतना भारी धनुष कैसे तोड़ा जाए? लंका में जो राक्षस रहते हैं, उनको किस तरीके से समाप्त किया जाए? रामराज्य की स्थापना कैसे की जाए? ये सारी बातें विश्वामित्र के आश्रम में जाकर सीखी थीं। ऐसी ही एक ट्रेनिंग की व्यवस्था हमने शांतिकुंज में की है, ताकि आप समाज में छाई असुरता से लड़ सकें। शांतिकुंज को पहले से भी हमारा तीस गुना करने का मन था, किंतु अब बहुत दिनों से नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय यही हमारे दिमाग में घूमते रहते हैं। हमें यही सपना आता रहता है कि नालंदा, जिसमें हजारों धर्म

प्रचारक तैयार किए गए थे एवं तक्षशिला जिसमें हजारों संस्कृति प्रचारक तैयार किए गए थे, यहाँ पर बने। धर्म का नाम तो मैं अब नहीं लूँगा। यह नाम बहुत बदनाम हो गया है। मैं समाज सेवा की बात आपसे कहूँगा। यह कहूँगा कि आपकी महानता की बुद्धि के लिए सेवा बेहद आवश्यक है और जब तक आप समाज की सेवा नहीं करेंगे, तब तक आप उन्नतिशील नहीं बनेंगे। आपकी आत्मा में संतोष और शांति का निवास नहीं होगा।

आत्मसंतोष के अलावा समाज का सहयोग व भगवान का अनुग्रह कैसे मिल सकता है ? शानदार जिंदगी कैसे जीनी चाहिए ? इसके लिए हमारे यहाँ ट्रेनिंग चलती है। ट्रेनिंग तो पहले भी चलती थी। नौ दिन की, पाँच दिन व एक माह की, पर अब हमने सारे-के-सारे शांतिकुंज को विश्वविद्यालय के रूप में परिणत कर दिया है। कानूनन तो यह विश्वविद्यालय नहीं है, क्योंकि विश्वविद्यालय के लिए जो खानापूर्ति की जाती है, वह बहुत बड़ी है। लेकिन पुराने समय में नालंदा में कोई खानापूरी नहीं हुई थी और न तक्षशिला में कोई खानापूरी हुई थी। ये गवर्नमेंट से कोई संबंधित नहीं हुए थे। हमारा यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार का है।

आज मनुष्य को जीना कहाँ आता है ? जीना भी एक कला है। सब आदमी खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं, किंतु जीना नहीं जानते। जीना बड़ी शानदार चीज है। इसको संजीवनी विद्या कहते हैं—जीवन जीने की कला। यहाँ हम अपने विश्वविद्यालय में, शांतिकुंज में जीवन जीने की कला सिखाते हैं और यह सिखाते हैं कि आज के गए-बीते जमाने में आप अपनी नाव पार करने के साथ-साथ सैकड़ों आदमियों को बिठाकर पार किस तरह से लगा पाते हैं ? नाव चलाना भी कला है। हम आपको नाव दे दें व आपको नदी के किनारे छोड़ दें, कहें कि आप जाइए तो इतने मात्र से आप नाव नहीं चला सकेंगे। कहीं लहरों के चक्कर में पड़ेंगे और बहते हुए चले जाएँगे। नाव को डुबो देंगे और आप भी

डूब जाएँगे। लेकिन अगर आपको ट्रेनिंग मिली हो तो आप सकुशल पार हो जाएँगे। हमने अपने जीवन के इस अंतिम समय में सारी हिम्मत और शक्ति इस बात में लगा दी है कि शांतिकुंज को हम एक विश्वविद्यालय बना देंगे। पाँच सौ व्यक्तियों के लिए हमने एक माह में शिक्षण देने की व्यवस्था की है। इतना बड़ा काम व मात्र एक महीना? हमने इसलिए बड़ा नहीं रखा क्योंकि हमको कम समय में एक लाख से अधिक सही जीवन जीने वाले आदमी तैयार करने हैं। हमने पाँच सौ आदमियों को प्रत्येक माह ट्रेंड करके स्वयं का महान और शानदार जीवन जीने के लिए शिक्षण देने का प्रबंध किया है। न केवल स्वयं का जीवन बल्कि समाज की सेवा का शिक्षण। न केवल समाज की सेवा बल्कि यह भी कि आज की समस्याएँ क्या हैं? गुत्थियों का हल और समाधान निकालने के लिए क्या कदम बढ़ाए जाने चाहिए और किस तरीके से काम करना चाहिए? यह सिखाने का प्रबंध क्या है।

एक और आपको अचंभा होगा। यहाँ बहुत दिनों से जब से यह आश्रम बना है, यहाँ के निवास के लिए, बिजली तो जलती है, कुएँ से पानी जो लेते हैं, उसके लिए किसी से कुछ भी नहीं लिया गया है। अब एक और हिम्मत बढ़ाई है। वह यह कि अब खाने की जिम्मेदारी भी हम अपने कंधों पर उठाएँगे, गरीब और अमीर दोनों के लिए हमने समान रूप से यह व्यवस्था की है कि यहाँ भोजन का अब कोई खर्च वसूला नहीं जाएगा। यदि कोई कहे कि हमने आपका खाया है, दान का पैसा है, ब्राह्मण का, साधु का पैसा है हम खाना नहीं चाहते तो हम कहेंगे कि मुट्ठी बंद करके दे जाइए हम रसीद काट देंगे आपकी। तो इस शिक्षण में यह नवीन विशेषता है कि अधिक-से-अधिक आदमी लाभान्वित हो सकें।

सरकारी स्कूलों-कॉलेजों में आपने देखा होगा कि वहाँ बोर्डिंग फीस अलग देनी पड़ती है। पढ़ाई की फीस अलग देनी पड़ती है,

लाइब्रेरी फीस अलग व ट्यूशन फीस अलग। लेकिन हमने यह हिम्मत की है कि कानी कौड़ी की भी फीस किसी के ऊपर लागू नहीं की जाएगी। यही विशेषता नालंदा-तक्षशिला विश्वविद्यालय में भी थी। वही हमने भी की है, लेकिन बुलाया केवल उन्हीं लोगों को है जो समर्थ हों, शरीर या मन से बूढ़े न हो गए हों, जिनमें क्षमता हो, जो पढ़े-लिखे हों। इस तरह के आएँगे तो ठीक है, नहीं तो अपनी नानी को, दादी को, मौसी को, पड़ोसन को लेकर के यहाँ कबाड़खाना इकट्ठा कर देंगे तो यह विश्वविद्यालय नहीं रहेगा? फिर तो यह धर्मशाला हो जाएगा। साक्षात नरक हो जाएगा। इसे नरक मत बनाइए आप। जो लायक हों वे यहाँ की ट्रेनिंग प्राप्त करने आएँ और हमारे प्राण, हमारे जीवट से लाभ उठाना चाहें उठाएँ, चाहे हम रहें या न रहें, वे लोग आएँ। प्रतिभावानों के लिए निमंत्रण है। बुड्ढों, अशिक्षितों, उजड्डों के लिए निमंत्रण नहीं है। आप कबाड़खाने को लेकर आएँगे तो हम आपको दूसरे तरीके से रखेंगे, दूसरे दिन विदा कर देंगे। आप हमारी व्यवस्था बिगाड़ेंगे? हमने न जाने क्या-क्या विचार किया है और आप अपनी सुविधा के लिए धर्मशाला का लाभ उठाना चाहते हैं? नहीं, यह धर्मशाला नहीं है। यह कॉलेज है। विश्वविद्यालय है। कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी है। हमारे सतयुगी सपनों का महल है। आप में से जिन्हें आदमी बनना हो, बनाना हो, इस विद्यालय की संजीवनी विद्या सीखने के लिए आमंत्रण है। कैसे जीवन को ऊँचा उठाया जाता है, समाज की समस्याओं को कैसे हल किया जाता है? यह आप लोगों को सिखाया जाएगा। दावत है आप सबको। आप सब में जो विचारशील हों, भावनाशील हों, हमारे इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। अपने को धन्य बनाएँ और हमको भी।

हमारी बात समाप्त। ॐ शांतिः।

(२२ अप्रेल १९८४)

युगशोधन हेतु मनीषा को निमंत्रण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! मुनष्य को भगवान के अनुदान अन्यान्य प्राणियों से भिन्न मिले हैं। सामान्य प्राणी दो काम कर पाते हैं। एक तो अपना पेट भर पाते हैं, दूसरा संतान पैदा कर पाते हैं। दो के अलावा और कोई पुरुषार्थ अन्य प्राणियों के जिम्मे नहीं है; किंतु दूसरी ओर, दूसरी ओर मनुष्य के जिम्मे कैसे-कैसे शानदार अनुदान मिले हैं। अन्य प्राणी तो एक छोटी-सी कल्पना रखते हैं जो ख्वाब के रूप में दिमाग में केवल एक सीमा तक ही काम आती है, जो शरीर की जरूरतों को पूरा करती है। उससे आगे उन्हें कोई चिंता नहीं होती। चिंतन की परिधि इन प्राणियों में उतनी ही है, जिससे कि शरीर की जरूरतें पूरी कर सकें, चारा इकट्ठा कर सकें, घास खा सकें, दौड़ सकें, बच्चे पैदा कर सकें। बस इससे ज्यादा चेतना नहीं है।

आदमी को अन्य प्राणियों की तुलना में क्या-क्या मिला? शरीर ऐसा शानदार मिला कि कलाकार ने अपनी सारी-की-सारी कला एक केंद्र पर खत्म कर दी, ऐसा मालूम पड़ता है। हाथ हमारा शानदार है कि मालूम पड़ता है कि प्रकृति ने इसे बड़ा सोच-समझकर मन लगाकर बनाया है। इतनी जगह से मुड़ने वाला, इतनी जगह से घूमने वाला, इतने तरह के काम करने वाला हाथ किसी अन्य प्राणी के हिस्से में नहीं आया। दिमाग के बारे में हम क्या कहें? आँखों के लिए क्या कहें? हर इंद्रिय के लिए क्या कहें? अनोखा प्राणी है मनुष्य। भगवान ने इस हाड़-मांस के जखीरे में एक ऐसी चेतना भर दी है जो अनोखी मालूम पड़ती है। बड़े

सौभाग्यशाली हैं हम व आप जो ऐसा शरीर धारण करने में समर्थ हो सके, सौभाग्यशाली सिद्ध हो सके। भगवान का अनुग्रह हम सब पर कि मनुष्य शरीर प्राप्त कर सके।

अगली वाली बात और थोड़ी सुरक्षित रखी है, जिसे पात्रता के अनुरूप भगवान दिया करते हैं। सब प्राणियों को नहीं, किसी-किसी को देते हैं, जिसे सुपात्र पाते हैं। पात्रता आपकी बढ़ेगी तो भगवान की चार नियामतें, चार विभूतियाँ आपको मिलती चली जाएँगी। एक विभूति का नाम है—ऋत। ऋत क्या है? ऋत उसे कहते हैं जिसमें कई कीमती चीजें जुड़ी हुई हैं, साजो-सुरक्षा, शालीनता-अंतःप्रेरणा। ऋत जिस किसी के हिस्से में आता है, वह अपना कल्याण करता है और अपना कल्याण करके वह सीमित नहीं रह जाता, समाज का उत्तरदायित्व सँभालता है, सारी मनुष्य जाति का मार्गदर्शन करता है और इस पृथ्वी पर खुशहाली लाता है। ऋत उस वर्ग के हिस्से में आता है जिसको हम सभी ब्राह्मण कहते हैं। ऋत उसे कहते हैं, जिसमें आदमी का चिंतन और जीवन देवोपम बन जाता है। वह अपने लिए कर्तव्यों का निर्धारण करता है। क्या निर्धारण करता है? 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'। हम पुरोहित अर्थात हम ब्राह्मण, हम संत, हम ऋषि यह उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं और यह घोषणा करते हैं कि 'वयं' अर्थात हम सब, 'राष्ट्रे' सारे राष्ट्र को, नागरिकों को, विश्व मानवता को, 'जागृयाम' जीवंत और जाग्रत रखे रहेंगे। जीवंत और जाग्रत रखने की जिम्मेदारी केवल एक ही वर्ग के लोगों की है, जिनका नाम है—ब्राह्मण। देवता और ब्राह्मण एक ही बात है। देवता आसमान में रहते हैं। देवता वे भी हैं, जिनके दिमाग आसमान में हैं। बाकी लोगों के दिमाग जमीन पर गड्ढे में, खड्डे-खंदक में रहते हैं। ब्राह्मण का दिमाग आसमान में रहता है। वह ऊँचा सोचता व ऊँचा ही चिंतन करता है, ऊँचा ही उसका लक्ष्य होता है। ऊँची ही उसकी विचारणा होती है। वैसे ही देव होते हैं। देव ऋत को पा करके, भगवान का

अनुग्रह पा करके अपना कल्याण करते हैं और समाज का हित भी साधते हैं।

'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत' ऋत से सत्य की, सत्य से तप की उत्पत्ति होती है और तप से गरमी की उत्पत्ति होती है, जिससे दिन और रात पैदा होते हैं, जिससे संसार की व्यवस्था पैदा होती है। यह भगवान का अनुग्रह आप में से किन-किन के हिस्से में आया, पता नहीं। पर यह जिस किसी के भी हिस्से में आया होगा, उसे ही बुद्धिजीवी कहेंगे। जो भी सुशिक्षित हैं, बुद्धिजीवी हैं, उनको अगर भगवान का प्यार मिल जाता है तो पहले मिलता है ऋत। ऋत से वे पहले अपना उद्धार करते हैं और फिर सारे विश्व का उद्धार करते हैं।

दूसरा वाला अनुदान दूसरी श्रेणी के लोगों को मिलता है। उसका नाम है—शौर्य और साहस। तीसरा अनुदान है—साधन और चौथे का नाम है—श्रम। वर्णाश्रम व्यवस्था के हिसाब से यही चार प्रकार के वर्गीकरण हैं। भगवान के अनुदान एक के बाद एक मिलते हैं। जिनके हिस्से में पराक्रम है, शौर्य है, साहस है, हिम्मत है, वे दुनिया में अपने तरीके से काम करते हैं। कोलंबस के तरीके से, नेपोलियन के तरीके से, सिकंदर के तरीके से भौतिक दुनिया में बहुत काम कर जाते हैं और आध्यात्मिक जगत में फरहाद से लेकर मीरा तक व विवेकानंद से लेकर दयानंद तक जाने क्या-से-क्या कर डालते हैं। वे गजब कर देने वाले प्राणी साहसी कहलाते हैं। साहसी को क्षत्रिय कहते हैं। तीसरे वर्ग के पास संपदाएँ रहती हैं और चौथा वर्ग श्रमिक जो अपने पसीने से, अपनी मेहनत-मशक्कत से दुनिया को खूशहाल बना देते हैं।

आदिकाल में दुनिया कैसी रही होगी? आरंभ में शायद वह ऊबड़-खाबड़ रही होगी, जैसी कि चंद्रमा की खबर लेकर वैज्ञानिक आए हैं। एक इंसान ही रहा होगा, जिसने अपनी मशक्कत से अपनी मेहनत से इस जमीन को समतल किया होगा।

इसी तरह से जानवरों को जो उच्छृंखलों के तरीके से, अस्त-व्यस्तों के तरीकों से हानि पहुँचाते हैं-प्यार से, सहकारिता से, डरा-धमका करके मनुष्य का सहयोगी बनाया होगा। उसकी मशक्कत ने ही दुनिया में तरह-तरह की नई चीजें लाकर खड़ी कर दीं। इमारतें बनाने से लेकर घर, कपड़ा बनाने से लेकर अन्न उपजाने तक यह आदमी का श्रम है। श्रम का अनुदान मिलने से आदमी निहाल हो गया।

ताकत दूसरे प्राणियों में भी है, पर वे श्रम नहीं कर सकते। नियोजित श्रम उनके पास नहीं है। हाथी के पास, घोड़े के पास ताकत है, पर वह उस ताकत का उपयोग नहीं कर पाता। पर इंसान अपनी ताकत का जानकार है, उसका उपयोग कर सकता है और यह भगवान का अनुदान है और इसी से वह साधन पाता है।

आदमी की बुद्धि का श्रेष्ठतम भाग—ऋत। यह ऋत यदि आदमी को मिल जाए तो बुद्धि सार्थक हो जाती है, विद्या सार्थक हो जाती है, प्रज्ञा सार्थक हो जाती है और मनुष्य की जिंदगी सार्थक हो जाती है। जिनमें से कुछ को भगवान ने शिक्षा दी है, वे आप मेरे समक्ष बैठे हैं। अब कमी एक ही रह जाती है कि इस सीप में कहीं से स्वाति की बूँदें टपक जाएँ, जिनके पास दिमाग है, शिक्षा है, उनके अंदर श्रद्धा की, स्वाति की बूँदें गिर जाएँ तो आप ऋषि हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं। यह अकल का दुर्भाग्य है कि वह पेट भरने के काम आज आती है। उससे भी अधिक दुर्भाग्य आदमी का यह है कि यह अकल जाल बुनने के काम आती है, वाक्पटुता के काम आती है व दूसरों को धोखा देने का कुचक्र रचने के काम आती है। अकल से जो हम कमाते हैं, तो क्या बताएँ आपको कि हम उसे कहाँ खरच करते हैं? अकल की कीमत बाजार में ज्यादा मिलनी चाहिए। मिलती भी है। लेकिन उस मिलने के बाद हम करते क्या हैं? न जाने कहाँ से उसे खरच कर देते हैं। ऐसे में ईश्वरचंद्र विद्यासागर हमारे सामने

आकर खड़े हो जाते हैं और बताते हैं कि अकल की कमाई कहाँ खरच होनी चाहिए।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर को उन दिनों जो वेतन मिलता था, उन्होंने कहा, उसमें से हमें औसत नागरिक के गुजारे की हैसियत से पचास रुपये से अधिक नहीं चाहिए। उन्होंने अपने खानदान वालों को बुलाया और यह कहा कि हिंदुस्तान में जिस मुल्क में हम पैदा हुए हैं, उस स्तर के मुताबिक हमें अपने पर व कुटुंब पर इससे अधिक खर्च नहीं करना चाहिए। बाकी जो वेतन बचेगा उसे हम अन्य कामों में खरच करेंगे, जैसा कि भावनाशीलों, विचारशीलों को करना चाहिए। आपकी अकल भी उसी तरह खरच होनी चाहिए जिस तरह से ईश्वरचंद्र विद्यासागर की हुई। उनके दिल में दरद था। उनके भीतर था—ऋत। ऋत उसे कहते हैं जिसमें शिक्षा की सार्थकता छिपी होती है। आप कौन हैं? आप वकील हैं तो अच्छा, करते क्या हैं? सवेरे से शाम तक झूठ बोलते हैं व बुलवाते हैं। फरेब करते हैं व करवाते हैं। इसी अकल से पेट भरते हैं। ऐसे पेट के ऊपर लानत है। ऐसे पेट को फट जाना चाहिए। जो पेट आदमी की अकल की कमाई से देश के लिए, धर्म के लिए, इंसानियत के लिए, भगवान के लिए गुनाह कराता हो ऐसे पेट को आग लग जानी चाहिए।

मित्रो! यह ब्राह्मण के लिए लानत की बात है, शर्म की बात है। भगवान के दिए अनुदानों का सबको इस्तेमाल करना चाहिए। दूसरे लोग यदि अपनी अकल का इस्तेमाल न कर सकें तो कम-से-कम ब्राह्मण को तो करना ही चाहिए। दिमाग अगर खराब हो जाएगा, अकल अगर खराब हो जाएगी तो शरीर का क्या होगा? जिस समाज में, जिस देश में, जिस युग में, दिमाग ब्राह्मण अस्त-व्यस्त हो जाता है, तब उस देश की मुसीबत आती है। दूसरे लोग जब गड़बड़ा जाते हैं तो डाकू या उठाईगीरे बन जाते हैं और क्या करेंगे? गुंडे की सामर्थ्य बस सामान उठाने, मारपीट करने, हत्या करने तक की है, किंतु जब

ब्राह्मण बागी हो जाता है तो वह ब्रह्मराक्षस बन जाता है। अतः ब्रह्मराक्षस होने की लानत अपने सिर पर ओढ़ने से हमें इंकार करना आना चाहिए और समय रहते चेत जाना चाहिए।

युग की पुकार है कि ब्राह्मण जगे। आप कौन हैं? हम तो कायस्थ हैं। भई यहाँ वंश परंपरा का जिक्र नहीं हो रहा है, विचार पंरपरा की दृष्टि से आप जहाँ बुद्धिजीवी हैं, वहाँ आप एक ऐसी परंपरा के अनुयायी भी हैं, जो आदमी को उसके कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों की जानकारी कराती है। यदि ऐसा न होता तो आप हमसे क्यों जुड़ते? मैं सोचता हूँ कि आपके भीतर कहीं-न-कहीं ऋत है। ऋत जो भगवान का सबसे बड़ा अनुदान है। हमारे व आपके लिए एक बहुत बड़ा काम करने को पड़ा है। काम यह है कि जो कुछ भी विचार का क्षेत्र हमारे सामने फैला पड़ा है, इसके भीतर से इसके अध्यात्म को हम निचोड़ें। हमको साइंस की साइंस ढूँढ़नी है। वह मूल ढूँढ़ना है जिन सिद्धांतों को लेकर के आदमी ने साइंस बनाने व बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाया। यह दोनों काम किए बिना इतने बड़े बुद्धि के जंजाल को काट सकना हमारे लिए संभव न हो सकेगा। बुद्धि का जंजाल, बुद्धि का भ्रम इतना बढ़ गया है कि क्या कहूँ मैं आप से। बुद्धि के ऊपर से पड़े आवरण इतने ज्यादा कँटीले, इतने ज्यादा गहरे, इतने ज्यादा विषैले हैं कि इनकी काट-छाँट करने के लिए हमको बड़े ऑपरेशन की जरूरत पड़ेगी। कैंसर का ऑपरेशन करने के लिए मामूली चाकू काम नहीं आते। अंदर लेसर किरणों से लेकर रेडियो आयसोटोप तक का इस्तेमाल करना पड़ता है और फूँक-फूँककर कदम रखना होता है। फिलॉसफी की फिलॉसफी, नीतिशास्त्र का नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान का विज्ञान हम गढ़ना चाहते हैं, पर यह कठिन काम है। ऑपरेशन जितना कठिन।

अगला हमारा काम है—धर्मों का धर्म ढूँढ़ना। वह जो चार सौ करोड़ मनुष्यों में से अधिकांश के सिर पर हावी है। मैं सोचता हूँ कि तीन सौ करोड़ के ऊपर धर्म है। सौ करोड़ मनुष्य ऐसे हैं, जो

धर्म की लापरवाही करते हैं और बाद में परवाह नहीं करते। जो धर्म से नाखुशी जाहिर नहीं करते उनको मैं मानता हूँ कि उन्हें धर्म की अहमियत समझ में आ गई है। वे धर्म को समझते हैं। धर्म हेतु, विश्व धर्म की व्याख्या हेतु हमें आस्तिकता का, ईमान का प्रतिपादन करना होगा। धार्मिकता का, धर्मनिष्ठा, कर्तव्य परायणता का प्रतिपादन करना होगा। इसके लिए बुद्धिवाद का सहारा लेना होगा। तर्क और दलीलों को हम रोक नहीं सकते। बुद्धिवाद को हम सीमित नहीं कर सकते। आदमी के भीतर से जब तर्क का माद्दा उत्पन्न होता है तो अंकुश लगाना कठिन हो जाता है।

तर्क-दलील आज के जमाने की सबसे अच्छी व सबसे वाहियात चीज है। अच्छी क्यों? क्योंकि उसमें सत्य को ढूँढ़ निकालने की सामर्थ्य है, संभावना है। वाहियात क्यों? क्योंकि दलील के पीछे अगर अंकुश न हो, नियंत्रण न हो तो यह सब कुछ कर सकती है। दलील आप किसी भी पक्ष में दे सकते हैं। संस्कृत की एक पुस्तक है जो एम० ए० में पढ़ाई जाती है—'न्यायकुसुमांजलि'। उसमें यह बताया गया है कि दलील कैसे दी जाती है, बहस कैसे की जाती है? बहस में यह भी किया जा सकता है और यह भी। उनने दो टॉपिक लिए हैं—एक ईश्वर है, दूसरा ईश्वर नहीं है। दोनों पक्षों में जोरदार बहस होती है। अंत में दलील देने के बाद यह लिखा है कि हमने तो बहस करने का तरीका सिखाया है। आप यह विचार मत करना कि पुस्तक का लेखक नास्तिक है या आस्तिक।

दलील कुछ भी दी जा सकती है। उलटी भी हो सकती है, सीधी भी हो सकती है, निकम्मी-से-निकम्मी, बेहूदी-से-बेहूदी, पाजी-से-पाजी बातों के पक्ष में दलील पेश की जा सकती है। दलील ने ही स्वच्छंद यौनाचार का पक्ष लिया है। दलील इतनी स्वेच्छाचारी है कि वह कभी फ्रायड का समर्थन करती है तो कभी अस्तित्ववाद के लिए कामूँका और नीत्से के तरीके से नास्तिकवाद

का। यह अकल, यह दलील निरंकुश होने पर न जाने क्या कर सकती है। मित्रो! हमें यदि चार सौ करोड़ व्यक्तियों का भाग्य बनाना है, नया युग गढ़ना है तो हमें दलील की माँ को पकड़ना होगा। अकेले दलील से काम नहीं चलेगा। चोर की मौसी को गिरफ्तार करना होगा। अकल का, दिमाग का बहुरूपिया न जाने कैसे-कैसे वेश बदलकर हमें परेशान कर रहा है। हमें इस बहुरूपिये की जन्मदात्री को पकड़ना होगा। तभी यह ठीक हो सकती है।

शोध प्रसंग में दो बातों के बारे में हमें गंभीर होना पड़ेगा। आए दिन हमें जहाँ कहीं दो बोर्ड दिखाई देते हैं। एक बोर्ड है—'योगा' एवं दूसरा है—'शोध-रिसर्च'। योगा सबसे बेहूदा मखौल है अध्यात्म का। गली-गली में योगा के नाम पर आश्रम खुले हुए हैं। इनसे पूछो कि योग का क्या मतलब है तो दाँत निकाल देंगे। क्या योग मात्र सर्वांगासन होता है, डीप ब्रीदिंग होता है, हाथ-पैर चला लेना होता है, मेडीटेशन होता है? बंदूक चलाने वाले, मैस्मेरिज्म करने वाले, चिड़िया मारने वालों में, सबमें मेडीटेशन होता है, यदि मेडीटेशन अकल इकट्ठी करने का नाम है। खबरदार! योगा अलग है और मेडीटेशन अलग है। योगा-योगा जहाँ देखो मखौल के लिए इन्हें और चीज नहीं मिली, जो योग को योगा बना दिया। दूसरे हर किसी को रिसर्च करते देख सकते हैं, शोध करते देख सकते हैं आप। गली-गली में रिसर्च करने वाले, गली-गली में शोध संस्थान। शोध से कम में कोई बात ही नहीं करना चाहता। भाई साहब, हमारे दिमाग में बड़ी चीजें हैं। हम शोध का मजाक नहीं बनाना चाहते। बड़ी चीज के लिए बड़ा सामान इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।

फिलहाल आपको एक छोटा-सा काम सुपुर्द करते हैं। इंटेलिजेंशिया जिस काम के लिए अभी बदनाम हैं, आप उस बदनामी को मिटाएँ। हर व्यक्ति जो इंटेलिजेंशिया से जुड़ा है, कहता है हम तो व्यस्त हैं। कुल दो घंटे स्कूल या कॉलेज में पढ़ाकर आते

हैं व कहते हैं कि हम बिजी हैं। गप्पें हाँकते रहते हैं व कहते हैं कि हम व्यस्त हैं। यह झूठी बहानेबाजी की बातें हैं।

आप यह देखें कि ऋत के धारणकर्ता होने के नाते प्रज्ञा के विस्तार की आप पर जो जिम्मेदारी है, उसको निभाकर ही आप समाज के आप पर चढ़े ऋण को उतार सकते हैं। भगवान का, विश्वमानव का आप पर ऋण है। इसके लिए पहली बात समय से चलती है। समय के साथ काम में तन्मय होने की कला। व्यस्तता इसे कहते हैं कि आदमी इस कदर लक्ष्य में तन्मय हो जाता है कि उसे समय का कोई ख्याल नहीं रहता। आप युग अनुसंधान, मानव धर्म की खोज, विज्ञान, अध्यात्म की शोध के विषय में गंभीर हैं, तो आप बात वहाँ से शुरू कीजिए जहाँ से आपको टाइम देना पड़ेगा। यदि दे सकें तो समुद्र मंथन कीजिए। कभी देवता व असुरों ने मंथन किया था। देवता कौन? विचारणा, श्रद्धा, सद्भावना, आदर्श तथा दैत्य कौन? दैत्य कहते हैं 'जाइंट' को शक्तियों को। दोनों ने परस्पर लड़ाई-झगड़ा करने की अपेक्षा समुद्र को मथना आरंभ किया। भगवान मदद के लिए आ गए व कच्छपावतार के रूप में मंदराचल के नीचे उन्होंने स्वयं को लगा दिया। मथने के लिए शेष नाग आ गए व फिर विष निकला जिसे नीलकंठ प्रलयंकर महादेव ने धारण किया। तत्पश्चात चौदह रत्न निकलते चले गए, जिसमें लक्ष्मी व अमृत भी थे। जो काम हम और आप करने चले हैं, उसकी उपमा समुद्र मंथन से दें तो कोई गजब की बात नहीं है।

समुद्र बहुत विशाल है। हमारा विचार परिकर बहुत विस्तृत है, समुद्र के तरीके से। यदि हम इसमें गोते लगा सकें तो बहुमूल्य मणि-माणिक्य इसमें से निकल सकेंगे। आप अपनी बुद्धि का सही उपयोग करके, समय देकर अपने सही अर्थों में बुद्धिजीवी होने का प्रमाण दीजिए। आप पर सारे समाज का, युग का एक ऋण चढ़ा है, महती दायित्व है। उसे निभाइए। बताइए विज्ञान का विज्ञान और अध्यात्म का अध्यात्म। तभी तो दोनों मिल सकेंगे। अगली पीढ़ी

को महामानव बनाने के लिए इससे कम स्तर के पुरुषार्थ से काम नहीं चलने वाला। हम बड़ा काम ही सोचते हैं, व करते हैं। क्या करना है हमें ? हमें सूरज को, चंद्रमा को धरती पर लाना है, जिससे इंसान निहाल हो जाए। आपने वैभव-विलास की जेल में बहुत जीवन बिता लिया। आप समय दीजिए व अपनी अकलमंदी का सही प्रमाण देकर युगशोधन में खपिए, अपने को पूरी तरह लगा दीजिए। ज्ञान की जो धारा है, उसे अपने साथ ले जाइए व पूरे समाज में प्रवाहित कीजिए। बस यही करना है आप सबको।

मेरी बात समाप्त। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

(२३ नवंबर १९७९)

युग मनीषा जागे तो क्रांति हो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो!

अब्राहम लिंकन ने पार्लियामेंट की मेज पर एक बौनी-सी महिला को खड़ा कर परिचय देते हुए कहा—"यह महिला वो है, जिसने मेरे संकल्प को पूरा करके दिखा दिया।" अब्राहम लिंकन ने अपनी आत्मा व अपने भगवान के सामने कसम खाई थी कि हम अमेरिका पर से एक कलंक हटाकर रहेंगे। कौन-सा कलंक ? कलंक यह कि अमेरिका के दक्षिणी भाग में नीग्रो लोगों को गुलाम बनाकर उनसे जानवर के तरीके से काम लिया जाता था। कानून मात्र गोरों की हिमायत करता था। ऐसी स्थिति में एक महिला लिंकन की कसम को पूरा करने उठ खड़ी हुई। उसका नाम था—हैरियट स्टो। लिंकन ने पार्लियामेंट के मेंबरों से कहा—"यही वह महिला है जिसकी लिखी किताब ने अमेरिका में तहलका मचा दिया। लाखों आदमी फूट-फूटकर रोए हैं। लोगों ने कह दिया

जो लोग ऐसे कानून को चलाते हैं, इस तरह जुलम करते हैं, हम उनसे लड़ेंगे।''

आप क्या समझते हैं नीग्रो व नीग्रो की लड़ाई की बात लिंकन कह रहे थे। नहीं, नीग्रोज के पास न हथियार थे, न ताकत। उनके पास तो आँसू-ही-आँसू थे। वे तो रो भर सकते थे। लड़ाई गोरों व गोरों में हुई। उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका में गृहयुद्ध हो गया। इतना खौफनाक युद्ध हुआ कि व्यापक संहार हुआ, पर इसका परिणाम यह हुआ कि कालों को उनके अधिकार मिल गए। इतना बड़ा काम इतना बड़ा विस्फोट करा देने वाली महिला थी—हैरियट स्टो, जिसने किताब लिखी थी—'अंकल टाम्स कैबिन' टाम काका की कुटिया।

एक छोटी-सी महिला के अंत:करण की पुकार से लिखी गई इस किताब ने जन-जन के मर्म को, अंत:करण को छुआ और अमेरिका ही नहीं, सारे विश्व में तहलका मचा दिया। हर आदमी ने इसे पढ़ा और कहा कि जहाँ ऐसे जुल्म होते हैं, इंसान, इंसान पर अत्याचार करता है, हम उसे बरदाश्त नहीं करेंगे और उसे उखाड़ फेकेंगे। लिंकन ने कसम तो खाई थी पर वे अकेले कुछ कर नहीं सकते थे, क्योंकि उनके पास गोरों का शासन तंत्र था। कालों का कोई हिमायती नहीं था। उनका हुकुम किस पर चलता? पर उस महिला की लिखी उस किताब ने हर नागरिक के दिल में ऐसी आग पैदा कर दी, ऐसी टीस पैदा कर दी कि आदमी कानून को अपने हाथ में लेकर दूसरे आदमियों को ठीक करने पर आमादा हो गया। गृहयुद्ध तब समाप्त हुआ जब वह कानून खत्म हो गया और सबको समान अधिकार दिला दिए गए।

क्या किताब ने यह क्रांति की? अरे, 'किताब' नहीं 'दर्शन।' किताब की बात नहीं कहता मैं आपसे। मैं कहता हूँ—दर्शन। दर्शन अलग चीज है। विचार बेहूदगी का नाम है जो अखबारों में, नॉवलों

में, किताबों में छपता रहता है। विचार हमेशा आदमी के दिमाग पर छाया रहता है। कभी खाने-कमाने का, कभी खेती-बाड़ी का, कभी बदला लेने का, यही विचार मन पर छाया रहता है और दर्शन, वह आदमी के अंतरंग से ताल्लुक रखता है। जो सारे समाज को एक दिशा में कहीं घसीट ले जाने का काम करता है, उसको दर्शन कहते हैं। आदमी की जिंदगी में, उसकी संस्कृति में सबसे मूल्यवान चीज का नाम है—दर्शन। हिंदुस्तान की तवारीख में जो विशेषता है, आदमी के भीतर का भगवान क्या जिंदा है, यह किसने पैदा किया? दर्शन ने। इतने ऋषि, इतने महामानव, इतने अवतार किसने पैदा कर दिए? यह है दर्शन जो आदमी को हिला देता है, ढाल देता है, गला देता है, बदल देता है। हमारी दौलत नहीं, दर्शन शानदार रहा है। हमारी आबो-हवा नहीं, शिक्षा नहीं, दर्शन बड़ा शानदार रहा है। इसी ने आदमियों को ऐसा शानदार बना दिया कि यह मुल्क देवताओं का देश कहलाया जाने लगा। दूसरी उपमा स्वर्ग से दी जाने लगी। स्वर्ग कहाँ रहेगा? जहाँ देवता रहेंगे। देवता ही स्वर्ग पैदा करते हैं। इमर्सन ने बहुत सारी किताबें लिखी हैं और प्रत्येक किताब के पहले पन्ने पर लिखा है—"मुझे नरक में भेज दो, मैं वहीं स्वर्ग बनाकर दिखा दूँगा।" यह है दर्शन। आज की स्थिति हम क्या कहें मित्रो! हम सब के दिमाग पर एक घिनौना तरीका, छोटा वाला तरीका, नामाकूल तरीका हावी हो गया है। हमारे सोचने का तरीका इतना वाहियात कि सारी जिंदगी को हमने, हीरे-मोती जैसी जिंदगी को हमने खत्म कर डाला। आदमी की ताकत, विचारों की ताकत को हमने तहस-नहस कर दिया। हमें कोढ़ी बना दिया। कसूर किसका है? सिर्फ एक ही कमी है, वह है आदमी का दर्शन। वह कमजोर हो गया है।

आज आदमी की सभ्यता सिर्फ एक है। उसका नाम है दर्शन की भ्रष्टता। उसके पास चीजों की कमी नहीं है। आदमी के पास

जरूरत से ज्यादा चीजें हैं, पर मुझे ये लगता है कि आदमी इनको खा भी सकेगा कि नहीं, हजम भी कर सकेगा कि नहीं। आदमी का दर्शन घिनौना हो जाने की वजह से इतनी ज्यादा चीजें होते हुए भी मालूम पड़ता है कि बहुत कम हैं। गरीबी उसके ऊपर हावी हो गई है। परिस्थितियाँ, दरिद्रता, मुसीबतें उसके दर्शन के कारण उस पर हावी हो गई हैं। दर्शन सारे व्यक्तियों का, सारे समाज का, सारे विश्व का भ्रष्ट होता चला गया है और आदमी दुष्ट होता चला गया है। दुष्टों को पकड़ना, रोकना व मारकर ठीक करना चाहिए। मच्छरों को मारना चाहिए, पर एक-एक मच्छर को मारने के पहले उस गंदगी से निपटना चाहिए जो मच्छर पैदा करती है। हम मच्छर-मक्खी मार नहीं सकते। हम समस्याओं को कैसे मार पाएँगे? समस्याएँ आदमी के सड़े हुए दिमाग में से पैदा होती हैं, सड़े हुए दिल में से पैदा होती हैं। पैसे वाले बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं कि हम गृह उद्योग बढ़ाएँगे, नहरें खोदेंगे, बाँध बनाएँगे, ये सब ठीक है। आदमी को साक्षर बनाएँगे, हर आदमी को मालदार बनाएँगे। कोई कहता है कि आदमी को पहलवान बनाएँगे पर इतना सब करने के बाद फिर होगा क्या? जरा विश्लेषण, पोस्टमार्टम करके देखिए कि इस सबके बावजूद विचारों की, दर्शन की भ्रष्टता यदि बनी रही तो वह करता क्या है? वह खुद जलता है, दूसरों को जलाता है। दियासलाई अपने आपको जला के खत्म कर देती है, दूसरों को जला देती है। आज हमारी आपकी जिंदगियाँ दियासलाइयों के तरीके से जल रही हैं और अनेक को जला रही हैं।

आपने ब्याह कर लिया। बीबी आ गई। हाँ तो ठीक है, अब आप क्या करेंगे उसको जला दीजिए। नहीं साहब बीबी तो बहुत अच्छी मालूम पड़ती है। इसीलिए तो कहते हैं कि फुलझड़ी बहुत अच्छी मालूम पड़ती, तो आप दियासलाई ले करके खत्म क्यों नहीं करते? हर चीज को आदमी आज जला रहा है। जिंदगी को जला

रहा है, समाज को जला रहा है, देश को जला रहा है और बच्चों को जला रहा है। भाइयो! आज सारा समाज जिस तरीके से भ्रष्ट चिंतन व दुष्ट आचरण करता चला जा रहा है, इस सबका मूल कहीं खोजना हो तो एक ही जगह है। वह है आदमी के सोचने व ऊँचा उठाने वाली शैली, तरीका, विद्या जिसे 'दर्शन' कहते हैं। सुकरात ने अपने समय में अपने समाज को एक ही दिशा देना शुरू किया, जिसका नाम था 'दर्शन'। विचार नहीं। विचार तो अखबारों में, गंदी किताबों में रोज छपते रहते हैं। कितना भ्रामक, अज्ञान फैलाने वाले अखबार रोज निकलते रहते हैं। इनकी बाबत मैं आपसे नहीं कहता। मैं आपसे कहता हूँ—'दर्शन' की बात। सुकरात का दर्शन जिन दिनों पैदा होने लगा और विद्यार्थियों को पढ़ाया जाने लगा तो हुकूमत काँप उठी। हुकुम दिया गया कि यह आदमी बागी है। इस आदमी को जहर पिला देना चाहिए। डाकू-चोर एक या दो पूरे समाज को हिलाकर रख देता है। दार्शनिक दुनिया को उलट-पुलट देता है। ईसा संत थे, नहीं दार्शनिक थे। संत तो समाज में ढेर सारे हैं जो एक पाँव पर खड़े रहते हैं, पानी नहीं पीते, दूध नहीं पीते। बाबाजी की बात नहीं कह रहा मैं। ईसा कौन थे? दार्शनिक थे। उन्होंने अपने समय को बदलने वाला दर्शन दिया था। दर्शन वह, जो आदमी के अंतरंग को छुए, आत्मा को छुए, हृदय को छुए। अंतरंग को छूने वाला जब कभी आता है, तो गजब करके रख देता है। लेखक भी, कवि भी ढेर सारे हैं, मालदार आदमी बहुत हुए हैं परंतु दार्शनिक जब भी कभी हुए हैं तो मजा आ गया है। गजब हो गया है, समाज को हिला दिया गया है।

कुछ हवाले दूँ आपको। रूसो नाम का एक दार्शनिक हुआ है, जिसने सबसे पहले एक विचार दिया अंतरंग को छूने वाला, आदमी के मस्तिष्क को छूने वाला, समाज की व्यवस्था पर असर डालने वाला। दर्शन दिया रूसो ने जिसे डेमोक्रेसी नाम दिया गया। डेमोक्रेसी

के बारे में मजाक उड़ाया गया था। जिन दिनों यह दर्शन प्रस्तुत किया गया, कहा गया कि यह पागलों की बातें हैं। हुकूमत तो राजा की होती है रिआया के ऊपर। रिआया-रिआया के ऊपर हुकूमत करेगी, यह तो पागलों की बातें हैं। लेकिन पागलों की बात आप देखते हैं? सारी दुनिया में घुमा-फिरा के डेमोक्रेसी आ गई है। यह विचार एक दार्शनिक ने दिया था और उसने सारी दुनिया को हिलाकर रख दिया। और हवाले दूँ आपको। एक नाम है नीत्से। उसका वह हिस्सा तो नहीं बताऊँगा जिसमें उसने यह कहा था कि खुदा खत्म हो गया, खुदा को हमने जमीन में गाड़ दिया, पर यह वह आदमी था जिसने कहा था कि आदमी को सुपरमैन बनना चाहिए। आदमी को गई-गुजरी स्थिति में नहीं रहना चाहिए। अपने आपको विकसित करना चाहिए और दूसरों को ऊँचा उठाने की अपनी सामर्थ्य एकत्रित करनी चाहिए। यह किसकी फिलॉसफी है? नीत्से की। आपको मैं इतिहास इसीलिए बता रहा हूँ कि आप समझें कि दर्शन कितनी जबरदस्त चीज है। दर्शन उस चीज का नाम है जो कौमों को बदलकर रख देता है, बिरादरियों को, मुल्कों को, परिस्थितियों को बदल देता है। दर्शन बड़े शानदार होते हैं। वे भले हों अथवा बुरे हों, कितनी ताकत होती है, उनमें यह आपको जानना चाहिए। मैं आपको अपने जीवन की एक घटना सुना दूँ दर्शन की बाबत।

जब मैं शिलांग, डिब्रूगढ़ की तरफ अपने मिशन के लिए दौरा कर रहा था तो मेरी इच्छा हुई कि नागालैंड जाऊँ। नागा कैसे होते हैं? जरा देखकर आऊँ। हमारे कार्यकर्ता साथ चले, बोले हम दुभाषिए का काम करेंगे। उनकी जीप में बैठकर मैं नागालैंड चला गया। उन लोगों के बीच जो रेलगाड़ी पलट देते थे, तीर-कमानों से जिनने सेना की नाक में दम कर रखा था। नागाओं के एक गाँव में जाकर एक चबूतरे पर मेरे मित्रों ने बिठा दिया व नागाओं से उनकी भाषा में कहा, ये हमारे गुरुजी हैं, महात्मा हैं, आशीर्वाद देते हैं।

किसी का कोई दुःख हो तो इनसे कह लीजिए। ये नहीं कहा कि ये विद्वान हैं, कोई मिशन चलाते हैं। बस यही कहा कि कोई मनोकामना हो तो इनसे कहिए। कोई पचास-सौ नागा वहाँ बैठे थे। एक ने दूसरे से कहा, दूसरे न तीसरे से। सब ने आपस में पूछताछ कर ली व कहा कि हमारा तो कोई दुःख नहीं है, रोटी मिल जाती है। सोने के लिए फूस के मकान हैं, पहनने को लोमड़ी की खाल है, मौज करते हैं। हमें दुःख काहे का। एक-दूसरे की ओर देखा तो एक बुड्ढा नागा उठा व दुभाषिए से बोला कि इन स्वामी जी से पूछिए कि इनको कोई दुःख तो नहीं है। हमसे बोले, "हमें तो कोई परेशानी नहीं है किंतु आप भूखे हों तो हमारे यहाँ चावल हैं। भूखे नहीं जाएँ हमारे दरवाजे से। पहनने के कपड़े न हों तो खालें ले जाएँ। हमारा अपना कोई कष्ट नहीं। हम तो प्रसन्न हैं। स्वामी जी को कोई दुःख हो तो हम दूर कर दें।" मैं समझ गया। आदमी का दर्शन यह है। नागाओं ने नागालैंड बना लिया। क्या वजह हो सकती है ? यह उस बिरादरी का दर्शन है। जो कुछ हमारे पास है, उससे खुशी की जिंदगी जिएँगे। उसे देखकर के खाएँगे। मस्ती का जीवन जिएँगे। यह दर्शन है। कौमें, बिरादरियाँ, समय और जातियाँ हमेशा दर्शन के आधार पर उठी हैं। यह दर्शन पैदा करना मनीषा का काम है। दर्शन को बनाने वाली माँ का नाम है—'मनीषा'।

मनीषी इंसान की समस्याओं का समाधान देते हैं, व्यक्ति तैयार करते हैं, समाज बनाते हैं। सुकरात को तैयार करने वाले का नाम अरस्तू है और शिवाजी को तैयार करने वाले का नाम समर्थ गुरु रामदास है। चंद्रगुप्त को तैयार करने वाले का नाम चाणक्य है और विवेकानंद को तैयार करने वाले हैं-रामकृष्ण परमहंस। ये कौन हैं ? अरे भाई, ये मनीषी हैं। मनीषी विचार नहीं, दर्शन देते हैं, दर्शन जीकर दिखाते हैं और अनेक का जीवन बना देते हैं। आप कहेंगे दर्शन तो बद्रीनाथ का, जगन्नाथ का, सोमनाथ का किया जाता है। किराया खर्च करके जो दर्शन आप करते हैं, यह दर्शन नहीं है।

दर्शन वह है, जो जमीला ने किया। जमीला ने सारी जिंदगी भर पैसे जमा किए थे और कहती थी मैं काबा जाऊँगी और दर्शन करूँगी। जाने के वक्त पड़ गया अकाल। पानी न पड़ने से, अनाज न होने से लोग भूखों मरने लगे। जमीला ने कहा, मैं काबा हज करने जाने वाली थी। अब नहीं जाऊँगी। बच्चे भूखे मर रहे हैं। इनके खाने का, दूध का, पानी का इंतजाम किया जाए ताकि वे जिंदा रखे जा सकें और उसने काबा जानेसे इंकार कर दिया। मेरे पास कुछ है ही नहीं मैं कैसे जाऊँगी। इसे कहते हैं दर्शन, फिलॉसफी। देखने के अर्थ में नहीं फिलॉसफी के अर्थ में। बाद में खुदाबंद करीम के यहाँ मीटिंग हुई तो यह तय किया गया कि हज किसका कबूल किया जाए। सारे फरिश्तों की मीटिंग में तय हुआ कि सिर्फ एक आदमी ने इस साल हज खुलकर किया। खुदाबंद ने उसका नाम बताया-जमीला। फरिश्तों ने अपने रजिस्टर दिखाए व कहा कि वह तो गई ही नहीं। खुदाबंद ने समझाया। देखने के लिए न गई तो न सही, लेकिन उसने काबा के ईमान को, प्रेरणा को समझा और हज करके जो अंतरंग में बिठाया जाना चाहिए था, वह यहीं बैठे कर लिया। शेष सब झक मारते रहे। इसलिए सबका नामंजूर। जमीला का कबूल।

मित्रो! मैं कह रहा था दर्शन की बात। दर्शन जिसको जन्म देती है—मनीषा। मनीषा को हम ऋतंभरा प्रज्ञा कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम इसे गायत्री कह सकते हैं। श्रेष्ठ चिंतन करने वालों के समूह का नाम है—मनीषा। इस मनीषा का हम आह्वान करते हैं। मनीषा माँ है। माँ क्या करती है? माँ बच्चे के लिए समय-समय पर जरूरत की चीजें बनाकर खिलाती है, उसे छाती का दूध पिलाती है? हजम कर सके, ऐसी खुराक बनाकर देती है माँ। मनीषा वह है जो युग की आवश्यकताओं, समय की आवश्यकताओं, इंसान की आवश्यकताओं को तलाशती रहती है, समझती है व वैसी ही खुराक दर्शन की देती है, जिसकी जरूरत है।

युग की मनीषा ध्यान रखती है कि आज के समय की जरूरत क्या है? पुराने समय का वह ढोल नहीं बजाती। वह युग को समझती है, देश को समझती है और परिस्थितियों के अनुरूप युग को ढालने की कोशिश करती है, आस्थाओं से रहित हैवानी के गुलाम इंसान को आदमी बनाती है, उसे ऊँचा उठना सिखाती है व उसके घरों में स्वर्गीय परिस्थितियाँ पैदा करती है। ऐसी ही मनीषा का मैं आह्वान करता हूँ, व कहता हूँ कि आप में से जो भी यह सेवा कर सकें, वह स्वयं को धन्य बना लेगा, अपना जीवन सार्थक कर लेगा। आज बुद्धिवाद ही चारों ओर छाया है। 'नो गॉड, नो सोल' की बात कहता जमाना दीखता है। ये किसकी बात है? नास्तिकों की, वैज्ञानिकों की, बुद्धिवादियों की। इन्होंने फिजा बिगाड़ी है? नहीं इनसे ज्यादा उन धार्मिकों ने, पंडितों ने, बाबाजियों ने बिगाड़ी है जो उपदेश तो धर्म का देते हैं, पर जीवनक्रम में उनके कहीं धर्म का राई-रत्ती भी नहीं है। पुजारी की खुराफात देवी को सुना दें तो देवी शर्मिंदा हो जाए। धर्म को व विज्ञान को सबको ठीक करना होगा मित्रो! और वह काम करेगी मनीषा। कुंभ नहाइए, वैकुंठ को जाइए, यह कौन-सा धर्म है? ऐसे धर्म को बदलना होगा व विज्ञान द्वारा दिग्भ्रांत की जा रही पीढ़ी को भी मनीषा को ही मार्गदर्शन देना होगा। आपको युग की जरूरतें पूरी करनी चाहिए। आदमी के भीतर की आस्थाएँ कमजोर हो गई हैं, उन्हें ठीक करना चाहिए। आज की भाषा में बात कीजिए व लोगों का समाधान कीजिए। विज्ञान की भाषा में, नीति की, धर्म की, सदाचार की, आस्था की बात कीजिए व सबका मार्गदर्शन करिए। बताइए सबको कि आदर्शों ने सदैव जीवन में उतारने के बाद फायदा ही पहुँचाया है, नुकसान किसी का नहीं किया।

अब्राहम लिंकन ने बीच मेज पर खड़ा करके कहा था यह स्टो है। इसने अमेरिका के माथे पर लगा कलंक हटा दिया। आप

क्या करना चाहते हैं? हम भारतीय संस्कृति को मेज पर खड़ा करके यह कहना चाहते हैं कि यह वह संस्कृति है जिसने दुनिया का कायाकल्प कर दिया। आज भी यह पूरी तरह से मार्गदर्शन देने में सक्षम है। मनीषी इसने ही पैदा किए। यदि मनीषी जाग जाएँ तो देश, समाज, संस्कृति सारे विश्व का कल्याण होगा। भगवान करे, मनीषा जगे, जागे, जगाए व जमाना बदले। हमारा यह संकल्प है व हम इसे करेंगे। आपको जुड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारी बात समाप्त। ॐ शांतिः।

(२५ जून १९८०)

हमारी स्वयं की गायत्री साधना कैसे फली ?

गायत्री मंत्र कृपाकर हमारे साथ-साथ कहिए।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! जिस पुनीत गायत्री पर्व को आप मनाने के लिए आए हैं, उसका बहुत महत्त्व है। आपने तो केवल उसको सुना है, पर मैंने देखा है। देखा ही नहीं जाना और पाया है। आपके लिए यह पर्व सामान्य जानकारी के लिए आकर्षक भी हो सकता है, पर मेरे लिए तो जीवन है। मेरे नस-नस में गायत्री पर्व घुसा हुआ है। मांस में, अस्थियों में, मस्तिष्क के प्रत्येक कण में घुसा हुआ है। जीवन की गतिविधियों में भरा हुआ है। ऐसा है गायत्री पर्व, जिसके लिए कितनी श्रद्धा लेकर हमने इतनी लंबी जिंदगी जी ली। इसमें कोई शक नहीं कि आपका दृष्टिकोण दूसरा हो सकता है और मेरा दूसरा, लेकिन हमारे दोनों के लिए यह हमारी माँ है। आप छोटे बच्चे हों तो क्या और हम बड़े बच्चे हों तो क्या? लेकिन हम दोनों की माँ एक ही है, 'गायत्री माता' जिसको हम भारतीय संस्कृति की जननी कहते हैं। भारतीय धर्म की जीवात्मा कहते हैं। वेदों के मंत्रों से लेकर पुराणों तक का सारा वाङ्मय जिसकी व्याख्या के स्वरूप बना, जिससे सारे देवी-देवता, २४ देवता, त्रिपदा के तीन देवता, २४ अक्षरों के २४ अवतार, सारे-का-सारा पूजा-पाठ का परिकर गायत्री के अलावा और कुछ है नहीं। भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्म विशुद्ध गायत्री स्वरूप हैं।

गायत्री की महत्ता के बारे में कितना सारा बताया गया है, कितने गुण गाए गए हैं, लेकिन आमतौर से आदमी निराश देखे गए हैं और यह कहते सुने गए हैं कि हमको वे लाभ सुनने को तो मिलते हैं पर पाए नहीं जा सकते। मेरा मत इससे भिन्न है। आपकी

शिकायत है कि गायत्री का कोई चमत्कार हमने नहीं देखा, लेकिन मैंने देखा है। कुछ ऐसे भी चमत्कार हैं जो मैं आपको भी दिखा सकता हूँ, पर कुछ ऐसे हैं जो मेरे लिए दिखाना संभव नहीं है अथवा दिखाना नहीं चाहता। गायत्री के ऐसे सारे-के-सारे चमत्कारों के बारे में ऋषियों ने जो कुछ भी कहा है, उन्हें अक्षरशः मैंने सही पाया है। फिर आपने गलत क्यों पाया और मैंने सही क्यों पाया? गायत्री जयंती के पुण्य पर्व पर आइए इसी महत्त्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डालें और पर्दे को उठाने की कोशिश करें कि हमारे लिए गायत्री क्यों चमत्कारी है और आपके लिए क्यों निराशाजनक है। अक्षर तो वही २४ हैं। माला तो वही है। पूजा के विधि-विधान भी वहीं हैं फिर आप में फर्क कैसे पड़ गया? हम यही कहते हैं कि आप इसे जान लें।

गायत्री के संबंध में हमारे गुरुदेव ने, जब पहले दिन आए थे, तभी उसका तत्त्वज्ञान समझा दिया था और कहा था कि गायत्री की शक्ति बादलों की तरह बरसती है, लेकिन इसके लिए एक शर्त है कि मिट्टी मुलायम होनी चाहिए और गड्ढा होना चाहिए। मिट्टी मुलायम होगी तो हरियाली पैदा हो जाएगी और गड्ढा होगा तो बादलों का पानी जमा हो जाएगा। टीले पर, चट्टानों के ऊपर पानी बरसेगा तो हरियाली कैसे पैदा हो जाएगी? बादल अपने आप में एक इकाई है, लेकिन समग्र नहीं है। जिसको ग्रहण करना है, धारण करना है, उसकी अपनी स्थिति और योग्यता भी होनी चाहिए, व्यक्तित्व भी होना चाहिए। उन्होंने एक बात और कही जिसे हमने गिरह बाँध ली, पर आप तो सुनने को भी तैयार नहीं हैं। वह थी—'भगवान की कोई साधना नहीं होती। कोई भगवान की साधना कैसे कर सकता है? साधना सिर्फ अपने आपे की करनी पड़ती है। अपने आपे की साधना कर लेने और पात्रता विकसित कर लेने के बाद में दैवी शक्तियों का अनुदान अनायास ही बिना माँगे मिलता हुआ चला जाता है।' मेरे गुरु ने जिस दिन दीक्षा दी उसी दिन मुझे

वास्तविकता समझा दी और कहा कि सारे-का-सारा ध्यान अपने ऊपर केंद्रित कर लीजिए। मैंने अपने ऊपर केंद्रित रखा और यही कहता रहा—आदर्शों को, सिद्धांतों को भगवान कहते हैं, उत्कृष्टता को भगवान कहते हैं और उसी की आराधना के लिए, उसी की उपासना के लिए अपने हर एक सांस को, हर एक चप्पे को, योग्यता के हर एक कण को मैंने नियोजित कर दिया। हमने भगवान की महत्ता को समझने की कोशिश की और उसने हमको गायत्री के नजदीक ला दिया। आप तो लाखों मील दूर हैं इसलिए कि आपने केवल सुना है और कृत्यों को किया है, अतः निराश नहीं रहेंगे तो क्या करेंगे? लेकिन हमको पूरे तरीके से सच्चे मन से हजार बार कहने की हिम्मत पड़ती है कि गायत्री शक्तिवान है, सामर्थ्यवान है और चमत्कारी है। गायत्री में वह सब कुछ है जिसके बारे में बताया गया है।

लेकिन मित्रो! यह कैसे संभव हो सका? ऐसे संभव हो सका कि हमारे दृष्टिकोण में और आपके दृष्टिकोण में फर्क रहा। आपने उस तरीके से उपासना की कि आपको लाभ मिला कि नहीं, परंतु हमारी नीयत दूसरी ही रही है। हमने पाने का कभी विचार ही नहीं किया। शुरू के दिन से आखिरी दिन तक हमने केवल देने का ही विचार किया है। आपने किस स्तर की उपासना की है? हमने दधीचि जैसे स्तर की उपासना की है। हमने कमाया तो था, लेकिन देवताओं से कहा—'कुछ हमारे पास है। आप दुनिया को देते हैं तो कुछ हमसे भी लेते जाइए।' ऐसे इंसान होते भी रहे हैं और हर अध्यात्मवेत्ता का स्तर यही होना चाहिए। देवता केवल दिया ही नहीं करते, उन्हें भी जरूरत होती है। आप जानते नहीं है क्या? एक बार देवताओं को जरूरत पड़ी थी और वे इंसानों की सहायता माँगने के लिए आए थे। उनने दशरथ से कहा था कि हम बहुत हैरान हैं और हमको इंसान की मदद की जरूरत है। तब दशरथ जी कैकेयी के साथ अपना रथ लेकर स्वर्गलोक को देवताओं की

सहायता करने गए थे। दधीचि ने देवताओं की जरूरत पूरी की थी और हमारे पूजा करने के तरीके भी उसी तरीके से रहे हैं। देवताओं ने एक और आदमी से हाथ पसारा। उसका नाम था—अर्जुन। अर्जुन देवताओं की मदद करने के लिए गए थे। मदद करने के बाद में जब देवताओं ने अपना काम बना लिया तो सोचा इसे उसी स्तर का इनाम देना चाहिए। सो स्वर्गलोक की सबसे खूबसूरत महिला,-उर्वशी को उनने पेश कर दिया और कहा—पैसे के बाद में लोग खूबसूरती चाहते हैं, विषय-विकारों को चाहते हैं, आप यह ले जाइए। अर्जुन ने मना कर दिया और कहा—हमने तो अपने आपको संयमी जीवन में ढाल लिया है, क्या करेंगे इन बेकार की चीजों का। तब देवताओं ने उससे भी शानदार चीज गांडीव दिया था जो मनुष्यों का नहीं देवताओं का बनाया हुआ था। गांडीव इसलिए दिया गया था कि जहाँ कहीं भी उससे तीर चलाएगा, पार करता हुआ चला जाएगा, असफल हो ही नहीं सकता। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को भवानी से तलवार दिलाई थी, ऐसी शानदार तलवार जो चीरती हुई चली गई, पार करती हुई चली गई।

मित्रो! मैंने वही किया है। उपासना मैंने इसी ढंग से की है। हमने सिर्फ एक काम किया है—अपने आपको धोया है, अपने आपके ऊपर पॉलिश की है और अपने आपको रगड़-रगड़ करके तेज चाकू के तरीके का बना दिया है कि जहाँ कहीं भी मारेंगे चीरता हुआ चला जाएगा। यह है हमारा व्यक्तित्व और आप तो उलटा चलते हैं। पूजा-उपासना को जीवन से दूर रखना चाहते हैं। बिजली के पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तारों को अलग-अलग रखना चाहते हैं तो उनके अंदर करेंट कैसे आएगा? उपासना में त्याग की बात सिखाई जाती है और आप भोग की बात कहते हैं। योग भावनात्मक है, क्रियात्मक नहीं। योग में जहाँ लोभ और मोह के ऊपर अंकुश लगाना पड़ता है, वहाँ आप उसी की पूर्ति करना चाहते हैं। आप उलटा चलते हैं। साबुन से कोयले का काम लेना

चाहते हैं। यह भी कोई तरीका है। मैं आपके विचारों में क्रांति लाना चाहता हूँ न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में, वरन सामाजिक क्षेत्र में, व्यवस्था के क्षेत्र में एवं भावनात्मक क्षेत्र में भी क्रांति लाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस गायत्री जयंती के पुनीत पर्व पर आप भी अपने मन की सफाई करके जाइए, ब्रेनवाश कर ले जाइए, दिशा लेकर जाइए और उस वास्तविकता को जानकर जाइए कि जहाँ से चमत्कार उत्पन्न होते हैं, सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं।

हमारे जीवन में ऐसा ही हुआ। २४ साल तक उपासना करता रहा और सिर्फ जौ की रोटी और छाछ खाता रहा। अपनी जीभ को धोते रहने के लिए। इसलिए कि जिस जीभ से मुझे मंत्रों का उच्चारण करना है, आशीर्वचन देने हैं, उपदेश देने हैं, लोगों को सलाह देनी है, उस जीभ को जरा पैनी तो कर लूँ, फौलाद तो बना लूँ। इसलिए मैंने अपनी जीभ से जद्दोजेहद की है। हमने प्रत्येक के ऊपर संयम किया है, हमने समय के ऊपर, विचारों के ऊपर और अपने पैसे के ऊपर संयम किया है। हमने किसी का खाया नहीं, खिलाया है। हमने अपने आपसे जद्दोजेहद की है। पैसे के बारे में जद्दोजेहद, दिमाग के बारे में जद्दोजेहद, विचारों के बारे में जद्दोजेहद, आचरण के बारे में जद्दोजेहद किया है। हमारा मनोरंजन एक ही रहा है, भगवान का काम। हमारी भावना एक है, मन एक है, लक्ष्य एक है। हमारा प्रिय एक है और वह है हमारा भगवान। सोते हुए सपना दीखता है तो हमको भगवान का दीखता है। पूजा की कोठरी में बैठते हैं तो हमें चारों ओर भगवान की सुगंध आती है। जहाँ कहीं भी जाते और अपना दिल टटोलकर देखते हैं तो वहाँ भगवान धड़कता हुआ दिखाई पड़ता है। प्राण में, नस-नाड़ियों में, सांसों में भगवान की हवा चलती हुई दिखाई पड़ती है। हमारे चारों ओर भगवान दिखाई पड़ता है। हमने भगवान को अनुभव किया है, पर आप तो देखने की फिराक में रहते हैं। क्या देखेंगे भगवान को? आँखों से मिट्टी देखी जाती है। मिट्टी के अलावा

क्या किसी ने देखा है भगवान को? देखा किसी ने नहीं है, पर अनुभव किया है। हमने अपनी प्रत्येक गतिविधियों में, उद्देश्यों में, विचारों में भगवान को नाचते हुए, रास करते हुए देखा है, हमारी नियति और गतिविधियाँ अध्यात्म से ताल-मेल रखती हैं। हम यह अनुभव करते हैं कि अध्यात्म के सही तरीके से हम नजदीक आए हैं और सही तरीके से फायदा उठाने में समर्थ हो गए हैं।

मित्रो! हमने क्या किया और क्या पाया? पाने की बात मालूम है आपको जिसे मैं हजार बार बता चुका हूँ। शरीर की बावत बता चुका हूँ कि यह शरीर भगवान का है। हमने अपने शरीर को भगवान के हाथों बेच दिया है। अब यह हमारा नहीं, हमारे 'बॉस' का है। इसलिए उसको इसकी एक बार नहीं ९९ बार रखवाली करनी पड़ेगी। हमने अपनी अकल भगवान को बेच दी है। अब यह भगवान की जिम्मेदारी है कि अकल को सँभाले। आइंस्टीन के दिमाग के बारे में पहले ही १० लाख डालर के बीमे कराए गए थे कि मरणोपरांत उनका दिमाग निकाल लिया जाएगा और रिसर्च लेबोरेटरी में यह खोज-बीन की जाएगी कि उनका इतना शानदार दिमाग किस तरीके से हो गया है। अपने बारे में अभी तो मैं कुछ नहीं बताता, पर पीछे देख लेना हमारे दिमाग के बारे में। हमने ऐसी-ऐसी अजीब कल्पनाएँ की हैं कि सारे विश्व के ४५० करोड़ मनुष्यों के भाग्य को बदल डालने का दावा करते हैं। उनको हैरानी से बचा लेने का दावा करते हैं। आदमी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना का दावा करते हैं और इन दिनों चल रही वे हवाएँ जिनसे एक-एक आदमी उलटा हो जाता है, इन हवाओं को, फिजाओं को मोड़-मरोड़ डालने का दावा करते हैं हम। हमारी संपदाओं, विभूतियों का अता-पता नहीं है किसी को। हमारे पास बहुत संपदाएँ हैं और हमारी सेवाओं के बारे में जिसे हर आदमी जानता है कि गुरुजी के दरवाजे पर से कोई भी आदमी खाली नहीं गया है। यह हमारी शान है। इस शान को हम कायम रखेंगे। आपकी मनोकामनाओं के बारे

में हमारी सहायता तो नहीं के बराबर है, लेकिन अगर आप सौ मन मुसीबत लेकर आए थे तो २५ मन मुसीबत हमने मिटा दी हैं। आपकी सौ फीसदी जरूरतें हम कहाँ से पूरी करेंगे, लेकिन हम यकीनपूर्वक कह सकते हैं कि ईमानदारी से साथ अपनी सामर्थ्य के अनुसार हमने हर आदमी को पूरा-पूरा फायदा पहुँचाया है। मित्रो! यह हमारे चमत्कार हैं जिसे आप जानते हैं और जो नहीं जानते, उन बहुत-सी बातों को हमने छिपाकर रखा है। छिपाकर रखी गई बातों को जानने के लिए उस समय तक इंतजार करना पड़ेगा आपको जब तक हमारा शरीर जिंदा है। सबूत हमने सब जमा कर रखे हैं। हमने कहा है कि आदमी के पाँच शरीर हैं और हम पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं। हमारे जाने के बाद आप देख लेना कि आचार्य जी एक नहीं पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं और बहुत-सी बातें हैं जो हमने सब छिपाकर रखी हैं। आप देख लेना वे चमत्कार जिन्हें रहस्य कहते हैं, जादू कहते हैं, अतींद्रिय क्षमताएँ कहते हैं, वे सब भी हमारे पास हैं।

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं। इसकी व्याख्या सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् के रूप में, सरस्वती, काली, लक्ष्मी के रूप में, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में, सच्चिदानंद के रूप में की जाती है। यह उसका दर्शन पक्ष है। दर्शन और प्रयोग कर्मकांड पढ़ना हो तो 'गायत्री महाविज्ञान' में हमने सब कुछ लिख दिया है, पढ़ लीजिए। और भी कर्मकांडों को देखना हो तो आद्य शंकराचार्य की 'गायत्री पुरश्चरण पद्धति' तथा 'देवी भागवत' पढ़िए। पर जो बात मैं बताना चाहता हूँ, वह सिर्फ एक ही है कि आदमी के जीवन में गायत्री का प्रयोग कैसे किया जाए? आदमी के जीवन में गायत्री का समावेश कैसे हो? अध्यात्म थिअॅरी में नहीं व्यक्तित्व में होना चहिए और व्यक्तित्व थिअॅरी में नहीं रहता, वह आदमी के साथ घुला रहता है। हमारे साथ व्यक्तित्व घुला हुआ है। अध्यात्म हमारे मस्तिष्क में, नस-नाड़ियों में, क्रिया-कलापों में, गतिविधियों में, चिंतन में सब में घुला हुआ है। हमारे तीन शरीर हैं,

आपके भी तीन शरीर हैं। एक है हमारा कारण शरीर, जिसको अंतरात्मा या अंत:करण कहते हैं। उससे हमने उपासना की है, मस्तिष्क से साधना और शरीर से आराधना की है।

उपासना कहते हैं नजदीक आने को। लकड़ी और आग जब नजदीक आ जाते हैं तब लकड़ी आग हो जाती है। हमने अपने आपको भगवान के लिए समर्पित किया है और कहा है कि हमारी शक्तियाँ आपकी हैं। हमारा धन आपका है। हमारी अकल आपकी है। आप हुकुम दीजिए कि हमें क्या करना चाहिए? उपासना इसी चीज का नाम है और कोई उपासना नहीं होती। यह विशुद्ध रूप से विचारपरक है, भावनापरक है, आस्थापरक है, निष्ठापरक है और श्रद्धापरक है। हमारी उपासना एक है—समर्पण की, श्रद्धा की। हमने नाले की तरह नदी से अपने आपको मिला दिया है और उसमें मिल जाने की वजह से हमारी हैसियत, हमारी औकात, हमारी शक्ति और हमारा स्वरूप नदी जैसा बन गया है। आप भी अपने आपको मिलाइए न और भगवान से कहिए न कि आप हुकुम कीजिए, आज्ञा कीजिए और हम चलेंगे। हमारी उपासना हमारे ऊपर इसी रूप में छाई रही है। उपासना की निष्ठा को जीवन में हमने उसी तरीके से घोलकर रखा है, जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति निष्ठावान रहती है और कहती है—'सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं।' आपके पूजा की चौकी पर तो कितने बैठे हुए हैं। ऐसी निष्ठा होती है कोई? एक से श्रद्धा नहीं बनेगी क्या? मित्रो! हमारे भीतर श्रद्धा है। हमने एक का पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवन उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे। हमारा प्रियतम कितना अच्छा है। उससे अधिक रूपवान, सौंदर्यवान, दयालु और संपत्तिवान और कोई हो ही नहीं सकता। हमारा वही सब कुछ है, वही हमारा भगवान है। आप ऐसी निष्ठा पैदा नहीं करेंगे क्या? उपासना इसी को कहते हैं जिसमें समर्पण की भावना हो, माँगने की नहीं देने की भावना हो। जवान औरत आती है और अपना ईमान, अपना मन,

अपनी भावना, अपना शरीर, अपना गोत्र, वंश सब पति के हाथ पर रख देती है। हमने भी सब कुछ रख दिया है अपने पति के हाथ पर और कहा है कि हम आपके हैं और आपके होकर ही रहेंगे। आपके अलावा हमारा कौन है और हम किसके नजदीक जाएँगे। किसका पल्ला पकड़ेंगे। आपका कहना नहीं मानेंगे तो किसका मानेंगे। आप ही हमारे हैं और हम आपके हैं। मित्रो! यह उपासना है हमारी जिसने हमारी अंतरात्मा को भक्ति से भर दिया है। भक्ति कहते हैं समर्पण को। इसी को 'अद्वैत' कहते हैं, 'एकत्व' कहते हैं।

गायत्री उपासना का दूसरा स्वरूप है—साधना। साधना अपने आपकी करने को कहते हैं। हमने अपने आपको कितना कसा है, शरीर को, इंद्रियों को कितना कसा है। अपने व्यवहार को कितना कसा है। अपनी इच्छा, आकांक्षाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को चूरा करके फेंक दिया है। अपने आप को धोने के लिए, परिष्कृत करने के लिए हमने धोबी के तरीके से बेरहमी के साथ पीट-पीटकर धोया है और धुनिए के तरीके से अपने आपको धुना है। क्या आप अपने आप से जद्दोजेहद नहीं करेंगे? अपने आप से लड़ेंगे नहीं क्या? गायत्री का चमत्कार देखने का अगर मन है, वास्तविक रूप में गायत्री से मोहब्बत है तो आप साधना के लिए आमादा हो जाइए, साधक बनिए। साधना भगवान की नहीं अपनी होती है। भगवान पर क्या चंदन चढ़ाएँगे, चावल चढ़ाएँगे, स्नान कराएँगे? भगवान पर रहम कीजिए। पहले अपनी गंदगी धोइए, अपने को स्नान कराइए। अपना तो कराते नहीं हैं स्नान, भगवान को और कराएँगे। अपने आपको धोइए-साधना इसी को कहते हैं।

मित्रो! हमने आराधना की है। आराधना उसे कहते हैं जिससे सेवा, पूजा करनी पड़ती है। सेवा हमने भगवान की की है। भगवान किसे कहते हैं? सिद्धांतों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं। उन खिलौनों को भगवान नहीं कहते जिनको आपने भगवान मान रखा है। वे तो हमारी ध्यान-धारणा के लिए एक 'मीडियम' हैं। आदर्शों

को भगवान कहते हैं जिसके लिए हमारी गतिविधियाँ, हमारे पसीने का एक-एक चप्पा, समय का एक-एक कण लगा है। सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन को, लोकमंगल को, संस्कृति की सेवा को आराधना कहते हैं। सूरज निकलने से लेकर डूबने तक हम बराबर भगवान के काम में लगे रहते हैं। यही हमारा भजन है, उपासना है, तप है और सेवा है। आपकी अंतरात्मा को उछाल देने के लिए ही हमारी वाणी चलती है। जनता-जनार्दन को ऊँचा उछाल देने के लिए हमारी लेखनी चलती रहती है। हमारी गतिविधियों का चप्पा-चप्पा इसी के लिए चलता रहता है। लोकहित के लिए, जनता-जनार्दन के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन के लिए हम बराबर १२ घंटे काम करते रहते हैं। यही हमारी आराधना है, मसक्कत है। हमारा श्रम है, साधन है। भौतिक सामर्थ्य जो कुछ भी है हमने आराधना में लगा दिया है, चिंतन साधना में और अंत:करण उपासना में लगा दिया है। यह है चमत्कारों के स्रोत। आप इसको सुनना, नोट करके रखना और जहाँ तक संभव हो सके वहाँ तक चलना। भागना नहीं आता, दौड़ना नहीं आता, तो छोटे बच्चे की तरह से दीवार पकड़कर, गाड़ी के सहारे चलना सीखिए, एक कदम आगे बढ़िए। लोभ, मोह की हथकड़ी और बेड़ी को, जिसने आपको मजबूती से जकड़ रखा है, छोड़िए। थोड़ी ढीला करिए, फिर देखिए आपको आगे बढ़ने का मौका मिलता है कि नहीं। श्रेष्ठता की दिशा में, शालीनता की दिशा में, महानता की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाइए। अपने बच्चों, संबंधियों, मित्रों के प्रति हमने अपने कर्तव्य का पालन किया है। उनके लिए संस्कृति छोड़ी है, संस्कार छोड़े हैं, परंपराएँ छोड़ी हैं और आप तो लालच करते हैं। उनके लिए जमा करना चाहते हैं। जो हराम का खाएगा देख लेना उसका पेट फटेगा। पेट फटने का मतलब है—कुमार्गगामी, दुर्व्यसनी होना, हराम का पैसा किसी को भी नहीं फला है। हराम के पैसे ने आज तक किसी को भी निर्मल क्षीर नहीं बनाया है। वह अपनी दुर्गति कराकर रहेगा।

मित्रो! हमारे आध्यात्मिकता की यही निशानी है। एक हमारा पराक्रम है, जिसमें हमने पुराने ढर्रे को, लोभ और लालच को तोड़ने की कोशिश की है और दूसरा पराक्रम जिसमें हमने आगे बढ़ने की कोशिश की है। इस तरह हम सिद्धांतों की दिशा में, उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ते चले गए और उनमें चमत्कार पाया। गायत्री माता बड़ी चमत्कारी है। इसमें सिद्धियों के जखीरे भरे पड़े हैं, साधनों के जखीरे भरे पड़े हैं और न जाने क्या-क्या भरा पड़ा है? गायत्री की महत्ता को मैं किस मुँह से कहूँ, जिसमें आदमी भौतिक जीवन में समृद्ध हो जाता है और आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कृत हो जाता है। हमने आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कारिता पाई है और भौतिक जीवन में समृद्धि। यह समृद्धि हमारे काम आई है और हमारे मित्र और कुटुंबियों में से हर एक के काम आई है। ऐसी समृद्धि आप नहीं इकट्ठी करेंगे क्या?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरा भाव और मन था कि आपको अपने जीवन के रहस्य, निश्चय और अपने विश्वासों को आपके सामने परदे की तरह से खोल करके ही रहूँ, रहस्यों को बताऊँ। आपको चमत्कारों की दिशा में गायत्री माता का अनुग्रह प्राप्त करने की पूरी-पूरी छूट है, लेकिन इस दिशा में चलिए तो सही। धीरे चलिए, पर शुरूआत तो करिए। शुरूआत करने के लिए हमने प्रज्ञा अभियान चलाया है। इससे दुनिया का लाभ होगा कि नहीं, पर आपका जरूर भला हो जाएगा। आप अपने आप पर नियंत्रण करने और उदार बनने में जरूर समर्थ हो जाएँगे। आप समर्थ हो गए तो दुनिया समर्थ हो जाएगी। साँचे हमारे सही होंगे, तो हम सैकड़ों खिलौने अच्छे ढलाने में समर्थ हो सकेंगे। साँचे ही अगर ठीक न हो सकेंगे तो हम दुनिया को कैसे ढालेंगे? आप पहले अपने आप को बदल डालिए। हमने अपने आपको जितना बनाया है, भगवान हमें उसी हिसाब से अनुग्रह देते हुए चले गए। यही है हमारा रहस्य और यही है हमारी आत्मकथा। यही है हमारे सारे-के-सारे रहस्यों का

उद्घाटन जो आज गायत्री जयंती के दिन हमने आप लोगों के सामने अपना जी खोलकर रख दिया है। आपको करना हो तो इसी तरीके से करना, न करना हो तो आपकी मरजी। आपको खेल-खिलवाड़ पसंद है, तो ठीक है, बच्चों के तरीके से खेल-खिलवाड़ ही करते रहिए। इसमें भी क्या हरज है। मनोरंजन ही सही, लेकिन आप लंबी चीजें नहीं पा सकेंगे। लंबी चीजें, महत्त्वपूर्ण चीजें पाने के लिए, जिसकी आज बहुत जरूरत है, आपको यही करना चाहिए। अब हम जगह खाली कर रहे हैं और आपको उस जगह पर बिठा रहे हैं और यह कहते हैं कि जैसी शानदार जिंदगी हमने जी ली, चमत्कारों से भरी जिंदगी हमने जी ली, जैसी महिमा और गरिमा हमने प्राप्त कर ली, आपको हम दावत देते हैं आज गायत्री जयंती के दिन कि यह रास्ता आपके लिए भी खुला हुआ है। जरा हिम्मत दिखाइए न हम दावत देते हैं। आप आइए और जिस रास्ते पर हम चले हैं, आप भी चलिए। जो हिम्मत हमने दिखाई है आप भी दिखाइए और इसी जीवन में धन्य और कृत-कृत्य हो जाइए। ऐसा मौका फिर कभी पाएँगे क्या?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरे मन के उद्गार यही थे जो मैंने आप लोगों के सामने पेश कर दिए, व्याख्यान के रूप में नहीं, वरन सिर्फ इसलिए कि आप इस पर विचार करें और गौर करने के बाद में ऐसे कदम बढ़ाएँ जैसे हमने अपने जीवन में बढ़ाए। इसी आज्ञा के साथ आज हम आप लोगों को विदा करते हैं कि आप इन पर बार-बार विचार करेंगे और बार-बार यह कोशिश करेंगे कि इन सिद्धांतों को जहाँ तक संभव हो, वहाँ तक जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे। आज की बात समाप्त।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

(२० जून १९८३)

त्रिपदा गायत्री व उसके तीन चरण

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! हमारा सत्तर वर्ष का संपूर्ण जीवन सिर्फ एक काम में लगा है और वह है—भारतीय धर्म और संस्कृति की आत्मा की शोध। भारतीय धर्म और संस्कृति का बीज है—गायत्री मंत्र। इस छोटे-से चौबीस अक्षरों के मंत्र में वह ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ पड़ा है जिसके विस्तार में भारतीय तत्त्वज्ञान और भारतीय नृतत्व विज्ञान दोनों को खड़ा किया गया है। ब्रह्माजी ने चार मुखों से चार चरण गायत्री का व्याख्यान चार वेदों के रूप में किया। वेदों से अन्यान्य धर्मग्रंथ बने। जो कुछ भी हमारे पास है, इस सबका मूल जड़ हम चाहें तो गायत्री मंत्र के रूप में देख सकते हैं। इसीलिए इसका नाम गुरु मंत्र रखा गया है, बीजमंत्र रखा गया है। बीजमंत्र के नाम से, गायत्री मंत्र के नाम से इसी एक मंत्र को जाना जा सकता है और गुरुमंत्र इसे कहा जा सकता है। हमने प्रयत्न किया कि सारे भारतीय धर्म और विज्ञान को समझने की अपेक्षा यह अच्छा है कि इसके बीज को समझ लिया जाए, जैसे कि विश्वामित्र ने तप करके इसके रहस्य और बीज को जानने का प्रयत्न किया। हमारा पूरा जीवन इसी एक क्रिया-कलाप में लग गया। जो बचे हुए जीवन के दिन हैं, उसका भी हमारा प्रयत्न यही रहेगा कि हम इसी की शोध और इसी के अन्वेषण और परीक्षण में अपनी बची हुई जिंदगी को लगा दें।

बहुत सारा समय व्यतीत हो गया। अब लोग जानना चाहते हैं कि आपने इस विषय में जो शोध की, जो जाना, उसका सार-निष्कर्ष हमें भी बता दिया जाए। बात ठीक है, अब हमारे महाप्रयाण का समय नजदीक चला आ रहा है तो लोगों का यह पूछताछ करना

सही है कि हर आदमी इतनी शोध नहीं कर सकता। हर आदमी के लिए इतनी जानकारी प्राप्त करना तो संभव भी नहीं है। हमारा सार और निष्कर्ष हर आदमी चाहता है कि बताया जाए। क्या करें? क्या समझा आपने? क्या जाना? अब हम आपको बताना चाहेंगे कि गायत्री मंत्र के ज्ञान और विज्ञान में, जिसकी कि व्याख्या स्वरूप ऋषियों ने सारे-का-सारा तत्त्वज्ञान खड़ा किया है, क्या है?

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं। त्रिपदा का अर्थ है—तीन चरण वाली, तीन टाँग वाली। तीन टुकड़े इसके हैं, जिनको समझ करके हम गायत्री के ज्ञान और विज्ञान की आधारशिला को ठीक तरीके से जान सकते हैं। इसका एक भाग है विज्ञान वाला पहलू। विज्ञान वाले पहलू में आते हैं तत्त्वदर्शन, तप, साधना, योगाभ्यास, अनुष्ठान, जप, ध्यान आदि। यह विज्ञान वाला पक्ष है। इससे शक्ति पैदा होती है। गायत्री मंत्र का जप करने से उपासना और ध्यान करने से उसके जो माहात्म्य बताए गए हैं कि इससे यह लाभ होता है, अमुक लाभ होते हैं, अमुक कामनाएँ पूरी होती हैं। अब यह देखा जाए कि यह कैसे पूरी होती हैं और कैसे पूरी नहीं होतीं। कब यह सफलता मिलती है और कब नहीं मिलती। किसी भी बीज को पैदा करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है। भूमि उसके पास होनी चाहिए। भूमि के अलावा खाद और पानी का इंतजाम होना चाहिए। अगर यह तीनों चीजें उसके पास न होंगी तब फिर मुश्किल है। तब फिर वह बीज पल्लवित होगा कि नहीं, कहा नहीं जा सकता। गायत्री मंत्र के बारे में भी यही तीन बातें हैं कि यदि गायत्री मंत्र के साथ तीन चीजें मिला दी जाएँ या किसी भी आध्यात्मिक उपासना के साथ मिला दी जाएँ, तो उसके ठीक परिणाम होने संभव हैं। अगर यह तीन चीजें नहीं मिलाई जाएँगी, तब फिर यही कहना पड़ेगा कि इसमें सफलता की आशा कम है।

गायत्री उपासना के संबंध में हमारा लंबे समय का जो अनुभव है वह यह है कि जप करने की विधियाँ और कर्मकांड तो वही हैं

जो सामान्य पुस्तकों में लिखे हुए हैं या बड़े से लेकर छोटे लागों ने किए हैं। किसी को फलित होने और किसी को फलित न होने का मूल कारण यह है कि उन तीन तत्त्वों का समावेश करना लोग भूल जाते हैं जो किसी भी उपासना का प्राण हैं। उपासना के साथ एक तथ्य यह जुड़ा हुआ है कि अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। श्रद्धा की एक अपने आप में शक्ति है। बहुत सारी शक्तियाँ हैं जैसे बिजली की शक्ति है, भाप की शक्ति है, आग की शक्ति है, उसी तरीके से श्रद्धा की भी एक शक्ति है। पत्थर में से देवता पैदा हो जाते हैं, झाड़ी में से भूत पैदा हो जाता है, रस्सी में से साँप पैदा हो जाता है और न जाने क्या-क्या हो जाता है श्रद्धा के आधार पर। अगर हमारा और आप का किसी मंत्र के ऊपर, जप, उपासना के ऊपर अटूट विश्वास है, प्रगाढ़ निष्ठा और श्रद्धा है तो मेरा अब तक का अनुभव यह है कि उसको चमत्कार मिलना चाहिए और उसके लाभ सामने आने चाहिए। जिन लोगों ने श्रद्धा से विहीन उपासनाएँ की हैं, श्रद्धा से रहित केवल मात्र कर्मकांड संपन्न किए हैं, केवल जीभ की नोक से जप किए हैं और उँगलियों की सहायता से मालाएँ घुमाई हैं, लेकिन मन में वह श्रद्धा उत्पन्न न कर सके, विश्वास उत्पन्न न कर सके, ऐसे लोग खाली रहेंगे। बहुत सारा जप करते हुए अगर अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ उपासनाएँ की जाएँ, तो यह एक ही पहलू ऐसा है जिसके आधार पर हम यह आशा कर सकते हैं कि हमारे अच्छे परिणाम निकलने चाहिए और उपासना को पूरा-पूरा लाभ देना चाहिए, यह एक पक्ष हुआ।

दूसरा—उपासना को सफल बनाने के लिए परिष्कृत व्यक्तित्व का होना नितांत आवश्यक है। परिष्कृत व्यक्तित्व का मतलब यह है कि आदमी चरित्रवान हो, लोकसेवी हो, सदाचारी हो, संयमी हो, अपने व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाने वाला हो। अब तक ऐसे ही लोगों को सफलताएँ मिली हैं। अध्यात्म का लाभ स्वयं पाने और दूसरों को दे सकने में केवल वही साधक सफल हुए हैं,

जिन्होंने कि जप, उपासना के कर्मकांडों के सिवाय अपने व्यक्तिगत जीवन को शालीन, समुन्नत, श्रेष्ठ और परिष्कृत बनाने का प्रयत्न किया है। संयमी व्यक्ति, सदाचारी व्यक्ति जो भी जप करते हैं, उपासना करते हैं, उनकी प्रत्येक उपासना सफल हो जाती है। दुराचारी आदमी, दुष्ट आदमी, नीच, पापी और पतित आदमी भगवान का नाम लेकर यदि चाहें, तो पार नहीं हो सकते। भगवान का नाम लेने का परिणाम यह होना चाहिए कि आदमी का व्यक्तित्व सही हो और वह शुद्ध बने। अगर व्यक्ति को शुद्ध और समुन्नत बनाने में राम नाम सफल नहीं हुआ, तो जानना चाहिए कि उपासना की विधि में बहुत भारी भूल रह गई और नाम के साथ में काम करने वाली बात को भुला दिया गया। परिष्कृत व्यक्तित्व उपासना का दूसरा वाला पहलू है—गायत्री उपासना के संबंध में अथवा अन्यान्य उपासनाओं के संबंध में।

तीसरा—हमारा अब तक का अनुभव यह है कि उच्चस्तरीय जप और उपासनाएँ तब सफल होती हैं। जबकि आदमी का दृष्टिकोण और महत्त्वाकांक्षाएँ भी ऊँची हों। घटिया उद्देश्य लेकर के, निकृष्ट कामनाएँ और वासनाएँ लेकर के अगर भगवान की उपासना की जाए और देवताओं का द्वार खटखटाया जाए, तो देवता सबसे पहले कर्मकांडों की विधि और विधानों को देखने की अपेक्षा यह मालूम करने की कोशिश करते हैं कि इसकी उपासना का उद्देश्य क्या है? किस काम के लिए करना चाहता है? अगर उन्हीं कामों के लिए जिसमें कि आदमी को अपनी मेहनत और परिश्रम के द्वारा कमाई करनी चाहिए, उसको सरल और सस्ते तरीके से पूरा कराने के लिए देवताओं का पल्ला खटखटाता है तो वे उसके व्यक्तित्व के बारे में समझ जाते हैं कि यह कोई घटिया आदमी है और घटिया काम के लिए हमारी सहायता चाहता है। देवता भी बहुत व्यस्त हैं। देवता सहायता तो करना चाहते हैं, लेकिन सहायता करने से पहले यह तलाश करना चाहते हैं कि हमारा उपयोग कहाँ किया जाएगा?

किस काम के लिए किया जाएगा? यदि घटिया काम के लिए उनका उपयोग किया जाने वाला है, तो वे कदाचित ही कभी किसी के साथ सहायता करने को तैयार होते हैं। ऊँचे उद्देश्यों के लिए देवताओं ने हमेशा सहायता की है।

मंत्रशक्ति और भगवान की शक्ति केवल उन्हीं लोगों के लिए सुरक्षित रही है जिनका दृष्टिकोण ऊँचा रहा है। जिन्होंने किसी अच्छे काम के लिए, ऊँचे काम के लिए भगवान की सेवा और सहायता चाही है, उनको बराबर सेवा और सहायता मिली है। इन तीनों बातों का हमने प्राणप्रण से प्रयत्न किया और हमारी गायत्री उपासना में प्राण संचार होता चला गया। प्राण संचार अगर होगा, तो हर चीज प्राणवान और चमत्कारी होती चली जाती है और सफल होती जाती है। हमने अपने व्यक्तिगत जीवन में चौबीस लाख के चौबीस साल में चौबीस महापुरश्चरण किए। जप और अनुष्ठानों की विधियों को संपन्न किया। सभी के साथ जो नियमोपनियम थे, उनका पालन किया, यह भी सही है, लेकिन हर एक को यह ध्यान रहना चाहिए कि हमारी उपासना में कर्मकांडों का, विधि-विधानों का जितना ज्यादा स्थान है उससे कहीं ज्यादा स्थान इस बात के ऊपर है कि हमने उन तीन बातों को जो आध्यात्मिकता की प्राण समझी जाती हैं, उन्हें पूरा करने की कोशिश की है। अटूट श्रद्धा और अडिग विश्वास गायत्री माता के प्रति रख करके और उसकी उपासना के संबंध में अपनी मान्यता और भावना रख करके प्रयत्न किया है और उसका परिणाम पाया है। व्यक्तित्व को भी जहाँ तक संभव हुआ है परिष्कृत करने के लिए पूरी कोशिश की है। एक ब्राह्मण को और एक भगवान के भक्त को जैसा जीवन जीना चाहिए हमने भरसक प्रयत्न किया है कि उसमें किसी तरह से कमी न आने पाए। उसमें पूरी-पूरी सावधानी हम बरतते रहे हैं। अपने आपको धोबी के तरीके से धोने में और धुनिए के तरीके से धुनने में हमने आगा-पीछा नहीं किया है। यह हमारी उपासना को फलित

और चमत्कृत बनाने का एक बहुत बड़ा कारण रहा है। उद्देश्य हमेशा से ऊँचा रहा। उपासना हम किस काम के लिए करते हैं, हमेशा यह ध्यान बना रहा। पीड़ित मानवता को ऊँचा उठाने के लिए, देश-धर्म, समाज और संस्कृति को समुन्नत बनाने के लिए हम उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं। भगवान की प्रार्थना करते हैं। भगवान ने देखा कि किस नीयत से यह आदमी कर रहा है। भगीरथ की नीयत को देखकर के गंगाजी स्वर्ग से पृथ्वी पर आने के लिए तैयार हो गईं थीं और शंकर भगवान उनकी सहायता करने के लिए तैयार हो गए थे। हमारे संबंध में भी वैसा ही हुआ। ऊँचे उद्देश्यों को सामने रख करके चले तो दैवी शक्तियों की भरपूर सहायता मिली। हमारा अनुरोध यह है कि जो कोई भी आदमी यह चाहते हों कि हमको अपनी उपासना को सार्थक बनाना है तो उन्हें इन तीनों बातों को बराबर ध्यान में रखना चाहिए।

हम देखते हैं कि अकेला बीज बोना सार्थक नहीं हो सकता। उससे फसल नहीं आ सकती। फसल कमाने के लिए बीज एक, भूमि दो और खाद-पानी, इन तीन चीजों की जरूरत है। निशाना लगाने के लिए बंदूक एक, कारतूस दो और निशाना लगाने वाले का अभ्यास तीन, यह तीनों होंगी, तब बात बनेगी। मूर्ति बनाने के लिए पत्थर एक, छेनी-हथौड़ा दो और मूर्ति बनाने की कलाकारिता तीन। लेखन-कार्य के लिए कागज, स्याही और शिक्षा तीनों चीजों की जरूरत है। इसी तरीके से उपासना के चमत्कार अगर किन्हीं को देखने हों, उपासना की सार्थकता की परख करनी हो तो इन तीनों बातों को ध्यान में रखना पड़ेगा, जो हमने अभी निवेदन किया, उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, परिष्कृत व्यक्तित्व और अटूट श्रद्धा-विश्वास। इन तीनों को मिलाकर के जो कोई भी आदमी उपासना करेगा, निश्चयपूर्वक और विश्वासपूर्वक हम कह सकते हैं कि आध्यात्मिकता के तत्त्वज्ञान का जो कुछ भी माहात्म्य बताया गया है कि आदमी स्वयं लाभान्वित होता है, समर्थ बनता है, शक्तिशाली

बनता है, शांति पाता है, स्वर्ग-मुक्ति जैसा लाभ प्राप्त करता है और दूसरों की सेवा-सहायता करने में समर्थ होता है, सही है।

गायत्री मंत्र के संबंध में हम यही प्रयोग और परीक्षण आजीवन करते रहे और पाया कि गायत्री मंत्र सही है, शक्तिमान है। सब कुछ उसके भीतर है, लेकिन है तभी जब गायत्री मंत्र के बीज को तीनों चीजों से समन्वित किया जाए। उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, अटूट श्रद्धा-विश्वास और परिष्कृत व्यक्तित्व यह जो करेगा पूरी सफलता पाएगा। हमारे अब तक के गायत्री उपासना संबंधी अनुभव यही हैं कि गायत्री मंत्र के बारे में जो तीनों बातें कही जाती हैं, पूर्णतः सही हैं। गायत्री को कामधेनु कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को कल्पवृक्ष कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को पारस कहा जाता है, इसको छूकर के लोहा सोना बन जाता है, यह सही है। गायत्री को अमृत कहा जाता है, जिसको पीकर के अजर और अमर हो जाते हैं, यह भी सही है। यह सब कुछ सही उसी हालत में हैं जबकि गायत्री रूपी कामधेनु को चारा भी खिलाया जाए, पानी पिलाया जाए, उसकी रखवाली भी की जाए। गाय को चारा आप खिलाएँ नहीं और दूध पीना चाहें, तो यह कैसे संभव होगा? पानी पिलाएँ नहीं, ठंड से उसका बचाव करें नहीं, तो कैसे संभव होगा? गाय दूध देती है, यह सही है, लेकिन साथ-साथ में यह भी सही है कि इसको परिपुष्ट करने के लिए, दूध पाने के लिए उन तीनों चीजों की जरूरत है जो कि मैंने अभी आपसे निवेदन किया।

यह विज्ञान पक्ष की बात हुई। अब ज्ञान पक्ष की बात आती है। यह मेरा ७० वर्ष का अनुभव है कि गायत्री के तीन पाद, तीन चरण में तीन शिक्षाएँ भी हैं और ये तीनों शिक्षाएँ ऐसी हैं कि अगर उन्हें मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में समाविष्ट कर सके, तो धर्म और अध्यात्म का सारे का सारा रहस्य और तत्त्वज्ञान का उसके जीवन में समाविष्ट होना संभव है। तीन पक्ष त्रिपदा गायत्री हैं—

(१) आस्तिकता, (२) आध्यात्मिकता, (३) धार्मिकता। इन तीनों को मिला करके त्रिवेणी संगम बन जाता है। ये क्या हैं तीनों ?

पहला है—आस्तिकता। आस्तिकता का अर्थ है ईश्वर का विश्वास। भजन-पूजन तो कई आदमी कर लेते हैं, पर ईश्वर-विश्वास का अर्थ यह है कि सर्वत्र जो भगवान समाया हुआ है, उसके संबंध में यह दृष्टि रखें कि उसका न्याय का पक्ष, कर्मफल देने वाला पक्ष इतना समर्थ है कि उसका कोई बीच-बचाव नहीं हो सकता। भगवान सर्वव्यापी है, सर्वत्र है, सबको देखता है, अगर यह विश्वास हमारे भीतर हो तो हमारे लिए पाप कर्म करना संभव नहीं होगा। हम हर जगह भगवान को देखेंगे और समझेंगे कि उसकी न्याय, निष्पक्षता हमेशा अक्षुण्ण रही है। उससे हम अपने आपका बचाव नहीं कर सकते। इसलिए आस्तिक का, ईश्वर विश्वासी का पहला क्रिया-कलाप यह होना चाहिए कि हमको कर्मफल मिलेगा, इसलिए हम भगवान से डरें। जो भगवान से डरता है उसको संसार में और किसी से डरने की जरूरत नहीं होती। आस्तिकता—चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा का मूल है। आदमी इतना धूर्त है कि वह सरकार को झुठला सकता है, कानूनों को झुठला सकता है, लेकिन अगर ईश्वर का विश्वास उसके अंत:करण में जमा हुआ है तो वह बराबर ध्यान रखेगा। हाथी के ऊपर अंकुश जैसे लगा रहता है, आस्तिकता का अंकुश हर आदमी को ईमानदार बनने के लिए, अच्छा बनने के लिए प्रेरणा करता है, प्रकाश देता है।

ईश्वर की उपासना का अर्थ है—जैसा ईश्वर महान है वैसे ही महान बनने के लिए हम कोशिश करें। हम अपने आपको भगवान में मिलाएँ। यह विराट विश्व भगवान का रूप है और हम इसकी सेवा करें, सहायता करें और इस विश्व उद्यान को समुन्नत बनाने की कोशिश करें, क्योंकि हर जगह भगवान समाया हुआ है। सर्वत्र भगवान विद्यमान है, यह भावना रखने से 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना मन में पैदा होती है। गंगा जिस तरीके से अपना समर्पण

करने के लिए समुद्र की ओर चल पड़ती है, आस्तिक व्यक्ति, ईश्वर का विश्वासी व्यक्ति भी अपने आपको भगवान में समर्पित करने के लिए चल पड़ता है। इसका अर्थ यह हुआ कि भगवान की इच्छाएँ मुख्य हो जाती हैं। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएँ, व्यक्तिगत कामनाएँ भगवान की भक्ति समाप्त कराती हैं और यह सिखाती हैं कि ईश्वर के संदेश, ईश्वर की आज्ञाएँ ही हमारे लिए सब कुछ होनी चाहिए। हमें अपनी इच्छा भगवान पर थोपने की अपेक्षा, भगवान की इच्छा को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। आस्तिकता के ये बीज हमारे अंदर जमे हुए हों, तो जिस तरीके से वृक्ष से लिपटकर बेल उतनी ही ऊँची हो जाती है जितना कि ऊँचा वृक्ष है। उसी प्रकार से हम भगवान की ऊँचाई के बराबर ऊँचे चढ़ सकते हैं। जिस तरीके से पतंग अपनी डोरी बच्चे के हाथ में थमाकर आसमान में ऊँचे उड़ती चली जाती है। जिस तरीके से कठपुतली के धागे बाजीगर के हाथ में बँधे रहने से कठपुतली अच्छे-से-अच्छा नाच-तमाशा दिखाती है। उसी तरीके से ईश्वर का विश्वास, ईश्वर की आस्था अगर हम स्वीकार करें, हृदयंगम करें और अपने जीवन की दिशा-धाराएँ भगवान के हाथ में सौंप दें अर्थात भगवान के निर्देशों को ही अपनी आकांक्षाएँ मान लें, तो हमारा उच्चस्तरीय जीवन बन सकता है और हम इस लोक में शांति और परलोक में सद्गति प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।

आस्तिकता गायत्री मंत्र की शिक्षा का पहला वाला चरण है। इसका दूसरा वाला चरण है—आध्यात्मिकता। आध्यात्मिकता का अर्थ होता है—आत्मावलंबन, अपने आपको जानना, आत्मबोध। 'आत्मा वा अरे ज्ञातव्यः' अपने आपको जानना। अपने आपको न जानने से हम बाहर-बाहर भटकते रहते हैं। कई अच्छी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए, अपने दुःखों का कारण बाहर तलाश करते फिरते रहते हैं। जानते नहीं कि हमारी मनःस्थिति के कारण ही हमारी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। अगर हम यह जान पाएँ, तब

फिर हम अपने आपको सुधारने के लिए कोशिश करें। स्वर्ग और नरक हमारे ही भीतर हैं। हम अपने ही भीतर स्वर्ग दबाए हुए हैं, अपने ही भीतर नरक दबाए हुए हैं। हमारी मनःस्थिति के आधार पर ही परिस्थितियाँ बनती हैं। कस्तूरी का हिरण चारों तरफ खुशबू की तलाश करता फिरता था, लेकिन जब उसको पता चला कि वह तो नाभि में ही है, तब उसने इधर-उधर भटकना त्याग दिया और अपने भीतर ही ढूँढ़ने लगा। फूल जब खिलता है तब भौंरे आते ही हैं, तितलियाँ भी आती हैं। बादल बरसते तो हैं लेकिन जिसके आँगन में जितना पात्र होता है, उतना ही पानी देकर के जाते हैं। चट्टानों के ऊपर बादल बरसते रहते हैं, लेकिन घास का एक तिनका भी पैदा नहीं होता। छात्रवृत्ति उन्हीं को मिलती है जो अच्छे नंबर से पास होते हैं। संसार में सौंदर्य तो बहुत हैं, पर हमारी आँख न हो तो उसका क्या मतलब। संसार में संगीत-गायन तो बहुत हैं, शब्द बहुत हैं, पर हमारे कान न हों तो उन शब्दों का क्या मतलब। संसार में ज्ञान-विज्ञान तो बहुत हैं, पर हमारा मस्तिष्क न हो तो उसका क्या मतलब। ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं। इसलिए आध्यात्मिकता का संदेश यह है कि हर आदमी को अपने आपको देखना, समझना, सुधारने के लिए भरपूर प्रयत्न करना चाहिए। अपने आपको हम जितना सुधार लेते हैं, उतनी ही परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल बनती चली जाती हैं। यह सिद्धांत गायत्री मंत्र का दूसरा वाला चरण है।

तीसरा वाला चरण गायत्री मंत्र का है—धार्मिकता। धार्मिकता का अर्थ होता है—कर्तव्य परायणता, कर्तव्यों का पालन। कर्तृत्व, कर्म और धर्म लगभग एक ही चीज हैं। मनुष्य में और पशु में सिर्फ इतना ही अंतर है कि पशु किसी मर्यादा से बँधा हुआ नहीं है। मनुष्य के ऊपर हजारों मर्यादाएँ और नैतिक नियम बाँधे गए हैं और जिम्मेदारियाँ लादी गई हैं। जिम्मेदारियों को और कर्तव्यों को पूरा करना मनुष्य का कर्तव्य है। शरीर के प्रति हमारा कर्तव्य है कि

इसको हम निरोग रखें। मस्तिष्क के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसमें अवांछनीय विचारों को न आने दें। परिवार के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उनको सद्गुणी बनाएँ। देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उन्हें भी समुन्नत बनाने के लिए भरपूर ध्यान रखें। लोभ और मोह के पाश से अपने आपको छुड़ा करके अपनी जीवात्मा का उद्धार करना, यह भी हमारा कर्तव्य है और भगवान ने जिस काम के लिए हमको इस संसार में भेजा है, जिस काम के लिए मनुष्य योनि में जन्म दिया है, उस काम को पूरा करना भी हमारा कर्तव्य है। इन सारे कर्तव्यों को अगर हम ठीक तरीके से पूरा न कर सके, तो हम धार्मिक कैसे कहला सकेंगे?

धार्मिकता का अर्थ होता है—कर्तव्यों का पालना। हमने सारे जीवन में गायत्री मंत्र के बारे में जितना भी विचार किया, शास्त्रों को पढ़ा, सत्संग किया, चिंतन-मनन किया, उसका सारांश यह निकला कि बहुत सारा विस्तार ज्ञान का है, बहुत सारा विस्तार धर्म और अध्यात्म का है, लेकिन इसके सार में तीन चीजें समाई हुई हैं—(१) आस्तिकता अर्थात ईश्वर का विश्वास, (२) आध्यात्मिकता अर्थात स्वावलंबन, आत्मबोध और अपने आपको परिष्कृत करना, अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार करना और (३) धार्मिकता अर्थात कर्तव्यपरायणता। कर्तव्यपरायण, स्वावलंबी और ईश्वरपरायण कोई भी व्यक्ति गायत्री मंत्र का उपासक कहा जा सकता है और गायत्री मंत्र के ज्ञान पक्ष के द्वारा जो शांति और सद्गति मिलनी चाहिए उसका अधिकारी बन सकता है। हमारे जीवन के यही निष्कर्ष हैं। विज्ञान पक्ष में तीन धाराएँ और ज्ञान पक्ष में तीन धाराएँ। इनको जो कोई प्राप्त कर सकता हो, गायत्री मंत्र की कृपा से निहाल बन सकता है और ऊँची-से-ऊँची स्थिति प्राप्त करके इसी लोक में स्वर्ग और मुक्ति का अधिकारी बन सकता है। ऐसा हमारा अनुभव, ऐसा हमारा विचार और ऐसा हमारा विश्वास है।

ॐ शांतिः। *(४ जून १९८०)*

ब्रह्मतेजस् के अभिवर्द्धन हेतु गायत्री उपासना

गायत्री मंत्र जिन लोगों को याद हो, कृपा कर मेरे साथ कहें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

नारद पुराण का अनुवाद जिन दिनों मैं कर रहा था, उन दिनों एक बड़ी सुंदर कथा पढ़ने को आई। कथा थी एक लड़की की। राजा अश्वघोष की एक सुंदर लड़की थी जिसके गुण ऐसे कि जो कोई भी उसको वरण कर ले, साथ रहे, उसको धन और यश की कमी न रहे, सारी-की-सारी शक्तियों से विभूषित हो जाए। नाम था उसका 'सावित्री'। जब वह बड़ी होकर ब्याह लायक हो गई, तो संसार भर से माँग आने लगी कि इस लड़की का हमारे राजकुमार के साथ ब्याह कर दिया जाए। पिता विवाह की तैयारी कर रहे थे। कन्या ने एक दिन पिता से कहा—पिताजी! लड़के जिसे चाहें उसी के यहाँ कन्या को जाना चाहिए या लड़की की भी कोई अपनी इच्छा होती है। पिता ने कहा—बेटी, लड़की की भी इच्छा होती है और तेरी इच्छा के बिना मैं तेरी शादी नहीं करूँगा। सावित्री ने कहा, तो मुझे इजाजत दीजिए, मैं स्वयं अपने लिए लड़का तलाश करूँगी। राजा अश्वघोष ने एक रथ मँगाया, लड़की को बिठाया और कहा, बेटी तू कहीं भी जाकर अपने लिए लड़का ढूँढ़ ले।

लड़की रवाना हो गई। कई राज्यों में पहुँची, बड़े-बड़े राजकुमारों को देखा और सबको मना करती गई। एक दिन एक जंगल में एक लकड़हारे को देखा जो लकड़ी सिर पर रखे कहीं जा रहा था। उसने लड़के की ओर देखा और उससे कहा—लड़के! तेरा नाम क्या है? लड़के ने कहा—मेरा नाम सत्यवान है। तेरे चेहरे पर तो बड़ी चमक मालूम पड़ती है? उसने कहा—यह जो चमक है, ब्रह्मतेजस है। ऐसा ब्रह्मतेजस जिसे मैंने अपनी सुख-सुविधाओं को

एक कोने पर रखकर और माता-पिता की सेवा में संलग्न रहकर प्राप्त किया है। लड़की ने उसको देखा, पहचाना और पहचान करके गले में वरमाला पहना दी। उसने कहा—मैं सत्यवान की तलाश में थी और तू सत्यवान मुझे मिल गया। बाद में क्या हुआ? एक साल बाद उसकी मृत्यु हो गई और मृत्यु को परास्त करने के लिए सावित्री यमराज के पीछे-पीछे गई और अपने पति का प्राण छुड़ा करके लाई।

यह कथा आप सबने जरूर सुनी है। यह किस की कथा है? यह कथा आप सब ब्राह्मणों की है। ब्राह्मण माने—सत्यवान। सावित्री माने, वह माँ जिसके चरणों में हम और आप रोज मस्तक नवाते हैं। जिसको हम ब्रह्मशक्ति कहते हैं, वह माता सावित्री है जो तलाश करती रहती है कि किसको वरण करूँ? किसके साथ चलूँ? किसका पल्ला भारी करूँ? किसके साथ रहूँ? उसको ऐसे आदमी की जरूरत है जो सत्यवान हो। सत्यवान माने ब्राह्मण। यह ब्राह्मण किसी वर्ण का नाम नहीं है, किसी कौम का नाम नहीं है, किसी जाति का नाम नहीं है। ब्राह्मण वह व्यक्ति हैं जो ब्रह्म को जानते हैं। जिन्होंने ब्रह्म के तत्त्व को समझ लिया है, ब्रह्म के कर्तव्यों को जान लिया, वह ब्राह्मण हैं। ऐसे ही ब्राह्मण व्यक्ति को वरण करने के लिए, उनके साथ होने के लिए, उनके प्राण बचाने और रक्षा करने के लिए माँ गायत्री तलाश करती रहती है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके गले में जयमाला पहना दी जाए। ऐसा व्यक्ति ब्राह्मण होना चाहिए।

गायत्री मंत्र शक्ति का पुंज है, जिसकी प्रशंसा करते हुए वेद थकते नहीं। अथर्ववेद में वेदमाता गायत्री के बारे में कहा है—'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां.....।' सात ऋद्धियाँ, सात विभूतियाँ, सात सिद्धियाँ दिया करती है गायत्री। किसको? ब्राह्मण को। यह शर्त है कि ब्राह्मण के अलावा और किसी को नहीं देती। कोई भी जाए वह हर एक को मना कर देती है।

आप लोग यही सुनते भी हैं कि गायत्री का अधिकार ब्राह्मण को है। उसे गायत्री का जप करना ही चाहिए। यहाँ ब्राह्मण का अर्थ किसी वर्ण विशेष से नहीं है। यह विश्वमाता है। यह ब्राह्मण के लिए है, क्षत्रिय के लिए है, शूद्र के लिए है, हिंदू के लिए है, मुसलमान के लिए है, पारसी के लिए है, यहूदी के लिए है, काले लोगों के लिए है और सबके लिए है। विश्वमाता एक की नहीं हो सकती। सूरज एक का नहीं हो सकता, चंद्रमा एक का नहीं हो सकता। हवा एक की नहीं हो सकती। पृथ्वी एक की नहीं हो सकती, भगवान एक का नहीं हो सकता और गायत्री भी एक की नहीं हो सकती। वह सबकी है। लेकिन यह कैसे कहते हैं कि वह ब्राह्मण की है? ब्राह्मण की इसलिए कहते हैं कि शक्ति को धारण करना, शक्ति को ग्रहण करना, शक्ति से ओत-प्रोत होना हर आदमी का काम नहीं है। इसके लिए भूमि चाहिए। भूमि अगर मनुष्य के पास न हो तो वह लाभ नहीं मिल सकता जो मिलना चाहिए।

गायत्री का लाभ प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा। गायत्री का जप करना पड़ेगा। पुरश्चरण करने पड़ेंगे। ध्यान करना पड़ेगा। गायत्री चालीसा का पाठ करना पड़ेगा। नवरात्रों का अनुष्ठान करना पड़ेगा। परंतु इतना ही काफी नहीं है। तब एक और भी काम करना पड़ेगा कि जो व्यक्ति इस शक्ति को धारण करना चाहता हो उसको अपने भीतर ब्रह्मतेजस् उत्पन्न करना पड़ेगा। कोई जमाना था जब इस देश में ब्रह्मतेजस् जगमगाता था। क्षत्रिय विश्वामित्र वन में गए। सेना सहित भूखे एक तालाब के किनारे बैठे थे। गुरु वशिष्ठ को मालूम पड़ा, तो वे उनके पास गए और कहा—राजन हमारे यहाँ अतिथि सत्कार स्वीकार कीजिए। उन्होंने कहा—महाराज! हम दस हजार व्यक्ति हैं। आपकी कोठरी में तो कंदमूल होगा और इसके अतिरिक्त क्या हो सकता है। वशिष्ठ बोले—राजन! हमारी कोठरी में कंदमूल ही नहीं और भी

बहुत कुछ होता है, तो आप सबको भोजन करा देंगे? हाँ, सबको भोजन कराया गया।

भोजन करने के पश्चात विश्वामित्र ने कहा—महाराज! यह शक्ति कहाँ से आई? वशिष्ठ ने कहा—कामधेनु हमारे पास है। यह देवताओं की पुत्री नंदिनी है। जिसके माध्यम से मैं आपको भोजन कराने में समर्थ हुआ, ब्रह्मतेजस् धारण करने में समर्थ हुआ। विश्वामित्र ने कहा—इस गाय को तो आप हमें दे दीजिए जिससे हम मनोकामना पूर्ण करेंगे। गुरु वशिष्ठ ने कहा—यह गाय और किसी के यहाँ जा नहीं सकती, केवल ब्राह्मण के यहाँ रहेगी, दूसरा कोई इसे ग्रहण नहीं कर सकता, धारण नहीं कर सकता। विश्वामित्र बलपूर्वक छीनने लगे, तो नंदिनी अकेली खड़ी हो गई। ब्रह्मास्त्र नाम है इसका। ब्रह्मास्त्र माने ब्राह्मण का हथियार। हथियार बहुतों के पास होते हैं, पर ब्राह्मण का हथियार बहुत जोरदार है और उसका नाम है—गायत्री। दोनों में संघर्ष हुआ, विश्वामित्र की सारी सेना परास्त हो गई। वशिष्ठ की नंदिनी जीत गई। तब विश्वामित्र ने एक ही शब्द कहा—'धिक्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलम् बलम्।' क्षत्रिय का बल, भुजाओं का बल, पैसे का बल, विद्या का बल, ज्ञान का बल, यह सभी धिक अर्थात् छोटे हैं, राई-रत्ती के बराबर हैं। ब्रह्मतेज ही असली बल है।

मित्रो! एक जमाना याद आया, जब ब्राह्मण जगद्गुरु था। ज्ञान देने के लिए विश्व में वह जाता नहीं था, वरन सारे संसार के लोग शिक्षाएँ लेने के लिए हमारे पास आते थे। नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय सारी दुनिया के लिए ज्ञान के केंद्र बने हुए थे। ईसामसीह के बारे में जो नई खोज की गई है उसके अनुसार यरुशलम से चलकर एक बालक तक्षशिला के विश्वविद्यालय में आया और कई वर्षों तक पढ़ा। पढ़ने के बाद में उसने रोम और दूसरे देशों में घूम-घूमकर सत्य और अहिंसा का शिक्षण देना शुरू किया। वही बालक पीछे ईसामसीह कहलाया। सारे विश्व के लोग

इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए आते थे; जिनके शिक्षक, अध्यापक, डीन, वायस चांसलर ब्राह्मण होते थे, ऋषि होते थे और वे साधारण नहीं होते थे। मैं उनके गुणानुवाद गा रहा हूँ। जिन्होंने गायत्री की शक्ति को जाग्रत करके अपने भीतर धारण किया था। यह वर्ग यदि अपने उन्हीं कर्तव्यों पर टिका रहता, तो आज विश्व की दशा कुछ अलग ही रही होती।

पूर्व पुरुष अपने पीछे अपनी संतानों को धन-दौलत देकर जाते हैं, चीजें देकर जाते हैं, लेकिन जिम्मेदारियाँ भी देकर जाते हैं। पूर्वज ऋषि हमको अपनी जिम्मेदारियाँ देकर गए हैं कि हम विश्व का संरक्षण, विश्व का मार्गदर्शन और दिशा देने का वजन अपने ऊपर लें। जनेऊ संस्कार जब कराया जाता है, तब हर ब्राह्मण को एक प्रतिज्ञा करनी पड़ती है, कसम खानी पड़ती है कि 'वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिता:'—हम पुरोहित, हम ब्राह्मण राष्ट्रों को जिंदा रखेंगे। राष्ट्र को, देश को जीवित और जिंदा रखने की जिम्मेदारी, जो पूर्व पुरुष छोड़ गए हैं, कदाचित हम उसे निभा सके होते तो हमने भी सिर ऊँचा उठा करके उन्हीं बातों को कहा होता, जिनकी कि प्रशंसा हमारे शास्त्रों और ग्रंथों में ब्राह्मण की महत्ता के आगे सिर झुकाकर की गई है। हमको उन जिम्मेदारियों को निभाना ही चाहिए जो ब्राह्मण करते रहे हैं। प्राचीनकाल में ब्रह्मतेजस के धनी चाणक्य ने देखा कि राष्ट्र में अव्यवस्था फैल रही है। भारत छिन्न-भिन्न हो रहा है। उन्होंने चंद्रगुप्त को बुलाया और कहा, इसको सँभालने के लिए तुझको आगे बढ़ना चाहिए। चंद्रगुप्त के सिर पर चाणक्य का हाथ था। वे लड़ने नहीं गए, तो क्या, लेकिन ऐसी शक्ति भर दी, जिससे वह न जाने क्या-से-क्या कर सका? यह काम आप भी कर सकते हैं यदि आपके पास गायत्री की शक्ति हो तब। लेकिन उस शक्ति को हम भूल गए। प्राचीन काल में सारा विश्व आपके चरणों में इसलिए सिर झुकाता था कि हम शासन नहीं करते थे, पर शासकों पर नियंत्रण करते थे। रामराज्य में राम का राज्य हुआ, उनके पिता दशरथ का राज्य हुआ, उनके पिता रघु का, अज का,

दिलीप का राज्य हुआ। पीढ़ियाँ होती चली गईं, लेकिन गुरु वशिष्ठ का नियंत्रण बराबर बना रहा। शासन चलते थे, पर उन्हें चलाते थे ब्राह्मण। कब ? तब, जबकि वे उसकी उपासना करते थे, जिसकी कि आराधना के लिए आप लोग हजार कुंडों का दीपक जला करके आरती उतारने चल रहे हैं। उस ब्रह्म शक्ति की जिस शक्ति से हम जगमगाते थे किसी जमाने में और राष्ट्रों पर नियंत्रण करते थे, शासकों को उत्पन्न करते, पैदा करते थे, शासकों को उतारते थे और चढ़ाते थे। विभूतियाँ हमारे चरणों के अंतर्गत रहती थीं, क्योंकि ब्रह्मतेजस् हमारे पास था।

गायत्री आपकी माता है। आपकी माता वही नहीं है जिसने जन्म दिया, वरन आपकी माता शक्ति की पुंज विश्वमाता है। गायत्री को, अपनी माता को हम भूल गए। जो आदमी अपनी माता को भूल जाएगा, दूध कहाँ से पिएगा ? शक्ति का पुंज है यह गायत्री मंत्र। लेकिन हमारे मंत्र न जाने क्यों चमत्कार नहीं दिखा रहे हैं ? इसलिए नहीं दिखा रहे हैं, क्योंकि एक हिस्सा हमारा बाकी रह गया है। जमीन को हमने सँभाला नहीं और बीज बो दिया। चरित्र जमीन है और मंत्र बीज। बीज वहीं उगेगा, फलेगा, जहाँ जमीन होगी। जमीन नहीं होगी तो बीज कैसे फलेगा ? मनुष्य का चरित्र सबसे बड़ा है। चरित्रवान की वाणी से वचन कहे जाएँगे, जो मंत्र बोले जाएँगे, वे सत्य होते चले जाएँगे, मिथ्या नहीं हो सकते। शृंगी ऋषि द्वारा राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ की कथा आपने सुनी है। अब मैं आपको अपनी जिंदा आदमी की गवाही पेश करता हूँ। अभी पचास लाख व्यक्ति मेरे हैं। ठोस आदमी इसमें से एक लाख भी नहीं हैं जो गायत्री मंत्र की विद्या सीखने, उसकी सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए आते हैं। फिर उनचास लाख कौन हैं ? ४९ लाख वे हैं जो दुखी हैं, कष्ट में हैं, मुसीबत में हैं, जिनको सांसारिक और मानसिक कठिनाइयों ने घेर रखा है। वे भी आते रहे हैं और कहते रहे हैं कि मेरी ये दिक्कतें हैं, आप कोई सहायता कीजिए। मैंने

कहा—भगवान से प्रार्थना करूँगा और भगवान से प्रार्थना सही होती चली गई। इस तरीके से कितने ही आदमी दुखों को दूर कराने के लिए आते हैं। यह कैसे संभव हो गया? गायत्री मंत्र की सिद्धि कैसे हो गई? जप करने का महत्त्व क्या मैं अकेला ही जानता हूँ? दूसरे किसी ने जप नहीं किया? बहुतों ने जप किया, फिर फल क्यों नहीं मिला? फल इसलिए नहीं मिला कि लोगों ने अपनी जीभ को जला दिया। झूठ बोला, जीभ जल गई। पराया अन्न खाया, कुधान्य खाया, जीभ जल गई। असत्य भाषण किया, दूसरों पर क्रोध किया, जीभ जल गई। जली हुई जीभ के द्वारा किस तरीके से मंत्रों का उच्चारण हो और कैसे मंत्र को सफलता मिले? जीभ जले नहीं, इसके लिए हमारे चरित्र और आचरण उच्चकोटि के होने चाहिए।

मंत्र कारतूस की तरीके से है और मनुष्य का व्यक्तित्व बंदूक के तरीके से। कारतूस का अपना महत्त्व है, पर उससे भी ज्यादा कीमती बंदूक है, जो बढ़िया लोहे की बनी और ढली हुई हो। हमें अपने चरित्र को, जीवन को उच्चकोटि का बनाना पड़ेगा। अपने आपको संयमी, ब्रह्मचारी, ईमानदार, नेक और शरीफ बनाना पड़ेगा। यही तो ब्राह्मण की परिभाषा है। ब्राह्मण जन्म से नहीं कर्म से होता है। कर्म भी हमारे ब्राह्मण जैसे होने चाहिए। अभी ब्राह्मणत्व खंडहर हो गया, टूट-फूट गया है जिसे फिर से 'रिपेयर' करने की जरूरत है। फिर हमको चरित्रवान, विद्यावान, सेवाभावी और ईमानदार बनने की जरूरत है। ऐसे व्यक्ति यदि हम अपनी साधना से पैदा कर सकते हैं, तो हम ब्राह्मणत्व की सेवा कर सकते हैं और उस चमत्कार को देख सकते हैं जो गायत्री मंत्र के साथ में जुड़ा हुआ है, जो यज्ञ के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

यज्ञ की महत्ता असाधारण है। राजा दशरथ के पुत्रेष्ठि यज्ञ की कथा प्रसिद्ध है। रावण जब पराजित होने लगा तब उसने रामचंद्रजी की शक्ति का मुकाबला करने के लिए एक यज्ञ का आयोजन

किया। राम और लक्ष्मण को जब पता चला, तो उन्होंने कहा—यदि यज्ञ पूरा हो गया, तो हमारी विजय मुश्किल हो जाएगी। हनुमान जी गए और यज्ञ का विध्वंस किया। यज्ञ की शक्ति बहुत बड़ी है। यह कोई समारोह या आयोजन नहीं, वरन शक्तियों का आह्वान है। यह उन शक्तियों का आह्वान है जिसके द्वारा मनुष्य क्या-से-क्या बन सकता है। ब्राह्मण पैदा नहीं होता, वह यज्ञ की अग्नि में पकाया जाता है। घड़ा पैदा नहीं होता, अग्नि के अवे में पकाया जाता है। 'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनु:'—ब्राह्मण पैदा नहीं होते, यज्ञों के द्वारा, महायज्ञों के द्वारा पकाए जाते हैं। चंद्रोदय और अभ्रक पकाया जाता है। खिचड़ी कहीं बनी बनाई नहीं मिलती, पकाई जाती है। ब्राह्मण भी पैदा नहीं होते, वे यज्ञ के अवे में बनाए और पकाए जाते हैं।

प्राचीन काल में पहले हम यज्ञ पिता को भोजन कराते थे, तब भोजन करते थे। अग्निहोत्र हमारे जीवन का अंग था। गायत्री तपोभूमि में अखंड अग्नि स्थापित है। अखंड जप हमारे यहाँ होता है। उसका परिणाम है यह ब्रह्मवर्चस जिसकी आप उपासना करते हैं। आज की परिस्थितियों में यज्ञ की बहुत जरूरत है जिसका कि आप लोग आयोजन कर रहे हैं। इससे मानव समाज की बड़ी सेवा होने वाली है। इससे लोगों के शारीरिक, मानसिक दु:ख दूर हो सकते हैं। आप प्रयोग करके देखिए। जो लोग हवन में सम्मिलित हों, उनके शरीर की बीमारियों के बारे में इम्तहान लेकर के देखिए कि हवन पर बैठने वालों की बीमारियाँ दूर हुई कि नहीं। मानसिक बीमारियाँ जिनमें क्रोध, काम विकार, असंतोष, झल्लाहट, सनकीपन से लेकर पागलपन तक शामिल हैं, ऐसे लोगों को हवन पर बिठाकर देखिए कि शरीर और मन की बीमारियों को वह दूर करता है कि नहीं। यह व्यक्ति की बात है।

अब मैं व्यक्ति की नहीं, सारे विश्व के कल्याण की बात कहता हूँ। भगवान राम जब लंका विजय करके घर आए तब गुरु

वशिष्ठ से पूछा—अब क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा—राम! अभी तो स्थूल शरीर वाला रावण मारा है, पर सूक्ष्म शरीर वाला रावण जिंदा है, जो आकाश में फैला हुआ है। रावण ने जो बुरे कर्म किए थे, जो हवाएँ फैलाईं थीं, जो गंदे विचार फैलाए गए थे, उससे सारा आकाश क्षुब्ध हो गया है, उसे शांत करो। राम ने कहा—स्थूल रावण को तो मार दिया, पर यह कैसे मारा जाएगा? गुरु वसिष्ठ ने कहा—अश्वमेध यज्ञ से। रामचंद्र जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किए। बनारस के जिस स्थान पर दस अश्वमेध यज्ञ किए गए, उस स्थान का नाम दशाश्वमेध घाट पड़ा। गुरु वशिष्ठ जी ने कहा—अब वह रावण मारा गया, क्योंकि जिस आकाश में इतनी हाय, विध्वंस और हिंसा फैली हुई थी, उसका निवारण हो गया।

पिछले दिनों दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं। उसमें कितनी आत्माएँ मारी गईं कितने जीवों की हत्याएँ हुईं, कितनी गोलियाँ चलीं, कितनी बारूद आसमान में फैलाई गई। अंतरिक्ष दूषित और गर्हित हो गया। अब जो बच्चा पैदा होता है वही संस्कार ले करके आता है गंदे आसमान में से। जो भी वृष्टि होती है, जो भी अनाज पैदा होता है, जो भी वनस्पतियाँ और प्राणी पैदा होते हैं, जन्म से ही वह संस्कार लेकर आते हैं। माता-पिता रोते हैं, अच्छी संतान हुई, इससे न होती तो अच्छा रहता। यह संस्कार इस आसमान में फैले हुए हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने भी यही किया था। पांडवों ने कहा—भगवन! राजगद्दी मिल गई, अब हम शांति से बैठेंगे। आप बताइए हमको अब क्या करना है? कृष्ण ने कहा—सूक्ष्म दुर्योधन अभी नहीं मारा गया। सूक्ष्म कंस, सूक्ष्म जरासंध, सूक्ष्म शिशुपाल अभी नहीं मरे। केवल शरीरधारी शिशुपाल मरा। शरीरधारी कौरव मारे गए, पर सूक्ष्म कौरव मारने बाकी हैं। ये कैसे मरेंगे? राजसूय यज्ञ किया गया।

उस यज्ञ से आकाश-अंतरिक्ष की शुद्धि की गई। अंतरिक्ष की शुद्धि के लिए और उन सबके लिए जो नई पीढ़ी के लोग पैदा होने

वाले हैं, जो समस्याओं से उलझे हुए हैं, जो संकट और कठिनाइयों से भरे हुए हैं, उस सारी मानव जाति का कल्याण करने के लिए जो यज्ञ कर रहे हैं, यह सबसे बड़ा परोपकार है। इससे बड़ा परोपकार और कुछ नहीं हो सकता। यह सारे मनुष्य जाति के लिए ब्रह्मभोज है। इससे बड़ा ब्रह्मभोज और दूसरा हो नहीं सकता। सब बलवान और नीरोग होते हैं। यज्ञ से असंख्य मनुष्यों के रोग, शारीरिक-मानसिक विकार दूर होते हैं। इससे विश्व में शांति होती है। दो महायुद्धों के द्वारा, गंदे सिनेमा और दूसरे गंदे गीतों के द्वारा जो आकाश प्रदूषित हो गया है, इसको वेद मंत्रों के द्वारा यज्ञ से दूर किया जा सकता है। इसमें सारे विश्व का कल्याण छिपा हुआ है और आप लोगों का कल्याण भी जिन्होंने यज्ञ का संकल्प किया है। आप लोग जो यज्ञ करने जा रहे हैं उनके बारे में वेद भगवान ने ही विश्वास दिलाया, जिम्मेदारी उठाई, कसम खाई और कहा है— 'जिन लोगों ने मुट्ठीभर कर सामग्री लाई, हवन कर दी, हमने उनकी मुट्ठियों को भर दिया। तुम घी का एक चम्मच भर कर लाए, हवन किया, हमने तुम्हारी मुट्ठियों को घी से भर दिया।' यह बैंक में जमा करने के बराबर है। यज्ञ चीजों को जलाता नहीं है, वरन हम जो चीजें हवन करते हैं उससे लाखों गुनी चीज इस सारे आकाश को मिल जाती हैं। यह एक वैज्ञानिक उपाय है। यज्ञ ब्रह्मतेजस जगाने की विधि है। यह वह कर्मकांड है जिससे न केवल हम और आप ब्रह्म समाज के लोग अपना कर्तव्य पालन कर सकेंगे, वरन सारी मनुष्य जाति के प्रति भी अपने कर्तव्यों का पालन कर सकेंगे।

गायत्री मंत्र जिसकी आप उपासना करते हैं, जिसको ब्रह्मास्त्र कहते हैं, यह ब्राह्मण का हथियार है। इसे कामधेनु कहते हैं, अमृत और पारस कहते हैं, जिसको छूकर लोहा सोना हो जाता है। यह गायत्री वेदमाता है। उसके प्रति आपके कर्मकांड सराहनीय हैं, लेकिन उससे भी अगला कदम आपका यह होना चाहिए कि

जो भी गायत्री की उपासना करते हैं उनको सत्यवान बनना ही चाहिए, ताकि यह सावित्री जो गायत्री का ही दूसरा नाम है, आपके गले में विजय माला पहना सके। यह गायत्री शक्तियों का पुंज है, देवत्व की देवी है। यह ब्रह्मवर्चस है। यह सब कुछ है। कोई भी ऐसी चीज नहीं, जो इसके पास न हो। यह सतयुग में भी फल देती है और कलियुग में भी फल देती है, पर शर्त एक ही है कि जिन-जिन लोगों ने गायत्री उपासना के प्रति कदम बढ़ाए हैं उनको दूसरा कदम यह बढ़ाना चाहिए कि अपने जीवन को उत्तम बनाएँ, उज्ज्वल बनाएँ। सदाचारी, विवेकवान, शिष्ट, पवित्र और परोपकारी बनाएँ। जैसे-जैसे अपने आपको साफ करते चले जाएँगे, जीवन पवित्र और शुद्ध होता चला जाएगा, वैसे-वैसे ही भगवान के नाम का रंग, गायत्री का रंग आप पर चढ़ता हुआ चला जाएगा। यह रहस्य है, चाबी है गायत्री मंत्र की और अन्य सारे अध्यात्म की।

मित्रो! मैं इसी राह पर अब तक चलता हुआ चला आया और यह अनुभव निकालने में समर्थ हो सका कि यह ब्रह्मतेजस जिसकी कि आप उपासना करते हैं और मैं उपासना करता रहा, एक शक्तिपुंज है। इसके बराबर उपासना करते हुए जो लाभ उठाया जा सकता है कोई दूसरा व्यापार, दूसरा लाभ और दूसरा परमार्थ नहीं। आप लोगों ने अनेक तरह के व्यापार और कार्य किए हैं। मेरा व्यापार जिंदगी भर यही रहा है और मैं जानता हूँ कि इस व्यापार से कितना लाभ उठाया जा सकता है, कितना लाभ उठाया गया है। मैं चाहता हूँ कि मेरे तरीके से आप लोग भी लाभ उठाएँ और उसी तरीके से लाभान्वित हों, जैसे कि आपके पूर्व पुरुष लाभान्वित होते रहे हैं।

ॐ शांतिः।

(११ दिसंबर १९७२)

आपकी उपासना सफल कैसे हो ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! गायत्री को हमने त्रिपदा कहा है, ऋषियों ने त्रिपदा कहा है। अगर आप गायत्री मंत्र से उपासना में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको एक महत्त्वपूर्ण शर्त पूरी करनी होगी, कुछ खास अवलंबन लेकर चलना होगा, यही मेरे जीवन का निचोड़ है, सार है, निष्कर्ष है। गायत्री को जिसने सफल बनाया, आप उस आधार को समझने की कोशिश करें।

यह प्रमुख आधार है—श्रद्धा। श्रद्धा विहीन, विश्वास विहीन किसी तरीके से लोग चिह्न पूजा करते हुए चले जाते हैं। जरा सफलता मिल गई तो बाँट दिया गायत्री माता का प्रसाद, सवा रुपए का और असफलता मिली तो गायत्री माता को फेंक दिया और कह दिया कि मेरा गायत्री पर कोई विश्वास नहीं है। गायत्री मेरी कौन लगती है ? उससे क्या लेना ? हम तो अपने फायदे के लिए गायत्री कर रहे थे। श्रद्धा का अर्थ यह नहीं है। माँ प्यार भी करती है, मिठाई भी खिलाती है और जब नाराज होती है, तो गाल पर चपत भी लगाती है। बच्चे को फोड़ा हो जाता है, तो डॉक्टर के पास चीरा लगवाने को भी ले जाती है, हर स्थिति में साथ रहती है। श्रद्धा वह है जो लाभ में और हानि में, सफलता और असफलता में अविचल-अटूट बनी रहे, अडिग बनी रहे। अटूट विश्वास, अटूट श्रद्धा की शक्ति असीम है। मीरा ने जब एक पत्थर पर श्रद्धा जमाई तो वह गिरिधर गोपाल हो गया। रामकृष्ण परमहंस ने जब एक पत्थर में श्रद्धा जमाई तो वह भगवान हो गया। एकलव्य ने एक मिट्टी के टुकड़े में श्रद्धा जमाई तो श्रद्धा से वह द्रोणाचार्य हो गया। यह सब श्रद्धा का चमत्कार है। नहीं साहब, गिरिधर ने बड़ी कृपा की थी

मीरा पर। गिरिधर गोपाल ने कोई कृपा नहीं की थी, वरन मीरा की श्रद्धा ने पत्थर से टक्कर खाई और उसने एक नया भगवान बनाकर खड़ा कर लिया, छाया पुरुष के तरीके से जो मीरा के साथ-साथ चला करता था। रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा ने काली से टक्कर मारी और उनका विश्वास काली के रूप में श्रद्धा की छाया बनकर खड़ा हो गया। वही सहायता करता था। विश्वास बड़ी चीज है।

मैं आपको श्रद्धा की, सामर्थ्य की बात कह रहा था। विचारणा भी एक शक्ति है, धन भी एक शक्ति है, बल भी एक शक्ति है, किंतु दुनिया में सबसे बड़ी एक ही शक्ति और सामर्थ्य है, खास तौर से आध्यात्मिक क्षेत्र में और वह है—श्रद्धा की शक्ति। श्रद्धा की शक्ति का विकास करते हैं हम गुरु के माध्यम से। हमने अपने गुरु के माध्यम से अपनी श्रद्धा को परिपक्व किया है। अब हमारी उपासना में केवल हमारा गुरु ही रह गया है। हमने भगवान की अलग शक्ल बना दी है। वह बंशी बजाता हुआ नहीं है, वरन बाल बखेरे हुए नंग-धडंग है, जिसके पास कपड़े भी नहीं हैं, उसी रूप का भगवान। वह बहुत सामर्थ्यवान है। हमारा गुरु हमारे पास बैठा रहता है। वह कैसे बना लिया आपने? बेटे, हमने श्रद्धा की दृष्टि से बना लिया। श्रद्धा की शक्ति असीम है। श्रद्धा भगवान के समान है। हमने अपनी उपासना में श्रद्धा की शक्ति को महत्त्व दिया है और उसे इतना अटूट मन में बनाकर रखा है कि हमारी श्रद्धा को कोई डगमग नहीं कर सकता। हम सब चीज गँवा देंगे, पर श्रद्धा नहीं गँवा सकते। श्रद्धा हमारा संबल है, हमारी शक्ति है। श्रद्धा के आधार पर ही हमने गायत्री माता को पाया है। यदि आपको उपासना करनी है तो उपासना के पीछे एक ही शक्ति का समावेश करना, उसका नाम है—श्रद्धा। श्रद्धा में शक्ति है, चाहे मंत्र में करो, चाहे गुरु में करो, चाहे उपासना में करो, चाहे भगवान में करो, किसी में भी करो, श्रद्धा जिसमें जोड़ दी जाएगी उसी में चमत्कार खड़े हो जाएँगे। यदि माला के साथ में आपने श्रद्धा का समावेश किया है, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ, आप सफल होंगे। मेरे जीवन का

अनुभव और निचोड़ नंबर एक, जिसके सहारे मैंने आध्यात्मिक प्रगति की, गायत्री माता को अपनी मुट्ठी में लिया और खरीद लिया, श्रद्धा की कीमत पर।

श्रद्धा के साथ ही जरूरी है—चरित्र। चरित्र किसे कहते हैं? चरित्र कहते हैं—कपड़े को रंगने से पहले धोने की जरूरत पड़ती है। धोएँगे नहीं, तो उस पर रंग नहीं चढ़ेगा। राम का नाम बीज है। बीज में बड़ी शक्ति है, लेकिन उसके लिए जमीन चाहिए। हर जगह बीज काम नहीं दे सकता। प्रत्येक व्यक्ति का मंत्र सार्थक नहीं हो सकता। मंत्र को सार्थक करने के लिए, भगवान को अवतरित करने के लिए स्वच्छ मन की जरूरत है। मन आपका साफ नहीं, तो भगवान आपको दिखाई नहीं देगा। मैला मन, गलीज मन, दुष्ट मन, स्वार्थी चरित्र, भ्रष्ट चरित्र यदि आपका है, तो मैं कहता हूँ कि भगवान आपके पास आएँगे, तो सही, पर टक्कर मारकर वापस चले जाएँगे। उनकी नाक सड़ जाएगी और बदबू के मारे भाग खड़े होंगे। भगवान इस मामले में बहुत संवेदनशील हैं। वह एक बात परखते हैं—आदमी का ईमान, आदमी का चरित्र, आदमी की वृत्ति, आदमी के गुण, आदमी के कर्म और स्वभाव क्या हैं? अगर आप साफ हैं, अगर अपने आपको साफ बनाने की कोशिश की है, तो मैं यह कहता हूँ कि भगवान आपके पास भागते हुए चले आएँगे। रंगाई से पहले धुलाई जरूरी है। कारतूस की अपनी कीमत है, पर बंदूक की भी कीमत है, उसके बिना कारतूस चल नहीं सकता।

मंत्र सार्थक होते हैं, लेकिन हर एक के मंत्र सार्थक नहीं होते। चरित्रवान के मंत्र सार्थक होते हैं। शृंगी ऋषि का प्रसंग आता है। उनके पिता ने ब्राह्मणत्व पैदा करने के लिए उनको जंगल में रखा। खान-पान के बारे में, स्त्रियों के बारे में, सारी लोक भावनाओं के बारे में, तृष्णा और वासना के बारे में उनको दूर रखा। जब राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि यज्ञ हुआ, तो जरूरत इस बात की हुई कि कोई ऐसा ऋषि, कोई ऐसा संत तलाश किया जाए, जिसके बोले हुए

मंत्र सार्थक होते हुए चले जाएँ। गुरु वशिष्ठ से कहा गया। उन्होंने कहा—हम आपका पुत्रेष्टि यज्ञ करा तो दें, पर हमारी वाणी के उच्चारण से आपको संतान नहीं हो सकती। क्यों नहीं हो सकती? हमारी वाणी जल गई, क्योंकि हम विवाहित हैं और हमारे सौ बच्चे हैं। सौ बच्चे होने से हमारा ब्रह्मचर्य समाप्त हो गया। मंत्र तो हमें आते हैं, पर हमारे वेदमंत्रों में कोई शक्ति नहीं है, इसलिए वे फलित नहीं हो सकते। फिर उन्होंने किसे ढूँढ़ा? एक ही आदमी-शृंगी ऋषि, जिसने जीवनभर में यह नहीं जाना कि स्त्रियाँ कैसी होती हैं? वासना किसे कहते हैं? तृष्णा किसे कहते हैं? उन्होंने अपना व्यक्तित्व और चरित्र उच्चकोटि का बनाकर रखा था। उसी के फलस्वरूप उनके मंत्र सार्थक होते चले गए। पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और राजा दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न, चार भगवान पैदा हुए। किससे हुए? यज्ञ से, नहीं, यज्ञ तो वशिष्ठ भी करा सकते थे, अतः यज्ञ से नहीं, वे ब्राह्मण के मुख में से पैदा हुए थे। 'ब्राह्मणोश्च मुखमासीत्'-ब्राह्मण के मुख में भगवान रहता है। उसके रहता है जो ब्राह्मण होता है, चरित्रवान होता है। भगवान के लिए सबसे बड़ी परख यही है कि हमारा भक्त हमारे ऊपर विश्वास करता है कि नहीं। विश्वास करने वाले व्यक्ति का नाम चरित्रवान है।

साधक को चरित्रवान होना चाहिए। आप यह मत समझिए कि हर आदमी भगवान को बहला सकता है। वह हर आदमी के चंगुल में आने वाले नहीं हैं। अगर यह बात रही होती, तो चोर, उचक्के, बेईमान और दुष्ट-दुराचारी भी भगवान को पकड़ करके और चाहे जिस तरीके से अपना उल्लू सीधा करते और देवी को बकरी भेंट करके चाहे जो काम करा लेते। भगवान को पाने के लिए मनुष्य को चरित्रवान होना चाहिए। शृंगी ऋषि तब बच्चे ही थे। एक बार राजा परीक्षित ने ध्यान में बैठे उनके पिता लोमश ऋषि के गले में साँप डालकर अपमानित कर दिया। शृंगी ऋषि खेलने

चले गए थे। लौटकर आए तो देखा कि हमारे पिता का अपमान किया गया है। क्रोध से वे काँपने लगे। उन्होंने जल हाथ में लिया, मंत्र पढ़ा और कहा कि जो मरा हुआ साँप हमारे बाप के गले में पड़ा हुआ है वह जिंदा हो जाए। साँप जिंदा हो गया। साँप से उन्होंने कहा—साँप तू वहाँ चला जा जहाँ कहीं भी दुनिया में कोई भी व्यक्ति क्यों न हो जिसने हमारे पिताजी का अपमान किया है, उसे तू काट खा, जिंदा मत छोड़ना। यही हुआ, तक्षक राजा परीक्षित की ओर चल दिया। लोमश ऋषि की आँखें खुलीं, तो उन्होंने कहा—बेटे, तूने यह क्या कर डाला? राजा ने गलती कर दी, तो हमें तो नहीं करनी चाहिए, पर अब क्या कर सकते थे, तीर तो निकल चुका था, मुँह से मंत्र के रूप में। लोमश ऋषि ने एक विद्यार्थी को भेजकर परीक्षित को संदेश दिया कि सातवें दिन तुझे साँप काट ही खाएगा, इसलिए तुझे सात दिन में जो करना हो सो कर ले। राजा ने भागवत कथा सुननी आरंभ कर दी। सातवाँ दिन आया और तक्षक ने काट खाया।

मैं कह रहा हूँ—मंत्रों की शक्ति, भगवान की शक्ति, उपासना की शक्ति के बारे में, जिसमें एक चीज जुड़ी ही रहनी चाहिए और उसका नाम है—चरित्र। दुश्चरित्र आदमी, दुष्ट आदमी, दुराचारी आदमी यह ख्याल करे कि हम यह मंत्र जप करके, माला घुमा करके, पूजा करके किसी देवी-देवता को प्रसन्न करके काबू में ला सकते हैं, तो यह बिलकुल असंभव है। मेरी जिंदगी का सार यही है, चरित्र वाला पक्ष जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिए के तरीके से धुना। धुनिया जैसे थोड़ी-सी रुई को धुन-धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट-पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान का अनुग्रह पाया। यह उसी का परिणाम है जो आपके सामने है। अगर आप उपासना का, मंत्र का लाभ देखना चाहते हैं, कोई आध्यात्मिक चमत्कार देखना चाहते हैं, तो

श्रद्धा उगाइए और चरित्र को धोइए। विधि आपको नहीं आती है, तो इससे कोई नुकसान नहीं। वाल्मीकि को विधि नहीं आती थी। 'उलटा नाम जपा जग जाना। वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।' उलटा नाम जप करके भी आप भगवान को पा सकते हैं, आप गलत मंत्र बोलिए, गलत उच्चारण से भी उद्धार हो जाता है। जो स्त्रियाँ नहीं बोल पातीं, उन्हें हम 'ॐ भूर्भुवः स्वः' सिखा देते हैं। जिन्हें 'ॐ भूर्भुवः स्वः' भी नहीं आता, तो उन्हें केवल 'ॐ' सिखा देते हैं। जब हम अफ्रीका गए, तो बहुत से नीग्रो लोगों को गायत्री मंत्र सिखाया। बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें सही बोलना नहीं आया। वे बोले—"गुरुजी! हमें गलत गायत्री मंत्र आता है, उससे कोई नुकसान तो नहीं होगा?" नहीं, कोई नुकसान नहीं होगा। गायत्री ऐसी नहीं है कि आपके मंत्र गलत हो जाएँ, तो उसके लिए जान की ग्राहक बन जाएँ। आपके अक्षर गलत हो जाते हैं, तो हो जाने दीजिए। विधि में आप कहीं भूल करते हैं, तो हमारी जिम्मेदारी। नवरात्र अनुष्ठान में हम कहा करते हैं कि विधि आपकी गलत हो जाए तो उसका पाप हम पर लगा दीजिए। विधि की कोई कीमत नहीं है, जैसी विधि आती हो, कर लीजिए, पर विधा के बारे में ध्यान रखिए।

श्रद्धा व चरित्र के बाद अगला जो उद्देश्य गायत्री मंत्र के साथ जुड़ा हुआ है, वह हमारे जीवन का सार और निचोड़ है—ऊँचा उद्देश्य रखिए। छोटे उद्देश्यों के लिए, घटिया कामों के लिए नहीं, भगवान के सामने किसी बड़े काम के लिए पल्ला पसारिए। भगवान को जिंदगी में साझीदार के तरीके से बनाइए, हिस्सेदार बनाइए। हिस्सेदार बनाना सबसे कीमती चीज है। कुछ चीज पाना चाहते हैं तो पाने के तरीके तीन हैं—एक माँगिए, भाई साहब कुछ दे दीजिए, कुछ नहीं है हमारे पास। दूसरा तरीका है, कर्ज लेने का और तीसरा तरीका है, अपना हक माँगने का कि हमने महीने भर मेहनत और मशक्कत की है पैसा लाइए हमारा। यह

हमारा ड्यू है। फोकट में भी क्या कुछ मिल सकता है ? जहाँ तक मैंने समझा है कि फोकट नाम की चीज दुनिया में कोई नहीं है। नहीं साहब, हमने तो यही सुना है कि देवताओं से और गुरु से फोकट में आशीर्वाद मिल सकता है। बेटे, आशीर्वाद मिल भी सकता है, पर अगले जन्म में तुझे कर्ज के रूप में देना पड़ेगा। फोकट में लेना और फोकट में खाना अपने आपको दीन बनाना, दरिद्र बनाना, नीच बनाना और जलील बनाना एक बराबर है। भगवान के सामने हमको जलील नहीं बनना चाहिए। जलालत हमको नामंजूर है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की रक्षा हमको हर हालत में करनी चाहिए। हमें किसी के आगे पल्ला नहीं पसारना चाहिए। पल्ला पसारने का कोई नियम दुनिया में नहीं है। हर चीज कीमत देकर पाई जाती है।

मित्र, आपको जिस आदमी ने यह बात सिखा दी है कि अध्यात्म देवी-देवताओं की खुशामद को कहते हैं, गुरु की खुशामद को कहते हैं, सिद्ध पुरुषों की खुशामद को कहते हैं और कमाई किए बिना, मेहनत किए बिना चापलूसी से जीभ की नोक की हेरा-फेरी करके, माला पहना करके, सवा रुपया दक्षिणा दे करके यह चीजें पाई जा सकती हैं, वह गलत आदमी था और आप उससे भी गलत आदमी हैं जो ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं। दुनिया कायदे पर टिकी हुई है, नियम पर टिकी हुई है।

मित्रो, आप उच्च उद्देश्यों के लिए गल जाना। हमने अपने गुरु के साथ में वायदा किया हुआ है कि हम आपकी आज्ञानुसार चलेंगे और अपनी जिंदगी में स्वयं के लिए, व्यक्तिगत फायदे के लिए कुछ काम नहीं करेंगे। हम आपके लिए काम करेंगे। गुरु ने कहा—जब तुम सब कुछ हमको दे रहे हो तो हमारी हर चीज तुम्हारी है। भगवान की हर चीज हमारे गुरु की है और गुरु की हर चीज हमारी है। आपको मालूम नहीं है, हमने वसीयत की हुई है। हमारे पास जो कुछ बाप-दादे छोड़ गए थे, उसका चप्पा-चप्पा

हमने समाज के हित में खरच कर डाला। हमने अपनी हर चीज भगवान को सौंप दी और संकीर्णता को पैरों तले रौंद कर फेंक दिया है। इसके बदले में जो पाया, आप देख रहे हैं। इससे कम कीमत पर ऊँची चीजें नहीं मिल सकतीं। स्वार्थी और संकीर्ण आदमी, मक्खी और मच्छर जैसे दिल वाले कृपण और कंजूस भगवान से नहीं पा सकते। किससे पाएँगे? बेटे, हम आपको दे देंगे, क्योंकि आप हमारे बच्चे हैं। हम आपको मोहब्बत और प्यार करते हैं। हम जानते हैं कि प्यार की कीमत क्या चुकानी चाहिए? आपके दुःख-दरद, कठिनाई, मुसीबत के बारे में अगर हमने अपनी कुछ दौलत जमा की होगी, तो आपकी सहायता करेंगे और आपको सुखी बनाने के लिए हरदम कोशिश करेंगे। हम यह वायदा तो नहीं करते कि आपकी हर मनोकामना को पूरी कर सकते हैं, पर भगवान ने जिस लायक बनाया होगा, जो कुछ भी हमारे पास होगा, हम आपकी मुसीबत को हल करने के लिए निश्चित रूप से कोशिश करेंगे। यह हमारी और आपके बीच की बात है।

दूसरे संत और ऋषि आप पर दया करके, करुणा करके आपकी सहायता कर सकते हैं, लेकिन आपको बच्चे समझते रहेंगे। जब तक आप माँगते रहेंगे, आपकी हैसियत बच्चों जैसी बनी रहेगी। भगवान से, गायत्री माता से ऊँची चीजें, कीमती चीजें पाने के लिए आपको जो काम करना है, वह है कि आप एक चीज को छोड़ जाइए। कार्लमार्क्स कहते थे कि मजदूरो! तुम हमारी कंपनी में साम्यवाद में भरती हो जाओ। इसमें तुम्हारा बस एक ही नुकसान होगा कि तुम गरीबी खो बैठोगे। इसके अलावा फायदे-ही-फायदे हैं और मैं कहता हूँ कि एक चीज छोड़नी पड़ेगी आपको, बाकी सब नफा-ही-नफा है। क्या छोड़नी पड़ेगी? कृपणता। कृपणता आप पर हावी हो गई है। न पैसे की कमी है, न रोटी की कमी है। कृपणता को छोड़कर थोड़ा दिल बड़ा कीजिए, यह आज के समय की आवश्यकता है।

हमारे गुरु की आवश्यकता थी, उनके इशारे पर हम कठपुतली के तरीके से नाचते रहे। उनके इशारे का हमको ध्यान है। आज युग देवता का, महाकाल का इशारा यह है कि हमको जन जाग्रति के लिए काम करना चाहिए। हमको नवयुग लाने के लिए घर-घर में संदेश पहुँचाना चाहिए। विचार क्रांति अभियान आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि इस युग की सभी समस्याएँ इसलिए पैदा हुई हैं कि आदमी की अकल खराब हो गई है। न पैसा कम है, न कोई चीज कम है। अकल खराब है। अकल ठीक करने के लिए हमको विचार क्रांति में हिस्सा लेना चाहिए। व्यक्ति और समाज, देश और धर्म-संस्कृति के लिए, मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमको एक काम करना चाहिए कि ज्ञानयज्ञ के विस्तार के लिए पूरी कोशिश करें, प्रयास करें। घर-घर में जाएँ, जन-जन के पास जाएँ, अलख जगाएँ, नवयुग का संदेश सुनाएँ और यह कहें कि आदमी को कृपणता छोड़नी चाहिए। अपनी मनःस्थिति को ऊँचा बनाना चाहिए। चिंतन और चरित्र में ऊँचाइयों का, उत्कृष्टता का समावेश करना चाहिए। क्रिया-कलापों में आदर्शवादिता का समन्वय करना चाहिए। यही हमारा विचार क्रांति अभियान है।

इसी के लिए इस पुनर्गठन वर्ष में हमने हर आदमी पर जोर दिया है और यह कहा है कि आपको अपनी कृपणता छोड़नी चाहिए और श्रेष्ठ विचार यदि आपके पास हैं, तो क्रिया रूप में परिणत करने चाहिए। खाने का सामान आपके पास है, तो पकाना आना चाहिए। खाना पकाएँगे नहीं तो कैसे काम करेंगे? विचार आपके पास हैं, मन बहुत अच्छा है, श्रद्धा बहुत है, तो सक्रियता के रूप में परिणत कीजिए। तो सक्रियता के रूप में विचारों को परिणत करने के लिए क्या करना चाहिए? हमारे पास एक ही काम है, जिसको ऋषि और ब्राह्मण करते रहे हैं और ऋषि और ब्राह्मण करते रहेंगे। उसका नाम है—'जनमानस का परिष्कार'। इसके लिए

प्राचीनकाल के ब्राह्मण, प्राचीनकाल के ऋषि, प्राचीनकाल के साधु-संत और वानप्रस्थ इस कार्य को किया करते थे। आज इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस युग की इससे बड़ी कोई आवश्यकता नहीं। योग्यता की कमी नहीं। अनाज, कपड़ा, रोटी, विद्या, साहस आदि किसी चीज की कमी नहीं है। कमी है तो अकल की। मित्रो! अकल को बढ़ाने के लिए, जनमानस के परिष्कार के लिए युग द्वेवता ने, महाकाल ने पुकार लगाई है। अगर आप कृपणता को त्यागने के लिए तैयार हों, सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हों, तो मैं आप से वायदा करता हूँ कि गायत्री माता का वह चमत्कार जो ऋषियों को मिला था, ब्राह्मणों को मिला था और हमको मिला है, उसका लाभ आप भी उठा सकेंगे।

आज की बात समाप्त। ॐ शांतिः।

(७ फरवरी १९७९)

साधना से सिद्धि

(वीडियो टेप संदेश)

भाइयो,

आप में से सैकड़ों व्यक्ति शिकायत करते पाए गए हैं कि हमें अपनी साधना से सिद्धि नहीं मिली। हमने इतना जप किया, इतना पूजा-पाठ किया, इतना भजन किया, लेकिन हमको तो कोई चमत्कार दिखाई नहीं पड़ा। मेरे ख्याल से अधिकांश आदमी आप में ऐसे हैं जो ऐसी शिकायत करते पाए जाते हैं, तो क्या पूजा-पाठ का, मंत्र जप का विधान गलत है, क्या यह ऋषियों की धोखेबाजी है, ऐसा ही एक बौद्धिक मायाजाल है। न, ऐसी बात नहीं। अगर आपने ऐसा विचार किया है, व आप निराश हो गए हैं कि पूजा-पाठ, साधना से कोई लाभ नहीं होता, तो आप मन से इन विचारों को निकाल दीजिए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि 'साधना से सिद्धि' अवश्य मिलती है।

आपके सामने मैं एक ऐसा गवाह पेश करना चाहता हूँ, जिससे आप चाहें, तो जिरह भी कर सकते हैं व इम्तहान लेना चाहें, तो वह भी ले सकते हैं। कौन है वह गवाह ? वह मैं स्वयं हूँ। आप मुझे किसी भी प्रयोगशाला में किसी भी अदालत में खड़ा कर दीजिए व देखिए कि इस आदमी ने साधना की है व इसे सिद्धियाँ मिली हैं कि नहीं ? आप जिरह कीजिए व प्रमाण मिलने पर ही इसे सच मानिए।

वास्तव में साधना से सिद्धि का जुड़ा हुआ संबंध है। ऐसा जैसे कि बोने व काटने के बीच होता है। बोएँगे तो आप काटेंगे भी। इसी तरह आप साधना करेंगे, तो सिद्धियाँ भी आपको मिलेंगी। हमने साधना सही ढंग से की है व आपने गलत ढंग से की है। इसलिए आप शिकायत करते पाए जाते हैं। गलत यह कि मात्र बीज बोना ही काफी नहीं, उसमें खाद-पानी देना भी उतना ही जरूरी है। खाद आप देंगे नहीं, पानी आप लगाएँगे नहीं, तो आपकी उम्मीद लगाना कि फसल पैदा होगी, पेड़ में फल लगेंगे, गलत है। साधना का बीज बोया हमने पर खाद-पानी भी साथ लगाया। इसीलिए फला। कैसे लगाया जाता है खाद-पानी। चलिए मैं आपको दो घटनाएँ अपने जीवन की सुना देता हूँ। सारी तो बहुत अधिक हैं, मुश्किल पड़ेंगी, पर दो घटनाएँ सुना देता हूँ।

एक यह कि हमारे पिताजी दस वर्ष की उम्र में हमें महामना मालवीय जी के पास हिंदू विश्वविद्यालय में ले गए व हमारा दीक्षा संस्कार कराया था। मालवीय जी ने हमें गायत्री मंत्र दिया था, एक जनेऊ पहनाया था व एक खास बात हमारे कान में कही थी, जो अभी तक याद है। वह यह कि "गायत्री ही कामधेनु है। कामधेनु स्वर्गलोक की एक गाय है। जिसका दूध पीकर देवता अजर-अमर हो जाते हैं। गायत्री मंत्र सबके लिए नहीं, मात्र ब्राह्मण के लिए कामधेनु है। इसके लिए ब्राह्मण बनना चाहिए। ब्राह्मण उसे कहते हैं जो औसत नागरिक के हिसाब से गुजारा कर ले व बचे समय को

समाज के लिए लगा दे। ज्ञान और विचार में लीन रहे। स्वार्थ को परमार्थ में बदल दे।'' मैंने यह बात अच्छी तरह समझ ली। पिताजी व मालवीय जी से पूछकर समाधान कर लिया व बात पत्थर की लकीर की तरह मन में बैठ गई है।

मैं गायत्री मंत्र का जप करने लगा। जप के साथ यह ध्यान मन में बना रहा कि मुझे ब्राह्मण बनना है। बराबर यही ख्याल रहा। इसका फल क्या हुआ? पाँच साल के भीतर ब्राह्मणत्व इतना विकसित हुआ कि एक और गुरु मेरे घर आए, पंद्रह साल की आयु में। यह मेरे जीवन की दूसरी घटना। गुरु स्वयं घर आए। हम नहीं गए उनकी तलाश में। गुरु तलाश करते हुए स्वयं आते हैं। उनकी तलाश करना बेकार है, क्योंकि पात्रता जब तक विकसित नहीं होती, तब तक कोई गुरु नहीं आता। कच्चे फल होते हैं, तो खाने के लिए कोई चिड़िया नहीं आती, किंतु फल के पकने की सुगंध आते ही जाने कहाँ-कहाँ से चिड़िया आ जाती हैं व फल खाने लगती हैं। ऐसा ही हुआ। मैंने ब्राह्मणत्व का जीवन जिया। बदले में सूक्ष्म शरीर से मेरे गुरु पास आए व हमसे कहा कि गायत्री का जो बाकी हिस्सा रह गया है, वह हम तुम्हें सिखाएँगे। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र तो यही है, पर इसके साथ एक और सिद्धांत है 'बोया और काटा।' क्या मतलब है? जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे भगवान के खेत में बीज की तरह बोना शुरू करो और तुम्हारे पास सौ गुना ज्यादा होता चला जाएगा। मक्का, बाजरा खेत में बोते हैं, तो एक दाने के बदले में सौ दाने पैदा हो जाते हैं। तू बोना और काटना शुरू कर। मैंने कहा—कहाँ? तो उन्होंने कहा—भगवान के खेत में। मैंने पूछा—भगवान का खेत कहाँ है? तो उन्होंने कहा—सारा समाज भगवान का ही विराट रूप है। किसी ने भी आज तक भगवान को आँख से नहीं देखा है, क्योंकि वह निराकार है, व्यापक है। कैसे उसे देख सकेंगे? आग को तो देख सकते हैं, पर गरमी को कैसे देखेंगे? हवा को कैसे देखेंगे? भगवान को देखा नहीं जा

सकता, अनुभव किया जा सकता है बस! तू भगवान के खेत में बोना शुरू कर। तेरे पास संपत्ति है उसे दे। देख तुझे चमत्कार मिलता है कि नहीं। हमने कहा—हमारे पास तो कुछ भी नहीं है। यह हम कुर्ता-धोती पहने बैठे हैं बस। उन्होंने कहा—तीन चीजें तो तू भगवान के यहाँ से लेकर आया है। एक तूने अपने पुरुषार्थ से कमाई है। चाहे इस जन्म में कमाई हो, चाहे पिछले जन्मों की कमाई हो। चार चीजें तेरे पास हैं—यह शरीर व उसके साथ जुड़ी तीन चीजें समय, श्रम व बुद्धि। चौथी तेरी संपत्ति। इन सबको भगवान के लिए लगा। तू लगाएगा तो देखेगा कि यह सौ गुना ज्यादा होकर आ रहा है।

सूक्ष्म शरीरधारी उन गुरु का भी मैंने कहना मानना शुरू कर दिया। मैंने मालवीय जी के कहे अनुसार अपने जीवन को ब्राह्मण जैसा बनाने की कोशिश की। ब्राह्मण माने संयमी। संयमी माने वह जिसने अपनी इंद्रियों पर, धन, समय व विचारों पर नियंत्रण कर लिया हो। सारी शक्तियाँ एकाग्र हो गईं। जैसे आप फैली बारूद को जलाते हैं, तो भक से जल जाती है एवं इकट्ठी की बारूद को गोली के रूप में चलाते हैं, तो कमाल दिखाती है। एकाग्रता इसी का नाम है। इस तरह हमने अपने आपको एकाग्र कर लिया, अपने आप पर संयम कर लिया। ध्यान की एकाग्रता में क्या रखा है? आप चाहे घंटों बैठें। ध्यान की नहीं, समग्र जीवन की एकाग्रता। हमने अपने आपको ब्राह्मण बनाने की कोशिश की दस साल से पंद्रह साल की उम्र तक। पाँच वर्ष तक पूरा यत्न रहा कि ब्राह्मण का चिंतन, व्यवहार जैसा होना चाहिए, वैसा हो। हम ब्राह्मण बन गए। क्यों? आप नहीं थे क्या? कौम से तो हम ब्राह्मण थे, एक सनाढ्य ब्राह्मण के घर जन्म हुआ है हमारा, पर कोई भी आदमी जन्म से ब्राह्मण नहीं होता, कर्म से होता है। हमने कर्म से अपने आप को ब्राह्मण बनाया। जब हमारी उम्र काफी हो गई, तो हमारे पास हिंदुस्तान के बड़े पहुँचे हुए ऊँचे आदमी आए। उन्होंने यह

सुना था कि इस आदमी की जबान से जो कुछ निकल जाता है, वह सौ फीसदी सच हो जाता है। कैसे हो जाता है? शृंगी ऋषि का नाम आपने सुना होगा। उन्होंने एक शाप दिया, तो राजा परीक्षित मिट्टी में मिल गया व वरदान दिया, तो राजा दशरथ जिसे बच्चे नहीं होते थे, एक साथ चार बच्चे हुए उनको। यह ब्राह्मण की जिह्वा है। हर आदमी नहीं होता ब्राह्मण। ब्राह्मण कौम से नहीं, कर्म से। उन्होंने पूछा कि यह सिद्धियाँ आपको कैसे मिलीं, हमें भी सिखा दीजिए। हमने उनसे कहा कि जितनी भी सिद्धियाँ हमने पाई हैं, यह हमारे ब्राह्मण बनने की सिद्धियाँ हैं। ब्राह्मणत्व का ही चमत्कार देखा है अब तक लोगों ने। साधना व तप को तो तिजोरी में बंद करके रखा है। उसको हम सारे संसार के एक बड़े काम में खरच करेंगे। यह जो कह देते हैं, तो उससे किसी का भला हो जाता है, यह मात्र ब्राह्मण की विशेषता है।

किंतु जब हमने पहली किताब छापी व उसका नाम रखा—'गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है' तो लोग शिकायत करने लगे कि पुराणखंडी पंडित भी यही कहते हैं कि गायत्री मात्र ब्राह्मणों को जपनी चाहिए और कौमों को नहीं, तो हमने कहा सब पागल हैं। क्या विषय चल रहा है व कहीं-से-कहीं ले जाते हैं। वंश जन्म से नहीं, कर्म से चलता है। महात्मा गाँधी बनिया नहीं, ब्राह्मण थे। हमने अपने को कर्म से ब्राह्मण बनाया। जब लोगों की शिकायतें किताब के संबंध में आईं, तो मैंने कहा—अरे! यह तो लोगों ने गलत मतलब निकाल लिया। मैं क्या कहना चाहता था, ये क्या समझे। मैं कर्म से ब्राह्मण कह रहा था, इन्होंने जन्म से मतलब निकाल लिया। दोबारा किताब छपी, तो मैंने ब्राह्मण शब्द निकाल कर लिखा—'गायत्री ही कामधेनु है'। बस! इतना ही नाम किंतु अभी भी मेरा विश्वास है कि गायत्री मात्र ब्राह्मण की कामधेनु है और किसी की है क्या? चोर की है? नहीं, ठग की, उठाईगीरे व जालसाज की भी नहीं। साधना करने से पहले ब्राह्मण बनना पड़ता

है। कपड़े को रंगने से पहले धोना पड़ता है। मैले कपड़े पर कभी रंग नहीं चढ़ता। अपने आपको शुद्ध व पवित्र बनाने के लिए, जीवन का शोधन करने के लिए सेवा करनी पड़ती है। परोपकार और पुण्य इन दोनों के बिना जीवन शोधन संभव नहीं है। सेवा किए बिना कोई साधना सफल नहीं हो सकती। ब्राह्मण-साधु पहले सारा जीवन सेवा करते थे। आज तो साधु का नाम भी नहीं दिखाई पड़ता। आज तो यह बाबाजी दिखाई देते हैं, जो भीख माँगते हैं व माला घुमाते हैं कि किसी तरह ऋद्धि मिल जाए, बैकुंठ मिल जाए। इसी जंजाल में रहते हैं। हमने अपना जीवन पुराने ऋषियों के जीवन के आधार पर सेवा में लगाया। पूजा जो भी करनी हो, रात्रि में सोने से पहले व दिन में सूरज उगने से पहले कर ली। सूर्य निकलने से अस्त होने तक हम समाज सेवा में लगे रहते हैं। यही हमारा भजन है, यही हमारी पूजा है।

हमने चारों संपत्तियों को गुरु के कहे अनुसार समाज के खेत में बोया। समय को हमने समाज में लगा दिया। श्रम भी हमारा इसी निमित्त लगा। हमारे पसीने की एक बूँद भी व्यापार-पैसा कमाने में खरच नहीं हुई। हमारी बुद्धि ने कभी भी जालसाजी नहीं की, न चोरी की। मात्र यही सोचती रही कि लोककल्याण कैसे हो सकता है? समाज में सत्प्रवृत्ति कैसे बढ़ाई जाए, इसी में बुद्धि लगी। इन तीनों चीजों को बोने से आपको क्या मिला? समय का हमने ठीक उपयोग किया, तो उसे हमने पाँच गुना बढ़ा लिया। अभी तक की हमारी जिंदगी का लेखा-जोखा लें, तो देखें कितना बड़ा संगठन हमने अकेले खड़ा कर दिया। चौबीस लाख के चौबीस पुरश्चरण संपन्न किए। शरीर के वजन से भी ज्यादा साहित्य लिखकर रख दिया। पाँच आदमी निरंतर आठ घंटे रोज लगें, तो जितना काम हो उतना हमने रोजाना किया। हमारा समय पाँच सौ गुना होकर हमारे पास चला आया। थोड़ी-सी जिंदगी में जो कमाल करके दिखा दिया, वह दो सौ वर्षों में भी नहीं हो सकता।

श्रम हमने किया जनता को सुखी बनाने के लिए। हमारे घर से खाली हाथ कोई नहीं गया। हर आदमी का यह कहना है कि जो भी इनके घर आया, प्यासा, भूखा वापस नहीं गया। बिना दवा-दारू के नहीं गया। क्योंकि हम सेवा करते हैं। सेवा अर्थात प्यार। प्यार माने सेवा। हमने दूसरों के लिए जीवनभर श्रम किया है, प्यार दिया है, जीवनभर प्यार बाँटा है व बदले में समेटा है। हमारी जिंदगी प्यार में लबालब व सराबोर है। ये लाखों आदमी जो हमारे इशारे पर चलते हैं, हमारे व्याख्यानों का फल नहीं है, यह हमारे जीवन के उस हिस्से का परिणाम है जिसके द्वारा हमने लोगों को प्यार किया व दिया है। बदले में पाया है, यह सही है।

बुद्धि हमारी इतनी बढ़ी कि हम लाखों आदमियों की टेढ़ी बुद्धि को उलटकर सीधा कर देते हैं। हमने न एम०ए० किया, न कोई डिग्री ली, पर हम प्लानिंग करते हैं। सारे समाज का, सारे विश्व के कायाकल्प का प्लानिंग। जो कोई भी कमीशन नहीं कर सकता। साहित्य जो हमने लिखा है व वेद-पुराण आदि का भाष्य किया है, इससे अंदाज मत लगाइए कि हम कितने बुद्धिमान हैं। यह देखिए कि हमारी बुद्धि कितनी बड़ी-बड़ी सार्थक योजनाएँ बनाती है। किस दिशा में चलती है। सारे युग का नव निर्माण कैसे हो, यह हमारी बुद्धि ने सोचा है व करेगी।

चौथी संपत्ति—हमारा धन। धन कहाँ है आपके पास? धन हमने तो कमाया नहीं, पर हमारे पूर्व जन्म का कमाया हुआ था जो हमारे पिताजी छोड़ कर मरे थे। २००० बीघा जमीन हमारे पास थी। इसे जब हम समाज सेवा में पदार्पण करने लगे, तो बच्चों से पूछा कि पुश्तैनी जायदाद होने के नाते कानूनी हक तो तुम्हारा भी है। लेकिन हमारी इच्छा है कि इस हक को तुम छोड़ दो, क्योंकि कानून चोरों ने बनाया व चोरों के लिए बनाया है। नैतिकता का कानून भिन्न है। इस जायदाद को समाज को दे देना चाहिए। बताओ, क्या राय है तुम्हारी। दोनों बच्चों ने कहा—पिताजी! आपने हमें पढ़ा

दिया है, हमें लायक बना दिया है। अब हमें एक पैसा भी नहीं चाहिए। हमने सारी जमीन दान कर दी। पत्नी के पास जो जेवर थे वे भी बिक गए। किश्तों में हम देते चले गए व किश्तें लगती चली गईं। पहली उस स्कूल में लगी जो हमारे गाँव में बना व अब एक इंटर कॉलेज बन गया है। फिर अगली हमने गायत्री तपोभूमि में लगा दी। इस में औरों का भी पैसा लगा है, पर पहली किश्त हमारी है। आपने शांतिकुंज देखा है, ब्रह्मवर्चस देखा है, चौबीस सौ शक्तिपीठें देखी हैं। करोड़ों रुपए की बिल्डिंगें हैं यह। इनसे आपको अंदाज लगेगा कि कितना धन हमने भगवान के खेत में बोया व कितना गुना यह हो गया। सहस्रकुंडी यज्ञ जो हमने मथुरा में किया, से लेकर यहाँ के रोजाना खरच का आप हिसाब लगाएँ, तो पता चलेगा कि लाखों रुपए रोज का खरच है। न जाने कहाँ से आता है यह। हमने प्रतिज्ञा की हुई है कि हम मनुष्य के आगे हाथ नहीं फैलाएँगे। लेकिन भगवान हमें सब देता चला गया। हमने न कभी ईमान गँवाया, न भगवान को। इसका परिणाम यह कि जितना हमने बोया, उससे कहीं अधिक काटा है। साधना की सिद्धि जितनी मिलनी चाहिए थी, हमें मिलती चली गई। अभी और आपका बचा हुआ समय है, उसके बारे में बताइए? जब तक हमारा शरीर है, तब तक व्यक्ति के ही नहीं समाज के निमित्त हमारा रोम-रोम लगेगा, यह हमारा संकल्प है।

साधना से सिद्धि का सिद्धांत उपासना, साधना, आराधना इन तीन सूत्रों पर चला है। ये तीनों क्या हैं? ये हैं जमीन, खाद और पानी। भगवान के चरणों में हमने अपने आपको समर्पित किया है व भगवान जितने शक्तिशाली हैं, उतने ही हम हो गए। ईंधन को आग में डाल देते हैं, वह भी उतना ही गरम और आग जैसा हो जाता है। हम भी वैसे ही हो गए हैं। यह उपासना है। साधना हमने जीवनभर की है। साधना अर्थात माला जपना नहीं, साधक का जीवन जीना। हमने अपनी इंद्रियों को साधा है। मन को, बुद्धि को संयत किया है,

ठीक तरह से रखा है। यह साधना है। तीसरी आराधना वह, जिसके लिए हमने आपको अभी कहा। यह है समाज के लिए, देश के लिए, संस्कृति के लिए, भगवान के लिए जीवन जीना। भगवान का विराट रूप यही है। जनमानस को ऊँचा उठाने के लिए लगे रहने को आराधना कहते हैं। हमने जीवनभर आराधना, साधना व उपासना की है तथा उसका परिणाम हमारे सामने है। यही आप अपने जीवन में देखना चाहें, तो आप भी प्रयोग कर सकते हैं। फिर आप हमें बताइए कि आपकी साधना सिद्धि की दिशा में फली कि नहीं।

हमारी बात समाप्त। ॐ शांतिः।

(३० अप्रैल १९८४)

साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

साथियो, युग निर्माण परिवार का गठन एक प्रयोगशाला के रूप में हुआ है। प्रयोगशाला में रासायनिक पदार्थ तैयार किए जाते हैं और उसके परिणामों को सर्वसाधारण के सामने उपस्थित किया जाता है। युग निर्माण परिवार का गठन एक पाठशाला के तरीके से हुआ है, जहाँ विद्यार्थी पढ़ाए जाते हैं और पढ़-लिखकर के वे समाज के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को सँभालते हैं। गायत्री परिवार का गठन एक व्यायामशाला के तरीके से किया गया है, जिसमें लोग व्यायाम करते हैं और पहलवान बनकर के दंगल में कुश्तियाँ पछाड़ते हैं। युग निर्माण परिवार का गठन नर्सरी के तरीके से किया गया है, जिसमें छोटे-छोटे फलदार पौधे तैयार किए जाते हैं और यहाँ पैदा होने के बाद दूसरे बगीचों में भेज दिए जाते हैं, जहाँ बड़े-बड़े उद्यान-बगीचे बनकर तैयार होते हैं। युग निर्माण परिवार का

गठन एक कृषि फार्म के तरीके से हुआ है। कृषि फार्म में छोटे-छोटे प्रयोग गन्ने के, सोयाबीन के, अमुक के, तमुक के किए जाते हैं और उसके जो निष्कर्ष निकलते हैं, वह सब लोगों को मालूम पड़ते हैं और उसी आधार पर वे अपने-अपने कृषि कार्य को आरंभ करते हैं। व्यक्तित्वों के निर्माण की एक प्रयोगशाला के रूप में, पाठशाला के रूप में, व्यायामशाला के रूप में, नर्सरी के रूप में और कृषि फार्म के रूप में युग निर्माण परिवार का गठन किया गया। हम चाहते हैं कि व्यक्ति बदल जाएँ और ऊँचा उठें, क्योंकि हम समाज को ऊँचा उठाना चाहते हैं, समुन्नत बनाना चाहते हैं।

आखिर समाज है क्या? समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। व्यक्ति जैसे होंगे वैसे ही तो समाज बनेगा। समाज कोई अलग चीज नहीं है, वरन व्यक्तियों के समूह का नाम है। इसलिए व्यक्तियों को श्रेष्ठ बनाने का मतलब है—समय को अच्छा बनाना और समय को अच्छा बनाने का मतलब है, युग के प्रवाह को बदल देना। युग का प्रवाह बदल देना अर्थात समाज को बदल देना। समाज को बदल देना अर्थात व्यक्तियों को बदल देना, यही हमारा उद्देश्य है। इसी क्रिया-कलाप के लिए और इसी परिवर्तन के लिए हम लगे हुए हैं और युग परिवर्तन का जो नारा लगाते हैं उसका मतलब ही यह है कि हम युग बदलेंगे, समाज बदलेंगे और व्यक्ति बदलेंगे। बदलने के लिए हम व्यापक क्षेत्र में प्रयोग नहीं कर सकते। अतः छोटे क्षेत्र में हम प्रयोग करते हैं, ताकि इसकी देखा-देखी इसका अनुकरण करते हुए अन्यत्र भी यही परंपराएँ चलें, अन्यत्र भी इसी तरीके के क्रिया-कलाप चालू किए जा सकें। बाहर की परिस्थितियाँ मन की स्थिति के ऊपर निर्भर हैं। मन जैसा भी हमारा होता है, परिस्थितियाँ उसी के अनुरूप बननी शुरू हो जाती हैं। हम इच्छाएँ करते हैं, इच्छाओं से हमारा मस्तिष्क काम करता है। मस्तिष्क की गणनाओं से शरीर काम करता है। शरीर और मस्तिष्क दोनों ही हमारी

अंतरात्मा की, अंत:करण की प्रेरणा से काम करते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की पड़ी कि हमारी आंतरिक आस्थाओं को, आंतरिक मान्यताओं को, निष्ठाओं को परिवर्तित कर दिया जाए, तो जीवन का सारा-का-सारा ढाँचा ही बदल जाएगा।

मनुष्य के सामने असंख्य समस्याएँ हैं और उन असंख्य समस्याओं का समाधान केवल इस बात पर टिका हुआ है कि हमारी आंतरिक स्थिति सही बना दी जाए। दृष्टिकोण हमारा गलत होता है, तो हमारे क्रिया-कलाप गलत होते हैं और गलत क्रिया-कलापों के परिणामस्वरूप जो प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जो परिणाम सामने आते हैं वे भयंकर दु:खदायी होते हैं, कष्टकारक होते हैं। कष्टकारक परिस्थितियों के निवारण करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य का चिंतन और शिक्षण बदल दिया जाए, परिष्कृत कर दिया जाए। यही हैं हमारे प्रयास जिसके लिए हम अपनी समस्त शक्ति के साथ लगे हुए हैं।

मनुष्य के आंतरिक उत्थान, आंतरिक उत्कर्ष, आत्मिक विकास के लिए क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए ? इसका समाधान करने के लिए हमको चार बातें तलाश करनी पड़ती हैं। इन्हीं चार चीजों के आधार पर हमारी आत्मिक उन्नति टिकी हुई है और वे चार आधार हैं—साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। ये चारों ऐसे हैं जिनमें से एक को भी आत्मोत्कर्ष के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसके बिना हमारे जीवन का उत्थान हो सके। चारों आपस में अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं, जिस तरीके से कई तरह की चौकड़ियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं। मसलन बीज-एक, जमीन-दो, खाद-तीन, पानी-चार। चारों जब तक नहीं मिलेंगे, कृषि नहीं हो सकती, उसका बढ़ना संभव नहीं है। व्यापार के लिए अकेली पूँजी से काम नहीं चल सकता। इसके लिए पूँजी-एक, अनुभव-दो, वस्तुओं की माँग-तीन, ग्राहक-चार। इन चारों

को आप ढूँढ़ लेंगे, तो व्यापार चलेगा और उसमें सफलता मिलेगी। मकान बनाना हो तो उसके लिए ईंट, चूना, लोहा, लकड़ी। इन चारों चीजों की जरूरत है। चारों में से एक भी चीज अगर कम पड़ेगी, तो हमारी इमारत नहीं बन सकती। सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य का कौशल आवश्यक है, साधन आवश्यक है, सहयोग आवश्यक है और अवसर आवश्यक है। इन चारों चीजों में से एक भी कम पड़ेगी, तो समझदार आदमी भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेगा, सफलता रुकी रह जाएगी। जीवन निर्वाह के लिए भोजन, विश्राम, मल विसर्जन और श्रम-उपार्जन, चारों की आवश्यकता होती है। ये चारों क्रियाएँ होंगी तभी हम जिंदा रहेंगे, यदि इनमें से एक भी चीज कम पड़ जाएगी, तो आदमी का जीवित रहना मुश्किल पड़ जाएगा। ठीक इसी प्रकार से आत्मिक जीवन का विकास करने के लिए, आत्मोत्कर्ष के लिए चारों का होना आवश्यक है, अन्यथा व्यक्ति निर्माण का उद्देश्य पूरा न हो सकेगा।

अब हम चारों चीजों के ऊपर प्रकाश डालते हैं। पहली है—उपासना प्लस साधना। उपासना और साधना, इन दोनों को मिलाकर एक पूरी चीज बनती है। उपासना का अर्थ है—भगवान पर विश्वास, भगवान की समीपता। उपासना माने भगवान के पास बैठना, नजदीक बैठना। इसका मतलब यह हुआ कि उसकी विशेषताएँ हम अपने जीवन में धारण करें। जैसे आग के पास हम बैठते हैं, तो आग की गरमी से हमारे कपड़े गरम हो जाते हैं, हाथ गरम हो जाते हैं, शरीर गरम हो जाता है। पास बैठने का यही लाभ होना चाहिए। बरफ के पास बैठते हैं, ठंडक में बैठते हैं, तो हमारे हाथ ठंडे हो जाते हैं, कपड़े ठंडे हो जाते हैं। पानी में बरफ डालते हैं, तो पानी ठंढा हो जाता है। ठंढक के नजदीक जाने से हमें ठंढक मिलनी चाहिए। गरमी की समीपता से गरमी मिलनी चाहिए। सुगंधित चीजों से सुगंध मिलनी चाहिए। चंदन के समीप उगने वाले पौधे सुगंधित हो

जाते हैं, उसकी समीपता की वजह से। यही समीपता वास्तविक है। उपासना का अर्थ यह है कि हम भगवान का भजन करें, नाम लें, जप करें, ध्यान करें, पर साथ-साथ हम इस बात के लिए भी कोशिश करें कि हम भगवान के नजदीक आते जाएँ। भगवान हमारे में समाविष्ट होता जाए और हम भगवान में समाविष्ट होते जाएँ अर्थात दोनों एक हो जाएँ। एक होने से मतलब यह है कि दोनों की इच्छाएँ, दोनों की गतिविधियाँ, दोनों की क्रिया-पद्धति, दोनों के दृष्टिकोण एक जैसे रहें। हम को ईश्वर जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। ईश्वर जैसे बनें न कि ईश्वर पर हुकुम चलाएँ और उनको यह आदेश दें कि आपको ऐसा करना चाहिए। आपको किसी भी हालत में हमारी माँगें पूरी करनी चाहिए। उपासना का तात्पर्य अपनी मनोभूमि को इस लायक बनाना है कि हम भगवान के आज्ञानुवर्ती बन सकें। उनके संकेतों के इशारे पर अपनी विचारणा और क्रिया-पद्धति को ढाल सकें। उपासना-भजन इसीलिए किया जाता है।

साधना—साधना का अर्थ है कि अपने गुण, कर्म, स्वभाव को साध लेना। वस्तुतः मनुष्य चौरासी लाख योनियों में घूमते-घूमते उन सारे-के-सारे प्राणियों के कुसंस्कार अपने भीतर जमा करके ले आया है, जो मनुष्य-जीवन के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि हानिकारक हैं, तो भी स्वभाव के अंग बन गए हैं और हम मनुष्य होते हुए भी पशु-संस्कारों से प्रेरित रहते हैं और पशु-प्रवृत्तियों को बहुधा अपने जीवन में कार्यान्वित करते रहते हैं। इस अनगढ़पन को ठीक कर लेना, सुगढ़पन का अपने भीतर से विकास कर लेना, कुसंस्कारों को जो पिछली योनियों के कारण हमारे भीतर जमे हुए हैं, उनको निरस्त कर देना और अपना स्वभाव इस तरह का बना लेना जिसको हम मानवोचित कह सकें, साधना है। साधना के लिए हमको वही क्रिया-कलाप अपनाने पड़ते हैं जो कि एक

कुसंस्कारी घोड़े या बैल को सुधारने के लिए उसके मालिकों को करने पड़ते हैं, हल में चलने के लिए और गाड़ी में चलने के लिए। कुसंस्कारों को दूर करने के लिए हमको लगभग उसी तरह के प्रयत्न करने पड़ते हैं जैसे कि सरकस के पशुओं को पालते हुए उन्हें इस लायक बनाते हैं कि वे सरकस में तमाशा दिखा सकें। इसी तरह के प्रयत्न हमको अपने गुण, कर्म, स्वभाव के विकास के परिष्कार के लिए करने पड़ते हैं। कच्ची धातुओं को जिस तरीके से आग में तपा करके उनको शुद्ध-परिष्कृत बनाया जाता है, जेवर-आभूषण बनाए जाते हैं, उसी तरीके से हमारा कच्चा जीवन, कुसंस्कारी जीवन को ढाल करके ऐसा सभ्य और ऐसा सुसंस्कृत बनाया जाए कि हम ढली हुई धातु के आभूषण के तरीके से अथवा औजार-हथियार के तरीके से दिखाई पड़ें। जंगली झाड़ियों को काटकर के माली लोग अच्छे-अच्छे झाड़ और खूबसूरत पार्क बना देते हैं। हमको भी अपने झाड़-झंखाड़ जैसे जीवन को परिष्कृत करके, काट-छाँट करके, समुन्नत करके इस लायक बनाना चाहिए कि जिसको कहा जा सके कि वह सभ्य और सुसंस्कृत जीवन है।

इसके लिए हमको नित्य ही आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। अपनी गलतियों पर गौर करना चाहिए। उनको सुधारने के लिए कमर कसनी चाहिए और अपने आपका निर्माण करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए और जो कमियाँ हमारे स्वभाव के अंदर हैं, उन्हें दूर करने के लिए जुटे रहना चाहिए। आत्म विकास इसका एक हिस्सा है। हमको अपनी संकीर्णता में सीमित नहीं रहना चाहिए। अपने अहं को और अपनी स्वार्थपरता को, अपने हितों को व्यापक दृष्टि से बाँट देना चाहिए। दूसरों के दुःख हमारे दुःख हों, दूसरों के सुखों में हम सुखी रहें, इस तरह की वृत्तियों का हम विकास कर सकें, तो कहा जाएगा कि हमने जीवन साधना करने के लिए जितना

प्रयास किया, उतनी सफलता पाई। साधना से सिद्धि की बात प्रख्यात है। जीवन की साधना की सिद्धि में भी किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं है। अन्य किसी बात में तो संदेह की गुंजाइश भी है, देवी-देवताओं की उपासना करने पर हमको फल मिले-न-मिले कह नहीं सकते, लेकिन जीवन की साधना करने का परिणाम निश्चित रूप से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवनों में लाभ के रूप में देखा जा सकता है। यह साधना के बारे में निवेदन किया गया।

दूसरा है—स्वाध्याय। मन की मलिनता को धोने के लिए स्वाध्याय अति आवश्यक है। दृष्टिकोण और विचार प्रायः वही जमे रहते हैं हमारे मस्तिष्क में जो कि बहुत दिनों से पारिवारिक और अपने मित्रों के सान्निध्य में हमने सीखे और जाने। अब हमको श्रेष्ठ विचार अपने भीतर धारण करने के लिए श्रेष्ठ पुरुषों का सत्संग करना चाहिए। चारों ओर हम जिस वातावरण से घिरे हुए हैं, वह हमको नीचे की ओर गिराता है। पानी का स्वभाव नीचे गिरने की तरफ होता है। हमारा स्वाभाविक स्वभाव ही ऐसा है जो नीचे स्तर के कामों की तरफ, निकृष्ट उद्देश्यों के लिए आसानी से लुढ़क जाता है। चारों तरफ का वातावरण जिसमें हमारे कुटुंबी भी शामिल हैं, मित्र भी शामिल हैं, घर वाले भी शामिल हैं, हमेशा इस बात के लिए दबाव डालते हैं कि हमको किसी भी प्रकार से किसी भी कीमत पर भौतिक सफलताएँ पानी चाहिए। चाहे उसके लिए नीति बरतनी पड़े अथवा अनीति का आश्रय लेना पड़े। हर जगह से यही शिक्षण हमको मिलता है। सारे वातावरण में इसी तरह की हवा फैली हुई है और यही गंदगी हमको भी प्रभावित करती है। हमारे गिरावट के लिए काफी वातावरण विद्यमान है।

इनका मुकाबला करने के लिए क्या करना चाहिए? श्रेष्ठता के मार्ग पर अगर हमको चलना है, आत्मोत्कर्ष करना है, तो हमारे

पास ऐसी शक्ति भी होनी चाहिए जो पतन की ओर घसीट ले जाने वाली इन सत्ताओं का मुकाबला कर सके। इसके लिए एक तरीका है कि हम श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ में संपर्क और सान्निध्य बनाए रखें, उनके सत्संग को कायम रखें। यह सत्संग कैसे हो सकता है? यह सत्संग केवल पुस्तकों के माध्यम से संभव है, क्योंकि विचारशील व्यक्ति हर समय बातचीत करने के लिए मिल नहीं सकते। इनमें से बहुत तो ऐसे हैं जो स्वर्गवासी हो चुके हैं और जो जीवित हैं वे हमसे इतनी दूर रहते हैं कि उनके पास जाकर के हम उनसे बातचीत करना चाहें, तो वह भी हमारे लिए कठिन है। हम जा नहीं सकते और उनके पास जाएँ भी तो उनके लिए भी कठिन है, क्योंकि प्रत्येक महापुरुष समय की कीमत को समझता और व्यस्त रहता है। ऐसी हालत में हम लगातार सत्संग कैसे कर पाएँगे? कभी साल-दो साल में एक-आध घंटे का सत्संग कर लिया, तो क्या उससे हमारा उद्देश्य पूरा हो जाएगा? इसलिए अच्छा तरीका यही है कि हम अपने जीवन में नियमित रूप से जैसे अपने कुटुंबी और मित्रों से बात करते हैं, श्रेष्ठ महानुभावों से, युग के मनीषियों से बातचीत करने के लिए समय निकालें। समय निकालने की इस प्रक्रिया का नाम है—स्वाध्याय।

स्वाध्याय को आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक माना गया है। स्वाध्याय के बारे में ब्राह्मण ग्रंथों में कहा गया है—जिस दिन विचारशील आदमी स्वाध्याय नहीं करता, उस दिन उसकी संज्ञा चांडाल जैसी हो जाती है। स्वाध्याय का महत्त्व भजन से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। भजन का उद्देश्य भी यही है कि हमारे विचारों का परिष्कार हो और हम श्रेष्ठ व्यक्तित्व की ओर आगे-आगे बढ़ें। स्वाध्याय हमारे लिए आवश्यक है। स्वाध्याय से हम महापुरुषों को अपना मित्र बना सकते हैं और जब भी जरूरत पड़ती है तब उनसे खुले मन से, खुले दिल से बातचीत

कर सकते हैं। जिस तरीके से शरीर को स्वच्छ रखने के लिए स्नान करना आवश्यक है, कपड़े धोना आवश्यक है, उसी प्रकार से स्वाध्याय के द्वारा, श्रेष्ठ विचारों के द्वारा अपने मन के ऊपर जमने वाले कषाय-कल्मषों को, मलिनता को धोना आवश्यक है। स्वाध्याय से हमको प्रेरणा मिलती है, दिशाएँ मिलती हैं, मार्गदर्शन मिलता है, श्रेष्ठ पुरुष हमारे सान्निध्य में आते हैं और हमको अपने मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करते हैं, मार्गदर्शन करते हैं। ये सारी-की-सारी आवश्यकताएँ स्वाध्याय से पूरी होती हैं। इसलिए स्वाध्याय का साधना और भजन के बराबर ही मूल्य और महत्त्व समझा जाना चाहिए।

तीसरी बात जो आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है, उसका नाम है—संयम। संयम का अर्थ है—रोकथाम। अगर हम रोकथाम करें तो जो हमारी शक्तियों का घोर अपव्यय होता रहता है, उसको बचा सकते हैं। हम अपनी अधिकांश शारीरिक और मानसिक शक्तियों को अपव्यय में नष्ट कर देते हैं, कुमार्ग पर नष्ट कर देते हैं। यदि उनको रोका जा सका होता और उपयोगी मार्ग पर लगाया गया होता, तो निश्चित रूप से उन शक्तियों के चमत्कार हमको देखने को मिल सकते थे जो हमारे पास थीं, पर हम बरबादी से कुछ बचा नहीं सके। चार तरह के संयम निग्रह रूप में बताए गए हैं—इंद्रिय निग्रह, मन निग्रह, समय निग्रह, अर्थ निग्रह। इंद्रिय निग्रह में जिह्वा और कामेंद्रिय का संयम मुख्य है। ये इंद्रियाँ हमारी कितनी सारी शक्तियों को नष्ट करती हैं और स्वास्थ्य को किस बुरी तरीके से खोखला करती हैं, यह सभी जानते हैं। इंद्रिय निग्रह का महत्त्व बताने की जरूरत नहीं है। शारीरिक दृष्टि से जिनको समर्थ बनना हो, नीरोग और दीर्घ-जीवी बनना हो, उनको इंद्रिय निग्रह का महत्त्व समझना और अपने आपको संयम का अभ्यासी बनाना चाहिए। दूसरा संयम

मनोनिग्रह है। मन में कितने सारे विचार उठते हैं, लेकिन वे असंगत, असंयमित, बुराइयों एवं मनोविकारों से भरे होते हैं। इससे हमारा मस्तिष्क विकृत होता और बुरी आदतें पड़ती हैं। मनःशक्तियाँ निग्रहीत करके किसी कार्य में लगाई गई होतीं, तो हम वैज्ञानिक बन गए होते, साहित्यकार बन गए होते। जिस भी कार्य में हमने मन लगाया होता, सफलता की उच्च श्रेणी तक जा पहुँचे होते, पर अस्त-व्यस्त मन के कारण से कोई सफलता संभव न हो सकी। मनोनिग्रह करके एकाग्रता की शक्ति और एक दिशा में चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकें, तो उससे हमारी सफलताओं का द्वार खुल सकता है।

तीसरा है—समय का निग्रह। हम समय को आलस्य और प्रमाद में पड़े-पड़े बरबाद करते रहते हैं। कोई योजनाबद्ध कार्य नहीं करते, जब जो आया मनमरजी से काम कर लिया, मन नहीं हुआ तो नहीं किया। इस तरीके से अस्त-व्यस्तता में हमारा जीवन नष्ट हो जाता है, जबकि समय का थोड़ा-थोड़ा-सा भी उपयोग करते, तो न जाने कितना लाभ उठा सकते थे। चौथा निग्रह—अर्थ निग्रह भी ऐसा ही महत्त्वपूर्ण है। पैसे को विलासिता से लेकर न जाने किस-किस काम में, व्यसनों में, अनाचारों में हम खरच करते हैं। अगर उसको फिजूलखरची से हम बचा सके होते और उस धन को हमने किसी उपयोगी काम में लगाया होता, तो भौतिक और आत्मिक उन्नति की दिशा में हम कहीं आगे बढ़ गए होते। अर्थ निग्रह, इंद्रिय निग्रह, मनोनिग्रह, समय निग्रह, इन चारों निग्रहों को हम करें, तो संयमशील हो सकते हैं। हमको संयम बरतना चाहिए, अस्वाद व्रत का, ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए। मौन का अभ्यास करना चाहिए। ऐसे-ऐसे असंख्य संयम हैं जिनको अपनाने से हम तपस्वी बनते हैं और अपनी शक्ति का बहुत बड़ा भाग बचा करके अच्छे काम में लगाते हैं।

चौथा कार्य सेवा का है। मनुष्य समाज का ऋणी है, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी है। भगवान ने उसको इसीलिए जन्म दिया है कि वह उसके इस विश्व उद्यान की सेवा करे। उसकी जीवात्मा का विकास और जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सेवा से बड़ा तप और सेवा से बड़ा पुण्य कुछ भी नहीं हो सकता। हमको सेवा करने के लिए समय निकालते रहना चाहिए। सारे-का-सारा समय अपने लिए ही न खरच कर दें, वरन देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा करने के लिए भी कुछ लगाएँ। हमारा धर्म होना चाहिए कि हम अपनी शक्तियों का एक अंश दुखियारों के लिए और पीड़ितों के लिए, पतितों के लिए लगाएँ। हमारे लिए सबसे बड़ा सेवा का कार्य क्या हो सकता है ? ज्ञानयज्ञ से बड़ा कोई और दूसरा पुण्य नहीं हो सकता। इसको ब्रह्मदान भी कहा गया है। यह सर्वोत्तम धर्म है, क्योंकि ज्ञानयज्ञ से हम मनुष्यों को दिशा दे सकते हैं जिससे वे बुराइयों से बच सकें और उन्नति के मार्ग पर ऊँचे उठ सकें। ज्ञान, विचारणा, भावना, यही तो है शक्ति का अंश। इसीलिए ब्राह्मण और साधु हमेशा से ज्ञानयज्ञ को ही सर्वोत्तम सेवा मान करके उसमें संलग्न रहे हैं और यह प्रयत्न करते रहे हैं कि हम स्वयं अच्छे बनें और अपनी अच्छाई दूसरों पर बिखेरें। इसके लिए हमको अंशदान करना चाहिए। सेवा के लिए हमको एक घंटा समय और दस पैसे नित्य का जो न्यूनतम कार्यक्रम दिया गया था ज्ञानयज्ञ, विचारक्रांति के लिए, उस पर हमको मुस्तैदी से अमल करना चाहिए। कोई भी आदमी हममें से ऐसा न हो जो कि सेवा के लिए एक घंटा समय और दस पैसे जैसी न्यूनतम शर्त को पूरा न करता हो। इससे ज्यादा ही हम करें, ज्यादा ही उत्साह दिखाएँ।

हम केवल भौतिक जीवन ही न जिएँ। आध्यात्मिक जीवन भी जिएँ। हमारी क्षमताओं का उपयोग, हमारे समय का उपयोग पेट पालने तक ही सीमित न रहे, बल्कि लोकमंगल और लोकहित के

लिए भी खरच करें। इस तरीके से हम चार आधार जीवन में अपनाए रहकर के आत्मिक उन्नति के मार्ग पर चल सकते हैं। अपना परिष्कार और परिवर्तन कर सकते हैं। यदि हमने अपना परिष्कार और परिवर्तन किया, तो समाज का परिवर्तन और समाज का परिष्कार स्वाभाविक और सरल हो जाएगा। युग का परिवर्तन व्यक्ति के परिवर्तन और समाज के परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है। अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला में हम इसी का प्रयोग करते हैं और अपनी प्रयोगशाला में सम्मिलित रहने वाले, अपने परिवार में शामिल रहने वाले हर व्यक्ति से प्रार्थना करते हैं कि आपको आत्मिक उन्नति के लिए अभी बताए गए इन चार आधारों को मजबूती के साथ ग्रहण करना चाहिए और अपने दैनिक जीवन में समन्वित रखना चाहिए। साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा दैनिक जीवन में न्यूनतम मात्रा में भले ही हों, पर सम्मिलित अवश्य और अनिवार्य रूप से रहने चाहिए।

ॐ शांतिः।

(१३ जून १९८०)

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा